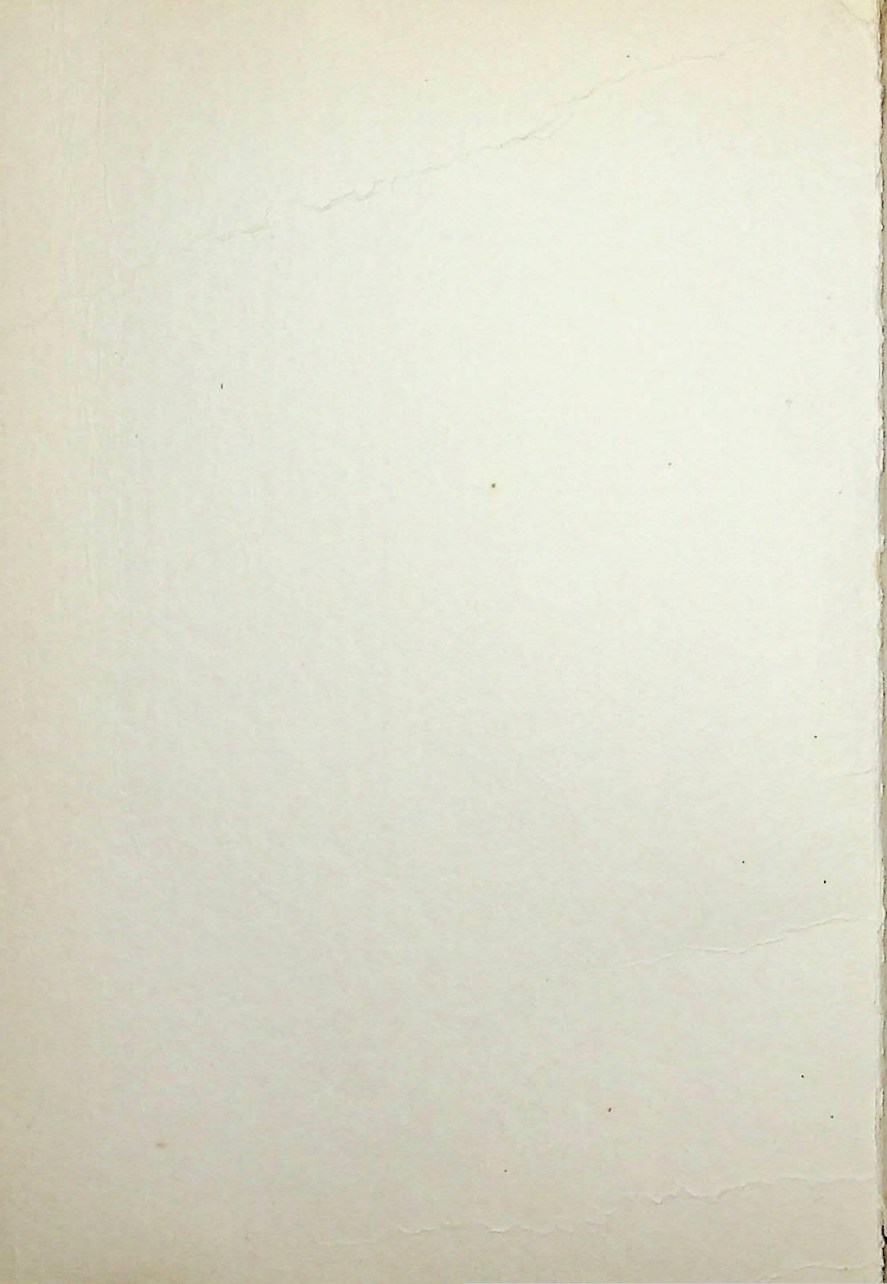
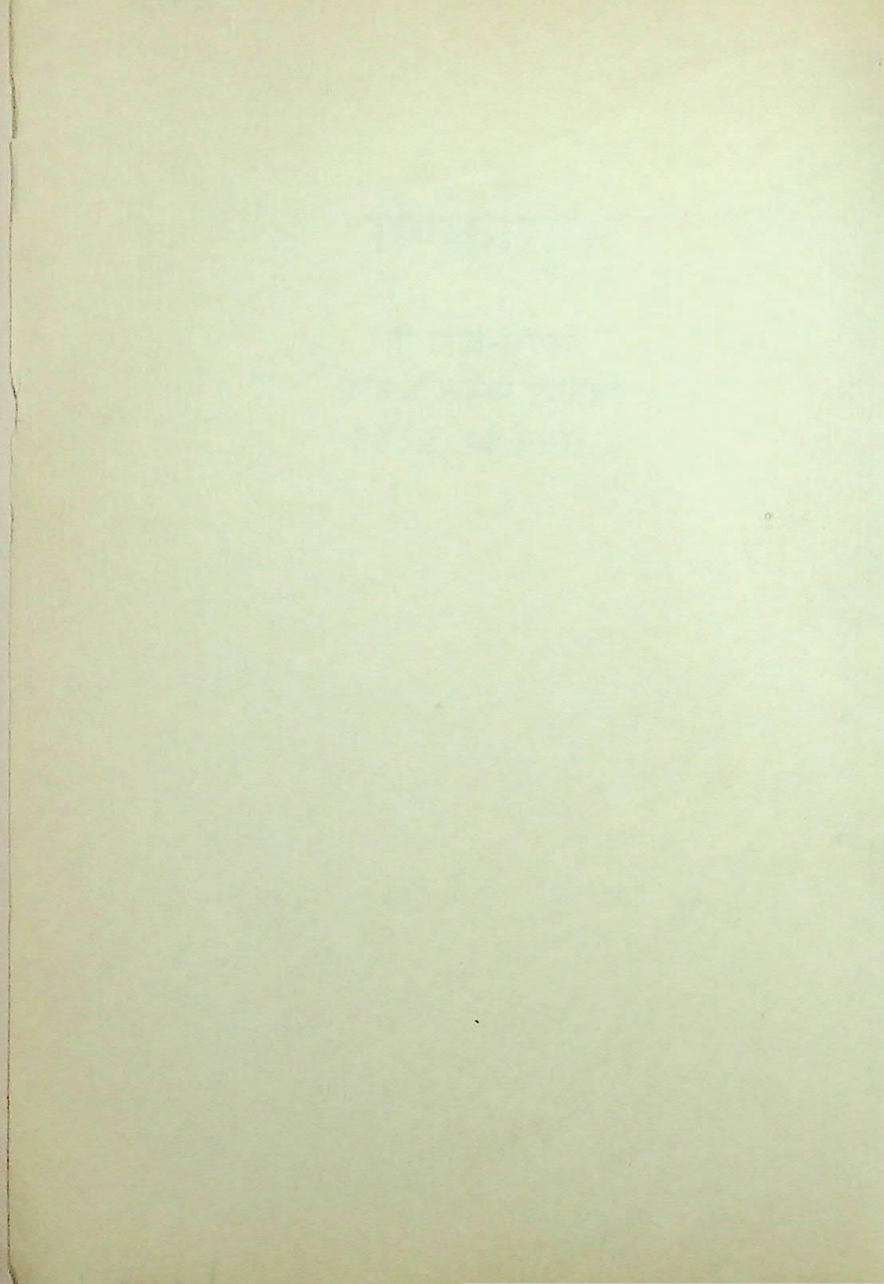


अमृतवाणी



अमृतवाणी

अब्दुल-बहा के
वक्तव्य पैरिस भ्रमण
के समय ई० १९११



अमृतवाणी

अब्दुल-बहा के
वक्तव्य पैरिस भ्रमण
के समय ई० १९११



बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट

बहाई हाउस

६ कैनिंग रोड

नई दिल्ली-११०००१

© National Spiritual Assembly
of the Bahá'ís of India

PARIS TALKS — Hindi translation

प्रथम हिन्दी संस्करण: १९८९

ISBN 81—85091—42—0

प्रस्तावना

अब्दुल-बहा अब्बास अफैन्दी की यूरोप यात्रा के बारे में पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है। मकान नं० 4, एवेन्यू डि कैमोइन्स, पैरिस में अपने आवास के दौरान प्रतिदिन प्रातःकाल उन्होंने उन लोगों के साथ अल्प वार्ताएँ कीं जो उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता लिये एकत्रित होते थे।

ये श्रोता भिन्न भिन्न राष्ट्रीयताओं तथा विचारधाराओं के होते थे, विद्वान तथा अशिक्षित, भिन्न धार्मिक गुटों के अनुयायी, ब्रह्म विद्यावादी तथा अज्ञेयवादी, भौतिकवादी तथा आध्यात्मवादी आदि।

अब्दुल-बहा फारसी भाषा में बोलते थे जिसका अनुवाद फ्रेंच भाषा में किया जाता था।

इन वार्ताओं को मैंने, मेरी दो पुत्रियों तथा एक मित्र ने लेखबद्ध किया।

कई मित्रों ने हमसे अनुरोध किया कि हम इन लेखों को अंग्रेजी में प्रकाशित करें परन्तु हम हिचकिचाते रहे। अंत में जब स्वयं अब्दुल-बहा ने हमें ऐसा करने को कहा तो हमने हामी भर ली—यद्यपि हम अनुभव करते थे "ऐसे महान संदेश के लिये हमारी लेखनी अत्यन्त दुर्बल है।"

अपने इस विनम्र अंग्रेजी अनुवाद में हमने पूरा प्रयास किया है कि फ्रेंच अनुवादक की सहज स्वाभाविक विशेषता को बनाये रखा जाये।

मोंट पैलेरिन वैवी

बीट्राईस मैरियन प्लैट (वरदियह)

मेरी एसथर ब्लोमफील्ड (परवीन)

रोज़ एलीनर सिसिला ब्लोमफील्ड (नूरी)

जनवरी, 1912

सारा लुईसा ब्लोमफील्ड (सितारिह)

विषय-सूची

भाग-१

अपरिचितों तथा विदेशियों के प्रति	
कृपा तथा सहानुभूति के व्यवहार का कर्तव्य	11
सच्चे विचार की शक्ति और मूल्य कार्यरूप में	
इसकी प्रत्यज्ञता पर निर्भर है	14
ईश्वर महा दयावान चिकित्सक है मात्र वही	
वास्तविक स्वास्थ्य प्रदान करता है	16
पूर्व तथा पश्चिम के लोगों के बीच एकता की	
आवश्यकता	18
ईश्वर सब कुछ समझता है उसे नहीं समझा जा	
सकता	20
युद्ध के तुल्य कारण तथा शांति हेतु प्रयत्न करने का	
प्रत्येक का कर्तव्य	26
सत्यता का सूर्य	29
सत्यता का प्रकाश अब पूर्व और पश्चिम पर चमक	
रहा है	32
सार्वलौकिक प्रेम	34
अब्दुल-बहा का कारावास	40
मनुष्य को प्रभु का महानतम उपहार	42
सत्य के सूर्य को छुपाने वाले बादल	44
धार्मिक पक्षपात	47
मनुष्य को ईश्वर के वरदान	52
विविधता में सौन्दर्य और समन्वय	54
ईसा के आगमन के बारे में भविष्यवाणियों का	
वास्तविक अर्थ	57

विषय-सूची

पवित्र आत्मा—ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ	
शक्ति	61
मनुष्य की दो प्रकृतियां	63
भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति	66
भौतिक तत्व का उत्थान तथा आत्मा का विकास	69
पैरिस में आध्यात्मिक गोष्ठियां	72
दो प्रकार का प्रकाश	74
पश्चिम में आध्यात्मिक आकांक्षा	76
पैरिस में एक स्टुडियो में दिया गया भाषण	79
बहाउल्लाह	81
अच्छे विचारों को अवश्य ही कार्यरूप दिया जाये	87
जल और अग्नि द्वारा बपतिस्मा का सही अर्थ	89
"लि अलायन्स स्प्रिरिच्युअलिस्ट" में प्रवचन	92
आत्मा की उन्नति	98
अब्दुलबहा की इच्छाएं और प्रार्थनायें	105
शरीर, आत्मा और मन के संबंध में	107
संसार की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए	
बहाई अवश्य ही तन और मन से काम करें	111
मिथ्या दोषारोपण के विषय में	113
आध्यात्मिकता के अभाव में वास्तविक प्रसन्नता तथा	
उन्नति संभव नहीं	117
कष्ट और दुःख	122
सम्पूर्ण मानवीय भावनाएं और सद्गुण	126
अन्य जातियों के कष्टों के प्रति लोगों की	
क्रूरतापूर्ण उदासीनता	128
अपनी अल्पसंख्या के कारण हम हतोत्साहित न हों ..	131
पैरिस में पास्टर बैगनर के गिरजाघर में	
अब्दुलबहा का वक्तव्य	134

विषय-सूची

भाग-२

थियोसोफिकल सोसायटी पैरिस	143
पहला सिद्धान्त—सत्य की खोज	153
दसरा सिद्धान्त—मानवमात्र की एकता	156
तीसरा सिद्धान्त—प्रेम तथा स्नेह	159
चौथा सिद्धान्त—धर्म तथा विज्ञान के बीच संबंध की स्वीकृति	160
पांचवां सिद्धान्त—पक्षपातों का उन्मूलन	166
छठा सिद्धान्त—अस्तित्व के साधन	172
सातवां सिद्धान्त—लोगों की समानता	176
आठवां सिद्धान्त—विश्व शांति	177
नवां सिद्धान्त—धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप	179
दसवां सिद्धान्त—स्त्री पुरुष की समानता	183
ग्यारहवां सिद्धान्त—पवित्र आत्मा की शक्ति	187
अंतिम सभा	193
अब्दुलबहा का वक्तव्य	198
प्रार्थना	203
बुराई	204
आत्मा की प्रगति	205
चार प्रकार का प्रेम	206
अब्दुलबहा द्वारा प्रकट की गई पाटी	209

परिचय

इस पुस्तक में अब्दुल-बहा के प्रवचन दिये गये हैं जो बहाई धर्म के महान केन्द्रीय व्यक्तित्वों में से तीसरे तथा अंतिम व्यक्तित्व थे। उनमें से एक मात्र वही थे जिन्होंने पश्चिमी देशों की यात्रा की। अक्टूबर से दिसम्बर 1912 तक उनके पैरिस आवास के दौरान यह प्रवचन अनौपचारिक रूप से श्रोताओं की छोटी-छोटी सभाओं में दिये गये। सभी प्रकार के लोगों ने उनको सुना—कुछेक तो उनके संदेश के लिये जीवन तक देने को तैयार थे और कुछ उनकी हत्या करने की साजिश करने लगे। कुछ मित्रों ने उनके शब्दों को लिखकर सुरक्षित कर लिया और आज वे कई भाषाओं में छप चुके हैं।

सन् 1844 के मई मास में ईरान देश के शीराज़ नगर में बहाई प्रकाशन का उदय हुआ जब 18 शुद्ध आत्माओं ने प्रज्ञ व्यक्तियों की भाँति सैय्यद मिर्जा अली मुहम्मद को ढूँढ़ निकाला, जिनकी वे खोज में थे और बिना किसी दबाव के स्वतंत्रापूर्वक ईश्वरीय दूत के रूप में पहचाना। दीक्षा के थोड़े समय पश्चात् इन शिष्यों को इनके नेता ने दूर स्थित स्थानों पर पृथ्वी पर नये प्रकाशन के आगमन तथा एक और अधिक महान ईश्वरीय दूत के शीघ्र आगमन की घोषणा करने हेतु भेजा। इन शुभ समाचारों की घोषणा के कुछ ही महीनों के अन्दर देश में भयानक नफरत की ज्वाला भड़क उठी। जैसे जैसे यह आंदोलन फैलता गया और गण्यमान्य तथा विनम्र लोग इसके अनुयायी बनने लगे, सारा देश इतिहास की क्रूरतम यातनाओं का दृश्य प्रस्तुत करने लगा। राज्य

परिचय

अधिकारियों में त्रास फैलने लगा और उन्होंने जनता के विरोध की अग्नि को भड़काना शुरू कर दिया। उस ज़माने में ईरान में दिखाई देने वाले भयानक दृश्यों का वर्णन पाश्चात्य यात्रियों ने अपने लेखों में किया है। परन्तु भयानक से भयानक और क्रूर से क्रूर यंत्रणायें तथा शहादतें (कुर्बानियाँ) भी प्रभु अवतार के अनुयायियों की राह में बाधा न बन सकीं और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अपने प्राणों की आहुति देने की अपनी उत्तरोत्तर बढ़ती इच्छा को व्यक्त किया। कुछ ही वर्षों की अवधि में बीस हजार लोगों ने हंसी खुशी मृत्यु का आलिगन किया। अली मुहम्मद, जिन्होंने 'बाब' अर्थात् द्वार का उपनाम धारण कर लिया था, के बलिदान के साथ अत्याचार का पहला चरण अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया। 9 जुलाई, 1850 को तबरीज नगर के मुख्य चौक पर गोलीमार दस्ते द्वारा उनको शहीद कर दिया गया।

सन् 1863 में बग़दाद नगर की रिज़वान (स्वर्ग) बाटिका में एक कुलीन ईरानी, मिर्जा हुसैन अली, जो बहाउल्लाह अर्थात् "ईश्वरीय गौरव" के नाम से भी प्रख्यात थे, ने अपने ईश्वरीय दूत होने की घोषणा की जिसकी प्रतीक्षा करने के लिए बाब ने अपने अनुयायियों को कहा था। वे स्वयं भी बाब के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। उनकी धनदौलत और जायदाद सब छीन कर उन्हें तेहरान की एक काल कोठरी में कैद कर दिया गया और फिर उन्हें बग़दाद में निष्कासित कर दिया गया। उसके बाद कई और देशनिकाले दिये गये जिनसे संयोगवश धर्मग्रंथों में की गई कुछ भविष्यवाणियों की पूर्ति हुई। कुस्तुनतुनिया, अदरना और अन्त में अक्का। यहाँ पर अपने कारागार से उन्होंने पृथ्वी के शासकों को पत्रों द्वारा

परिचय

अपने और अपने संदेश के बारे में घोषणा की और अपनी युद्ध की तैयारियों को छोड़कर उनका अपनी ओर आह्वान किया और यह भी भविष्यवाणी की कि यदि उन्होंने उनकी बात को सुनाअनसुना कर दिया तो उनका पतन होगा। बीस राज्य जिनका तब से पतन हो चुका है उनके शब्दों की शक्ति का कठोर प्रमाण हैं। कुल मिलाकर उनकी रचनाओं तथा लेखों की संख्या सौ के लगभग पहुँचती है, जिनमें बहुत से व्यक्तिगत पृष्ठताछ के उत्तर में लिखे गये थे। सन् 1892 में जब कि यथार्थ में वे अभी बंदी ही थे, उनका देहावसान हो गया। मृत्यु पूर्व उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र, जो अब्दुल-बहा अर्थात् "गौरव का सेवक" कहलाते थे, को अपना उत्तराधिकारी तथा अपने लेखों और शब्दों का व्याख्याता नियुक्त किया।

अब्दुल-बहा का जन्म सन् 1844 में हुआ। अपने पिता की सभी यात्राओं में उन्होंने उनका साथ दिया तथा अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उनकी सभी वंचनाओं, देश निष्कासनों तथा कारावास में उनके साथ रहे। बहाउल्लाह के स्वर्गवास के पश्चात् भी वे बंदी बने रहे और सन् 1908 की तुर्की क्रांति के बाद जब तक वे रिहा नहीं हुए, अपने निष्कासन काल में पाश्चात्य देशों से आये अनेक यात्रियों से उन्होंने भेंट की। उस समय तक प्रभुधर्म के इस मान्यता प्राप्त नेता के लिये इस संदेश के प्रचार प्रसार हेतु सफर करना संभव नहीं था।

सन् 1911 में 67 वर्ष की आयु में अब्दुल-बहा यूरोप के सफर पर जलमार्ग द्वारा रवाना हुए और सिटी टेम्पल लंदन के स्थान पर पश्चिमी श्रोताओं के सम्मुख उन्होंने प्रथम भाषण दिया। अमरीका की अपनी आठ महीनों की यात्रा के दौरान

परिचय

न्यूयार्क से लेकर सान फ्रांसिस्को तक उन्होंने 40 से अधिक नगरों का भ्रमण किया, सभी प्रकार के लोगों के सामने भाषण दिये तथा विल्मेट, शिकागो में पश्चिमी संसार के पहले बहाई प्रार्थनागृह की आधारशिला रखी। यह निर्माण सन् 1913 में पूरा हो गया था। तत्पश्चात् उन्होंने कई योरूपीय देशों की यात्रा की और दोबारा इंग्लैण्ड गये। इस पुस्तक में दी गई वार्तायें उन्होंने अमरीका से लौटने पर पैरिस तथा लंदन में कीं। कई अन्य योरूपीय नगरों के अतिरिक्त उन्होंने आक्सफोर्ड, एडिनबर्ग तथा ब्रिस्टल में भी भाषण दिये।

उस समय के समाचार पत्रों ने उनके बारे में बहुत कुछ लिखा और जहाँ कहीं भी वे जाते थे, उनसे मिलने के लिये लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी। लंदन में उनकी आतिथेय ने लिखा है "जब हम उन दिनों की याद करते हैं तो हमारे कान लोगों की पदचापों से गूँज उठते हैं जो विश्व के हर देश से आते थे—प्रतिदिन, सारा दिन, एक लगातार प्रवाह, एक न समाप्त होने वाला जुलूस"। विद्वान लोगों ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की।

सन् 1913 में वे पुण्य भूमि लौट आये जहाँ पर सन् 1921 में उनका देहावसान हो गया।

बहाउल्लाह द्वारा घोषित विचारों का विश्व भर में इतनी तेजी से प्रसार आधुनिक युग की एक बड़ी अद्भुत घटना है। वर्तमान समय के चिन्तक ऐसे नियमों का विरोध नहीं करते जैसे कि स्त्री पुरुष की समानता, राष्ट्रों की एकता—जिसे कई खोजों से बड़ी सहायता मिली है, एक अन्तर्राष्ट्रीय सहायक भाषा की रचना, एक विश्व संसद जिसमें राष्ट्रीय प्रभुसत्ता का थोड़ा सा त्याग भी शामिल हो, सामूहिक सुरक्षा की स्थापना

परिचय

तथा मानवमात्र की एकता की मान्यता जिसके फलस्वरूप इसकी उलझनों का स्थानीय स्तर पर सुलझाना असंभव बन जायेगा।

वस्तुतः यद्यपि इन तथा अन्य नियमों की घोषणा ऐसे समय पर की गई जब वे बेतुकी हद तक काल्पनिक लगती थीं तथापि उनकी अंतिम विजय पर कभी भी संदेह नहीं किया गया। केवल इसकी प्राप्ति मात्र में ही मनुष्य को चयन करने की छूट दी गई थी। यह प्रक्रिया सरल होगी या कष्टकर यह इस बात पर निर्भर है कि वह इनके दिव्य प्रकटकर्ता को स्वीकार करता है या ठुकराता है। उसके चयन के भयानक परिणाम आज उसी प्रकार स्पष्ट हैं जैसे एक के बाद एक आदर्शों की अनिवार्य स्वीकृति, जिनकी उसने उपेक्षा की थी।

बहाई धर्म की परिभाषा धर्म के नवीकरण के रूप में की गई है परन्तु धर्मों में कुछ यह नई वस्तु भी प्रस्तुत करता है। अपने निरुपित नियमों पर आधारित यह विश्व व्यवस्था पर अपना घोषणापत्र प्रस्तुत करता है जिसका उद्देश्य मानवमात्र की एकता तथा उस प्रशासन प्रणाली को जो अविकसित रूप में संसार के कई भागों में सफलतापूर्वक प्रचलित है, निश्चित बनाना है। यह कई समस्याओं पर प्रकाश डालता है जैसे सृष्टि का अर्थ तथा ब्रह्माण्ड में मानव का स्थान। इसके अतिरिक्त यह वर्तमान युग की अव्यवस्था तक के संपूर्ण इतिहास की व्याख्या करता है और उन सबको उस उद्देश्य से जोड़ता है जिसका विकास एक क्षण के लिये भी नहीं रुकता। किसी व्यक्ति का अपने आपको इसके साथ एकरूप दर्शाना उसके लिये महान संतोष तथा इसकी प्राप्ति में सहायता देने की तीव्र इच्छा का कारण बनता है। महारानी विक्टोरिया की

परिचय

पौत्री, रूमानिया की महारानी मेरी लिखती हैं: "बहाई शिक्षा शांति तथा ज्ञानदायक है। यह एक महान आर्लिगन की भांति है जिसने उन सब लोगों को एक स्थान पर इकट्ठा कर लिया है जो लंबे समय से आशापूर्ण शब्दों की खोज में लगे हुए थे। यह उन सभी महान अवतारों को स्वीकार करता है जो इससे पहले हुए, यह किसी भी सिद्धान्त का खंडन नहीं करता और सभी द्वार खुले रखता है। भिन्न मतावलंबियों को लगातार आपसी कलह से दुःखी और एक दूसरे के प्रति असहनशीलता से थककर मैंने बहाई शिक्षा में यीशू मसीह की सच्ची आत्मा को पाया, जिसे प्रायः गलत समझा जाता है और जिसका खण्डन किया जाता है: कलह के स्थान पर एकता, निन्दा के स्थान पर आशा, घृणा के स्थान पर प्रेम और सभी लोगों के लिए एक महान पुनर्आश्वासन।"

अब्दुलबहा के स्वर्गवास पर बहाई धर्म ने अपने रचनात्मक युग में पदार्पण किया—ऐसा युग जिसकी नियति इसे विश्व भर में स्थापित होते देखना थी। सन् 1921 में बहाई धर्म 33 देशों में पहुँचा था और तब से सारे संसार में फैल गया है।

जिन लोगों ने अब्दुलबहा से भेंट और बातचीत की उन्हें बहाई धर्म के वेगपूर्ण फैलाव तथा सफलता से कोई अचंभा नहीं हुआ। उन्होंने अपने आप को ऐसे स्तर पर उठता अनुभव किया जहाँ पर उनकी समस्याएँ लप्त हो गई हों। वे (अब्दुलबहा) प्रेम और एकता की एक ऐसी अद्भुत भावना को प्रदीप्त करते थे जिससे उनकी उपस्थिति में सारे भेदभाव मिट जाते थे। बहाई धर्म के तीन प्रमुख व्यक्तित्वों (बाब, बहाउल्लाह, अब्दुलबहा) में से न्यूनतम व्यक्तित्व (अब्दुलबहा) यदि ऐसा प्रभाव उत्पन्न कर सकते थे तो वे

परिचय

आत्माओं को आकर्षित करने और दिलों को जोड़ने में बहाई धर्म की शक्ति पर कैसे अचंभा कर सकते थे? एक प्रख्यात अंग्रेज सर रोनाल्ड स्टॉरज़, जिन्होंने अब्दुलबहा से भेंट की और उनकी महान आत्मा की शक्ति को अनुभव किया, के शब्दों के निम्न उद्धरण के साथ हम इस परिचय को समाप्त करते हैं:

"सबसे पहले मैं अब्दुलबहा से सन् 1900 में मिला मैं हैफा से अक्का तक समुद्र तट के साथ साथ एक वाहन में गया और इस धैर्यवान परन्तु न झुकने वाले बंदी और देश निष्कासित व्यक्ति के साथ बड़ा आनंदपूर्ण एक घंटा बिताया। युद्ध ने हमें फिर उस समय तक जुदा कर दिया जब तक कि सीरिया में अपने सफलतापूर्वक प्रवेश के बाद लार्ड एलनबी ने मुझे हैफा तथा उस सारे क्षेत्र में प्रशासन की स्थापना करने के लिये नहीं भेजा। वहाँ पहुँचने पर मैंने उसी दिन अब्बास अफेन्दी से भेंट की और उनमें कोई परिवर्तन न पाकर मुझे बहुत खुशी हुई।

"जब कभी मैं हैफा गया तो उनसे भेंट करना नहीं चुका। उनकी वार्ता निःसंदेह एक असाधारण स्तर पर होती थी, किसी प्राचीन ईश्वरीय अवतार की भाँति, फिलिस्तीनी राजनीति की तुच्छता और उलझनों से बहुत ऊपर और सभी समस्याओं को प्रथम नियमों के स्तर पर ले जाती हुई।

"मैंने उन्हें अपनी अंतिम दुःखद प्रेमपूर्ण श्रद्धाजली उस समय भेंट की जब सन् 1921 में सर हरबर्ट सेम्युअल के साथ मैं अब्बास अफेन्दी की शवयात्रा में सम्मिलित हुआ। कार्मेल पर्वत की चढ़ाई चढ़ते हुए भिन्न धर्मावलंबियों की पंक्ति के अगले सिरे पर हम चल रहे थे और रस्म की अत्यंत सादगी

परिचय

पर दुःख और आदर के भावों की ऐसी एकता को मैंने पहले कभी नहीं देखा।”

भाग 1

अपरिचितों तथा विदेशियों के प्रति कृपा तथा सहानुभूति के व्यवहार का कर्त्तव्य

अक्टूबर 16-17, 1911

जब कोई व्यक्ति ईश्वर की ओर उन्मुख होता है तो उसे हर जगह प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। सभी लोग उसे भाई समान लगते हैं। जब आप अन्य देशों के अपरिचित लोगों से मिलें तो ऐसा न हो कि रीति रिवाज के कारण आप उदासीन और सहानुभूति रहित लगने लगें। उन्हें ऐसी दृष्टि से न देखें जैसे कि वे चोर, बदमाश और असभ्य लोग हों। आप समझते हैं कि आपके लिए सावधान रहना बहुत आवश्यक है कि आप इन संभवतः अवांछित लोगों के साथ मेलजोल बढ़ाने का खतरा मोल न लें।

मैं आपसे कहता हूँ कि आप केवल अपने बारे में ही न सोचें। अपरिचितों के प्रति दयावान बनें, चाहे वे तुर्की, जापान, ईरान, रूस, चीन या संसार के किसी भी अन्य देश के हों।

उन्हें सुखी बनाने में सहायता दें; पता लगाएँ कि वे कहाँ ठहरे हुए हैं, उनसे पूछें कि क्या आप उनकी कोई सेवा कर सकते हैं, उनके जीवन को अधिक प्रसन्नतापूर्ण बनाने का यत्न करें।

इस प्रकार यदि कभी जो आपने पहले संदेह किया था सच

कृपा तथा सहानुभूति का कर्तव्य

भी निकले तो भी अपने रास्ते से हटकर भी उनके प्रति कृपा दशायें—यह कृपा अच्छा बनने में उनकी सहायक सिद्ध होगी।

आखिरकार विदेशी लोगों से अपरिचितों का सा व्यवहार क्यों किया जाये?

आपसे मिलने जुलने वाले लोग बिना आपके बताये जान जायें कि वस्तुतः आप एक बहाई हैं।

सभी राष्ट्रों के प्रति दया के बारे में बहाउल्लाह की शिक्षा को आप कार्यान्वित करें। केवल शब्दों मात्र में ही मित्रता प्रकट कर आप संतोष न कर लें अपितु, आपके संपर्क में आने वाले सभी लोगों के प्रति आपका हृदय प्रेमपूर्ण दया से भरपूर हो जाये।

हे पश्चिमी राष्ट्रों के लोगों, पूर्वी संसार से जो लोग आपके बीच थोड़ा समय व्यतीत करने के लिये आयें उनके प्रति दयापूर्ण बनो। जब आप उनसे बात करें तो अपनी रूढ़िवादिता भूल जायें क्योंकि वे इसके अभ्यस्त नहीं। पूर्वीय लोगों को यह व्यवहार रूखा और मित्रताहीन लगता है। अपितु आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण हो। सब देखें कि आपका हृदय सार्वलौकिक प्रेम से परिपूर्ण है। जब आप किसी ईरानी या अन्य अपरिचित से मिलें तो उससे मित्र की भाँति बातचीत करें; यदि वह अकेलापन अनुभव कर रहा हो तो उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें, उसे अपनी स्वेच्छापूर्ण सेवायें पेश करें; यदि वह दुखी हो तो उसे सांत्वना दें, यदि निर्धन हो तो उसकी मदद करें, यदि उत्पीड़ित हो तो उसकी रक्षा करें, यदि विपत्ति में हो तो उसको धीरज बँधायें। ऐसा कर आप यह दशायेंगे कि केवल शब्दों में नहीं अपितु कर्म तथा वास्तविकता में आप सभी लोगों को अपना भाई मानते हैं।

कृपा तथा सहानुभूति का कर्त्तव्य

इस बात पर सहमति से क्या लाभ कि सार्वलौकिक मित्रता अच्छी है और मानव जाति की एकता एक ऊँचा आदर्श है? जब तक इन विचारों को कार्य में परिणित न किया जाये तब तक वे बेकार हैं।

संसार में बुराइयों का अस्तित्व बना हुआ है केवल इसलिए कि लोग अपने आदर्शों की मात्र बातें ही करते हैं और उन्हें व्यवहार में लाने का कोई यत्न नहीं करते। यदि शब्दों की जगह व्यवहार में लें तो शीघ्र ही संसार की दुर्दशा सुखचैन में बदल जायेगी।

कोई व्यक्ति जो बड़ी अच्छाई करता है और इसके बारे में बात नहीं करता वह संपूर्णता के पथ पर अग्रसर है।

वह व्यक्ति जिसने थोड़ी सी अच्छाई की हो और बातों में उसे बढ़ाचढ़ाकर पेश करे, उसका मूल्य बहुत कम है।

यदि मैं आपसे प्रेम करता हूँ तो मुझे लगातार अपने प्रेम के विषय में बात करते रहने की आवश्यकता नहीं—बिना शब्दों के ही आप इसे जान जाएँगे। दूसरी ओर, यदि मैं आपसे प्रेम नहीं करता तो आप उसके बारे में भी जान जाएँगे और चाहे मैं हजार बार आपसे कहूँ कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ, आप मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।

लोग अच्छाई का खूब प्रदर्शन करते हैं और सुन्दर सुन्दर शब्दों का जाल सा बुन देते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि अन्य लोगों की तुलना में उन्हें बेहतर और महान समझा जाये। वे संसार की दृष्टि में प्रसिद्धि चाहते हैं। वे जो ज्यादा अच्छाई करते हैं अपने काम के विषय में कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हैं।

ईश्वर के बालक बिना गर्वोक्ति प्रभु के नियमों का पालन

सच्चे विचार की शक्ति

करते हुए काम करते हैं।

आपसे मुझे आशा है कि आप सदा जुल्म और उत्पीड़न से दूर रहेंगे; जब तक प्रत्येक देश में न्याय का आधिपत्य नहीं हो जाता तब तक आप बिना रुके काम करते रहेंगे, आप अपने हृदय शुद्ध रखेंगे और अपने हाथों को अनुचित कार्यों से दूर रखेंगे।

यही है वह जो ईश्वर की निकटता आपसे चाहती है और यही है वह जिसकी आशा मैं आपसे करता हूँ।

सच्चे विचार की शक्ति और मूल्य कार्यरूप में इनकी प्रत्यक्षता पर निर्भर हैं

अक्टूबर 18

मानव की वास्तविकता उसका विचार है, उसका भौतिक शरीर नहीं। विचार शक्ति तथा पाशविक शक्ति हिस्सेदार हैं। यद्यपि मानव पाशविक सृष्टि का भाग है, परन्तु उसे विचार शक्ति प्राप्त है जो अन्य सभी सृष्टित जीवों से उत्तम है।

यदि किसी व्यक्ति का ध्यान लगातार स्वर्गिक विषयों में लगा रहे तो वह साधु संत जैसा बन जाता है; दूसरी ओर यदि उसका विचार उड़ान नहीं भरता परन्तु नीचे की ओर इस संसार की वस्तुओं पर केन्द्रित होता है तो वह ज्यादा से ज्यादा भौतिकवादी बन जाता है, यहाँ तक कि वह ऐसी दशा में पहुँच जाता है जहाँ पर कि वह मात्र पशु से बेहतर नहीं होता।

विचारों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

(पहली) विचार जो केवल विचार के संसार से ही सम्बद्ध होता है।

सच्चे विचार की शक्ति

(दूसरी) विचार जो अपने आपको कार्यरूप में व्यक्त करता है।

कुछ पुरुष तथा स्त्रियाँ अपने महान विचारों पर गौरव का अनुभव करते हैं, परन्तु यदि ये विचार कार्यरूप में परिणित नहीं होते तो वे बेकार होते हैं; विचार की शक्ति कार्यरूप में इसकी प्रत्यक्षता पर निर्भर है। यह संभव है कि प्रगति और विकास के संसार में किसी दार्शनिक का विचार अपने आपको अन्य लोगों के कामों में प्रत्यक्ष करे जबकि वे लोग स्वयं अपने जीवन में अपने महान आदर्शों को या तो व्यक्त कर नहीं सकते या करना नहीं चाहते। दार्शनिकों की अधिसंख्या इस श्रेणी से संबंध रखती है जिनकी शिक्षायें उनके कार्यों से बहुत ऊँची होती है। यह अन्तर होता है उन दार्शनिकों के बीच जो आध्यात्मिक शिक्षक होते हैं और वे जो केवल दार्शनिक मात्र होते हैं। आध्यात्मिक शिक्षक स्वयं अपनी शिक्षाओं का अनुसरण करने वाला पहला व्यक्ति होता है। वह अपने विचारों और आदर्शों को व्यवहार की दुनिया में लाता है। उसके दिव्य विचार संसार पर प्रकट किये जाते हैं। उसका विचार वह स्वयं है जिससे उसे अलग नहीं किया जा सकता। जब हम देखते हैं कि एक दार्शनिक न्याय के महत्व और महानता पर बल देता है और दूसरी ओर एक क्रूर बादशाह को उसके जुल्म और अत्याचार में उत्साहवर्द्धन देता है, तो हम तुरंत समझ जाते हैं कि वह पहली श्रेणी से संबंध रखता है, क्योंकि उसके विचार तो स्वर्गिक हैं परन्तु वह उसके साथ मेल खाने वाले स्वर्गिक गुणों का अभ्यास नहीं करता।

आध्यात्मिक दार्शनिकों के साथ ऐसा होना असंभव है क्योंकि वे सदा अपने ऊँचे और महान विचारों को कार्यों द्वारा व्यक्त करते हैं

ईश्वर महादयावान चिकित्सक है। मात्र वही वास्तविक स्वास्थ्य प्रदान करता है।

अक्टूबर 19

सभी प्रकार का सच्चा स्वास्थ्य प्रभु से प्राप्त होता है। रोग के दो कारण होते हैं, एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। यदि रोग शारीरिक हो तो भौतिक उपचार की आवश्यकता होती है, और यदि यह रोग आत्मिक हो तो आध्यात्मिक इलाज की जरूरत होती है।

स्वास्थ्य लाभ के समय यदि हमें दैवी आशीर्वाद प्राप्त हो तो केवल तभी हम संपूर्णता को प्राप्त हो सकते हैं क्योंकि दवा तो केवल एक ऊपरी और दिखाई देने वाला साधन है जिसके द्वारा हम दैवी स्वास्थ्य प्राप्त करते हैं। जब तक आत्मा स्वस्थ न हो तब तक शरीर के स्वास्थ्य का कोई मूल्य नहीं। सब कुछ प्रभु के हाथ में है और उसके बिना हमें स्वास्थ्य लाभ नहीं हो सकता।

ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जो अन्ततः उसी रोग से मरे जिसका उन्होंने विशेषरूप से अध्ययन किया। उदाहरण के तौर पर, अरस्तू, जिसने पाचन शक्ति का विशेष अध्ययन किया था अन्त में पेट के रोग से मरा। अवीसियू हृदय रोगों का विशेषज्ञ था परन्तु वह हृदय रोग से ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। प्रभु महादयावान चिकित्सक है, मात्र उसी के पास सच्चा स्वास्थ्य देने की शक्ति है।

सभी प्राणी ईश्वर पर निर्भर हैं चाहे उनका ज्ञान, शक्ति और स्वतंत्रता कितने ही सघन दिखाई क्यों न देते हों।

पृथ्वी के शक्तिशाली बादशाहों का ध्यान करो। संसार में

महादयावान चिकित्सक

उन्हें वे सारी शक्तियाँ प्राप्त हैं जो मानव उन्हें दे सकता है, फिर भी जब मौत का बुलावा आता है तो उन्हें निश्चय ही नतमस्तक होना पड़ता है जैसे किसान लोग उनके राजमहल के द्वार पर करते हैं।

जानवरों को ही देखिये, अपनी प्रत्यक्ष शक्ति में भी वे कितने असहाय होते हैं। सबसे बड़ा जानवर हाथी एक मक्खी द्वारा सताया जाता है और शेर बब्बर एक छोटे से कीड़े के क्षोभ से बच नहीं सकता। मनुष्य को भी, जो सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट जीव है, स्वयं अपने जीवन के लिये कई वस्तुओं की आवश्यकता होती है। सबसे पहले उसे वायु की आवश्यकता होती है और यदि कुछ क्षणों के लिए भी उसे इससे वंचित कर दिया जाये तो वह मर जाता है। वह जल, खाद्य पदार्थ, कपड़े, ऊष्णता तथा अन्य बहुत सी वस्तुओं पर भी निर्भर है। सभी ओर से वह खतरों तथा कठिनाइयों से घिरा हुआ है जिनका सामना उसका अकेला भौतिक शरीर नहीं कर सकता यदि मनुष्य अपने आस पास के संसार पर नजर दौड़ाये तो वह देखेगा कि किस प्रकार सभी रचित वस्तुएँ प्रकृति पर निर्भर हैं और उसके कानून के बंधन में बँधी हुई हैं।

भौतिकता के संसार से ऊपर उठने और इसे अपना गुलाम बनाने में केवल मनुष्य ही अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा अपने आपको मुक्त कर सका है।

प्रभु की सहायता के बिना मनुष्य भी उन जानवरों की भाँति है जो नष्ट हो जाते हैं परन्तु ईश्वर ने उसे ऐसी अद्भुत शक्ति प्रदान की है कि वह सदा ऊपर की ओर देखे और अन्य उपहारों के अतिरिक्त उस प्रभु की दिव्य कृपा से स्वास्थ्य लाभ का उपहार भी प्राप्त कर सके।

पूर्व तथा पश्चिम के बीच एकता

परन्तु, खेद कि, मानव इस अनुपम भलाई के लिये आभारी नहीं और उपेक्षा की गाढ़ी नींद में सोया हुआ है, तथा उस महानकृपा से असावधान है जो प्रभु ने उस पर की है और प्रकाश से विमुख हो अंधेरे में अपने रास्ते पर चला जा रहा है।

यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप ऐसा व्यवहार करने वाले न हों, अपितु आप अपनी दृष्टि मजबूती से प्रकाश पर जमाये रखें ताकि जीवन के अंधकारपूर्ण स्थलों में आप प्रकाश की मशाल के समान हों।

पूर्व तथा पश्चिम के लोगों के बीच एकता की आवश्यकता

शुक्रवार, अक्टूबर 20

अब्दुल-बहा ने कहा:

वर्तमान युग की भाँति प्राचीन युग में भी सत्यता का आध्यात्मिक सूर्य सदैव पूर्व के क्षितिज से ही उदित हुआ है।

अब्राहम पूर्व में प्रकट हुए। लोगों के नेतृत्व तथा प्रशिक्षण के लिये मूसा का आगमन पूर्व में हुआ। भगवान मसीह पूर्वीय क्षितिज से उदित हुए। हजरत मुहम्मद को एक पूर्वीय राष्ट्र में भेजा गया। बाब पूर्व स्थित ईरान देश में जन्मे। बहाउल्लाह ने पूर्व में जीवन व्यतीत किया और शिक्षा दी। सभी महान आध्यात्मिक शिक्षक पूर्वी संसार में ही उत्पन्न हुए। परन्तु यद्यपि मसीह रूपी सूर्य पूर्व में उदय हुआ, इसका तेज पश्चिम में प्रत्यक्ष हुआ जहाँ पर इसके गौरव की दीप्ति को ज्यादा साफ तौर पर देखा गया। उनकी शिक्षाओं का दिव्य प्रकाश

पूर्व तथा पश्चिम के बीच एकता

पश्चिमी संसार में अधिक तीव्रता के साथ देदीप्यमान हुआ जहाँ पर इसने अपनी जन्मभूमि की तुलना में अधिक वेग से उन्नति की है।

आज के युग में पूर्व को भौतिक उन्नति की आवश्यकता है और पश्चिम को एक आध्यात्मिक विचार की। यह उत्तम होगा यदि पश्चिम इस ज्ञान के लिए पूर्व की ओर देखे और इसके बदले अपना वैज्ञानिक ज्ञान दे। उपहारों का यह आदान प्रदान अवश्य ही सम्पन्न हो।

एक दूसरे की त्रुटि की पूर्ति हेतु पूर्व तथा पश्चिम निश्चय ही आपस में समझौता करें। यह एकता सच्ची सभ्यता लायेगी जहाँ पर आध्यात्मिकता को भौतिकता में व्यक्त और कार्यान्वित किया जाता है।

एक दूसरे के साथ इस प्रकार के आदान प्रदान द्वारा ज्यादा से ज्यादा मेल मिलाप बढ़ेगा, सभी लोग एक हो जाएंगे, एक महान संपर्णता की स्थिति की प्राप्ति होगी, मित्रता गहन हो जाएगी और ईश्वर के गुणों को प्रतिबिम्बित करने हेतु यह संसार एक निर्मल और चमचमाता दर्पण बन जायेगा।

पूर्व तथा पश्चिम के हम सभी राष्ट्रों को इस उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिये अवश्य ही पूरे तन और मन से दिन रात प्रयत्न करना चाहिये ताकि पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के बीच एकता को सुदृढ़ बनाया जा सके। तब प्रत्येक हृदय उत्साहित होगा, सभी आँखें खुल जाएँगी अत्यंत अद्भुत शक्ति प्रदान होगी और मानवमात्र की प्रसन्नता निश्चित हो जायेगी।

हम अवश्य ही प्रार्थना करें कि ईश्वर की कृपा से ईरान पश्चिम की भौतिक तथा मानसिक सभ्यता को ग्रहण करने के योग्य बन सके और बदले में दिव्य कृपा से अपना आध्यात्मिक

ईश्वर सब कुछ समझता है

प्रकाश उन्हें दे सके। पूर्व तथा पश्चिम के संगठित लोगों का आसक्तिपूर्ण तथा उत्साहपूर्ण कार्य इस परिणाम की प्राप्ति में सफल होगा क्योंकि दिव्य आत्मा की शक्ति उनकी सहायता करेगी।

बहाउल्लाह की शिक्षाओं के नियमों का एक एक करके सावधानी के साथ उस समय तक अध्ययन किया जाना चाहिये जब तक कि मन और हृदय उन्हें पूरी तरह समझ और स्वीकार न कर लें—तब आप प्रकाश के सुदृढ़ अनुयायी, सच्चे आध्यात्मिक, प्रभु के स्वर्गिक सिपाही तथा ईरान, योरुप और समूचे संसार में सच्ची सभ्यता की प्राप्ति और प्रसार में अग्रसर होंगे।

यह होगा वह स्वर्ग जो उस समय धरती पर उतर आयेगा जब मानवमात्र गौरव के साम्राज्य में एकता की छत्रछाया तले एकत्रित हो जायेगा।

ईश्वर सब कुछ समझता है उसे नहीं समझा जा सकता।

शुक्रवार, सांय

अक्टूबर 20

अब्दुल-बहा ने कहा:

भिन्न उद्देश्यों से पैरिस में प्रतिदिन असंख्य गोष्ठियाँ होती है जैसे कि राजनीति, वाणिज्य, शिक्षा, कला, विज्ञान तथा अन्य कई विषयों पर चर्चा हेतु।

ये सभी गोष्ठियाँ अच्छी होती हैं परन्तु हमारी यह सभा इसलिए आयोजित हुई है कि लोग प्रभु की ओर उन्मुख हों,

ईश्वर सब कुछ समझता है

मानवता की भलाई के लिए सर्वोत्तम तरीके से काम करना सीखें, पक्षपातों को दूर करने के साधन खोजें और मानव हृदय में प्रेम तथा सार्वलौकिक भ्रातृभाव का बीज बोयें।

हमारी सभा के अभिप्राय को ईश्वर का समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त हैं।

पूर्वविधान (Old Testament) में हम पढ़ते हैं कि ईश्वर ने कहा: "आओ हम मनुष्य की रचना अपने प्रतिरूप में करें" गोस्पल में ईसा ने कहा, "मैं पिता में हूँ और पिता मझमें है"। कुरान में ईश्वर कहता है, "मनुष्य मेरा रहस्य है और मैं उसका"। बहाउल्लाह लिखते हैं कि प्रभु कहता है, "तुम्हारा हृदय मेरा निवास स्थल है, मेरे अवतरण के लिए इसे शुद्ध बनाओ। तुम्हारी आत्मा मेरा प्राकट्य स्थल है, मेरे आविर्भाव के लिए इसे पवित्र बनाओं।"

ये सारे पावन शब्द हमें बताते हैं कि मानव की रचना प्रभु के प्रतिरूप में की गई है, फिर भी मानव मन के लिए ईश्वर के सार को समझ पाना असंभव है क्योंकि सीमित ज्ञान को इस असीम रहस्य पर लागू नहीं किया जा सकता। प्रभु सब को अपने में समोये हुए है, उस को समाया नहीं जा सकता। समाने वाला समार्ये जाने वाले से उत्तम होता है। संपूर्ण अपने भागों से बड़ा होता है।

मनुष्य जिन बातों को समझते हैं वे उनकी बोध क्षमता से परे नहीं हो सकतीं। अतः मानव हृदय के लिए यह असंभव है कि वह परमात्मा की महिमा को समझ सके। हमारी कल्पना केवल मात्र वही तस्वीर देख सकती है जो यह खींच सकती है।

सृष्टि के भिन्न जगत्‌ओं में बोधशक्ति के अंश में अंतर होता है। खनिज, वनस्पति तथा पशु जगत में से प्रत्येक अपने

ईश्वर सब कुछ समझता है

अतिरिक्त किसी और सृष्टि को समझ सकने में असमर्थ है। खनिज पदार्थ पौधे की विकास शक्ति की कल्पना नहीं कर सकता। वृक्ष पशु की हरकत की शक्ति को नहीं समझ सकता, न ही वह यह समझ सकता है कि देखने, सुनने या सूँघने की शक्ति प्राप्त होने का क्या अर्थ है। ये सब शारीरिक सृष्टि से सम्बद्ध हैं।

इस सृष्टि में मनुष्य का भी हिस्सा है, परंतु मनुष्य के दिमाग में क्या हो रहा है यह समझ पाना दोनों निम्न जगत्‌ों के लिए संभव नहीं। पशु मानव की बुद्धि का अनुभव नहीं कर सकता, वह केवल वही जानता है जो उसकी पाशविक ज्ञानेन्द्रियों को अनुभव होता है, वह किसी निराकार वस्तु की कल्पना नहीं कर सकता। पशु यह नहीं जान सकता कि पृथ्वी गोलाकार है, कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है, या विद्युत तार यंत्र का निर्माण कैसे हुआ। केवल मनुष्य के लिए ही ये बातें संभव हैं। मानव सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट कृति है और सभी जीवों की तुलना में ईश्वर के निकटतम है।

सभी उच्च जगत निम्न जगत्‌ों की समझ से परे हैं, तो यह किस प्रकार संभव हो सकता है कि एक सृष्ट मनुष्य सर्वशक्तिमान सृष्टा को समझ सके?

वह जिसकी हम कल्पना करते हैं, ईश्वर की यथार्थता नहीं है। वह अज्ञेय तथा अविचारणीय है और मानव की सर्वोच्च कल्पना से भी बहुत ऊपर है।

अस्तित्व के सभी प्राणी दिव्य उदारता पर निर्भर हैं। दिव्य दया स्वयं जीवन ही प्रदान करती है। जैसे सूर्य का प्रकाश सारे विश्व पर चमकता है, उसी प्रकार असीम परमात्मा की दया सभी प्राणियों को प्राप्त होती है। जैसे सूर्य पृथ्वी के फलों को

ईश्वर सब कुछ समझता है

पकाता है और सभी प्राणियों को जीवन तथा उष्णता प्रदान करता है, उसी प्रकार सत्यता का सूर्य सभी आत्माओं पर चमकता है और दिव्य प्रेम तथा बोध के प्रकाश से ओतप्रोत करता है।

शेष सृष्टि पर मानव की श्रेष्ठता का अवलोकन पुनः इस बात में भी किया जा सकता है कि मनुष्य की आत्मा होती है जिसमें दिव्य आत्मा का वास होता है। निम्न जीवों की आत्माएँ अपने सार में निकृष्ट होती हैं।

अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि उत्पन्न किये गये सभी जीवों में से मानव ही प्रभु की प्रकृति के निकटतम है और इस कारण दिव्य उदारता के उपहार का अधिकतर भाग प्राप्त करता है।

खनिज जगत को अस्तित्व की शक्ति प्राप्त है। पौधे में अस्तित्व तथा विकास की शक्ति प्राप्त है। अस्तित्व तथा विकास के अतिरिक्त पशु में विचरण करने की तथा ज्ञानेन्द्रियों के प्रयोग की क्षमता प्राप्त है। मानव जगत में हम निम्न जगत्‌ओं के सभी गुण पाते हैं और उनके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ। मानव पिछली सारी सृष्टि का योगफल है क्योंकि वह उन सबको समाविष्ट किए हुए है।

मानव को बुद्धि का विशेष उपहार प्रदान किया गया है जिसके द्वारा वह दिव्य प्रकाश का बड़ा भाग प्राप्त कर सकने में समर्थ है। पूर्ण व्यक्ति निर्मल और पालिश किये हुए दर्पण के समान है जो सत्यता के सूर्य को प्रतिबिम्बित करता है और परमात्मा के गुणों को प्रत्यक्ष करता है।

ईसा मसीह ने कहा है, "जिसने मुझे देख लिया है उसने परम पिता को देख लिया है, ईश्वर को मानव में प्रकट हुए"।

ईश्वर सब कुछ समझता है

सूर्य आकाश में अपना स्थान छोड़ दर्पण में नहीं उतर आता क्योंकि चढ़ने और उतरने, आने और जाने के काम अपरिमित के नहीं बल्कि परिमित जीवों के तौर तरीके हैं। भली भांति पालिश किये गये दर्पण सरीखे ईश्वरावतार में दिव्य प्रभु के गुण ऐसे रूप में दिखाई देते हैं जिसे समझने में मानव समर्थ है।

यह इतना सुगम है कि हर कोई इसे समझ सकता है और वह जिसे हम समझ सकते हैं उसे हमें बाध्य होकर स्वीकार करना पड़ता है।

उन सिद्धान्तों को जिनमें या तो हमें विश्वास नहीं है या जिन्हें हम समझ नहीं सकते, अस्वीकार करने के लिए हमारा परम पिता हमें उत्तरदायी नहीं ठहरायेगा क्योंकि वह सदैव अनंत रूप से अपने बच्चों के प्रति न्यायपूर्ण है।

फिर भी यह उदाहरण इतना युक्तिसंगत है कि जो मन इस पर विचार करने को तैयार हैं वे इसे सुगमतापूर्वक समझ सकते हैं।

मेरी प्रार्थना है कि आप में से प्रत्येक एक प्रकाशपूर्ण दीप बने जिसकी ज्वाला प्रभु का प्रेम हो। आपके हृदय एकता के तेज से परिपूर्ण हों। आपके चक्षु सत्यता के सूर्य के प्रकाश से देदीप्यमान हो उठें।

पैरिस एक अत्यन्त सुन्दर नगर है। हर प्रकार के भौतिक विकास से सुसज्जित तथा अधिक सभ्य किसी अन्य नगर को वर्तमान संसार में ढूढ़ निकालना असंभव होगा। परंतु इस पर आध्यात्मिकता का प्रकाश अधिक समय से नहीं पड़ा है। भौतिक सभ्यता की तुलना में उसकी आध्यात्मिक उन्नति बहुत पिछड़ी हुई है। आध्यात्मिक सच्चाई की वास्तविकता के

ईश्वर सब कुछ समझता है

प्रति उसे जागरूक करने और उसकी निष्क्रिय आत्मा में जीवन का श्वास फूंकने के लिए एक महान शक्ति की आवश्यकता है। श्रेष्ठतम शक्ति की सहायता से उसे जागरूक करने और उसके लोगों को पुनर्जीवित करने के इस कार्य में आप सब अवश्य ही संगठित हों।

जब कोई रोग छोटा होता है तो थोड़े से इलाज से वह ठीक हो जाता है, परंतु जब वह छोटा सा रोग भयंकर रूप ले ले तो उसके लिए दिव्य चिकित्सक को निश्चय ही कड़े उपचार का प्रयोग करना पड़ता है। कुछ वृक्ष ऐसे होते हैं जो ठण्डे वातावरण में खिलते और फल देते हैं। अन्य ऐसे होते हैं जिन्हें पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने के लिए सूर्य की ज्यादा से ज्यादा गरम किरणों की जरूरत होती है। पेरिस एक ऐसा वृक्ष है जिसके आध्यत्मिक विकास के लिये प्रभु की दिव्य शक्ति के ज्वलंत सूर्य की आवश्यकता है।

मैं आप में से प्रत्येक से अनुरोध करता हूँ कि आप पवित्र शिक्षाओं की सत्यता के प्रकाश का भलीभाँति अनुसरण करें। ईश्वर आपको अपनी पवित्र आत्मा द्वारा शक्ति प्रदान करेगा जिससे आप कठिनाइयों पर काबू पा सकेंगे और उन पक्षपातों का उन्मूलन कर सकेंगे जो लोगों के बीच पृथक्ता और घृणा का कारण बनते हैं। आपके हृदय प्रभु के महान प्रेम से विभोर हो उठें और सब इसे अनुभव करें, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर का सेवक है और सबको दिव्य उदारता में भाग लेने का अधिकार है।

विशेषकर उन लोगों के प्रति जिनके विचार भौतिक तथा पतनशील हैं, अधिक से अधिक प्रेम तथा सहनशीलता दर्शाएं और इस प्रकार अपनी दया की दीप्ति द्वारा उन्हें

युद्ध के तुच्छ कारण

भ्रातृभाव की एकता में खींच लायें।

बिना डगमगाए यदि आप सत्यता के पावन सूर्य का अनुसरण करते हुए अपने महान कार्य के प्रति निष्ठावान हैं तो इस सुन्दर नगरी पर सार्वलौकिक भ्रातृभाव के पावन दिन का उदय होगा।

युद्ध के तुच्छ कारण

तथा शांति हेतु प्रयत्न करने का प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य

अक्टूबर 21

अब्दुल-बहा ने कहा:

मैं आशा करता हूँ कि आप सब प्रसन्न और अच्छे होंगे। मैं प्रसन्न नहीं अपितु बड़ा दुःखी हूँ। बैन गाजी के युद्ध के समाचार ने मेरे हृदय को कड़ी चोट पहुँचाई है। मैं मानव की पाशविकता पर हैरान हूँ जो अब भी संसार में मौजूद है। लोगों के लिये यह कैसे संभव है कि वे सुबह से लेकर शाम तक लड़ते रहें, एक दूसरे का वध करें और अपने सहमानवों का रक्त बहाएं। और फिर किस उद्देश्य से? भूमि के एक टुकड़े पर कब्जा करने के लिये! पशु भी जब आपस में लड़ते हैं तो उसके आक्रमण का भी कोई तात्कालिक तथा उचित कारण होता है। कितनी भयानक बात है कि मनुष्यों, जिनका संबंध उच्च जगत से है, का इतना पतन हो सकता है कि भूमि के टुकड़े पर कब्जे हेतु वे अपने सहमानवों को हताहत करें और मसीबतें लायें।

युद्ध के तुच्छ कारण

सृष्टि के जीवों में सर्वोत्कृष्ट प्राणी निम्नतम भौतिक तत्व, भूमि की प्राप्ति के लिए लड़ रहा है। भूमि किसी एक राष्ट्र के लोगों की नहीं बल्कि सभी लोगों की मलकियत है। यह पृथ्वी मनष्य का घर नहीं बल्कि उसकी कब्र है। ये लोग अपनी कब्रों के लिये लड़ रहे हैं। इस संसार में कब्र जैसी भयानक जगह कोई नहीं जो लोगों के गलते सड़ते शरीरों का वास है।

विजयी व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा हो, चाहे कितने ही देशों को वह गुलामी की जंजीरों में जकड़ दे, वह इन ध्वस्त देशों के किसी भाग को अपने कब्जे में नहीं रख सकता सिवाय एक छोटे से टुकड़े के—जो उसकी कब्र है। यदि लोगों की दशा को सुधारने, सभ्यता के फैलाव (पाशविक प्रथाओं का न्यायपूर्ण नियमों में बदलने) के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता हो तो निश्चय ही शांतिपूर्ण साधनों द्वारा क्षेत्र का आवश्यक विस्तार संभव हो सकेगा।

परन्तु युद्ध लोगों की महत्वकांक्षाओं की तृप्ति के लिये किया जाता है। चंद लोगों के सांसारिक लाभ के लिये असंख्य लोगों की भयानक दुर्दशा होती है और सैकड़ों स्त्री पुरुषों के हृदय शोकाकुल हो उठते हैं।

कितनी विधवायें अपने पतियों का शोक मनाती हैं, हिंसक निर्दयता की कितनी कथायें हम सुनते हैं। कितने छोटे-छोटे अनाथ बच्चे अपने मृत पिताओं के लिये क्रंदन कर रहे हैं, कितनी स्त्रियां अपने हताहत पुत्रों के लिए विलाप कर रही हैं।

मानव हिंसा के विस्फोट से बढ़कर भयंकर और हृदय विदारक और कोई वस्तु नहीं। मैं आप सब को इस बात का दायित्व सौंपता हूँ कि आप में से प्रत्येक अपने हृदय के सारे विचार प्रेम और एकता पर केन्द्रित करें। जब युद्ध का विचार

युद्ध के तुच्छ कारण

आये तो उसका सामना शांति के अधिक शाक्तिशाली विचार से करें। घृणा के विचार को निश्चय ही प्रेम के अधिक प्रबल विचार से ध्वस्त कर दिया जाये। युद्ध के विचार मैत्रीभाव, कल्याण, सुख चैन और तृप्ति का नाश करते हैं।

प्रेम के विचार भ्रातृभाव, शांति, मैत्री और प्रसन्नता को बढ़ावा देते हैं।

जब संसार के सैनिक हत्या के लिए अपनी तलवारें म्यान से खींच लेते हैं तो ईश्वर के सैनिक एक दूसरे का हाथ थाम लेते हैं ताकि शुद्ध हृदयियों तथा निष्कपट आत्माओं के माध्यम से काम करते हुए परमात्मा की दया से मनुष्य की सारी हिंसा लुप्त हो जाये। यह न सोचें कि विश्व शांति एक ऐसा आदर्श है जिसे पा सकना संभव नहीं।

ईश्वर की दिव्य परोपकारिता के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

यदि आप पूरे मन से पृथ्वी के प्रत्येक जाति के साथ मित्रता चाहते हैं तो आपके आध्यात्मिक तथा रचनात्मक विचारों का निश्चय ही प्रसार होगा। यह दूसरों की भी इच्छा बन जायेगी और निरन्तर दृढ़ होती जायेगी; यहाँ तक कि यह सभी मनुष्यों के मन पर छा जायेगी।

निराश न हों। दृढ़तापूर्वक काम करें। शुद्ध हृदयता और प्रेम घृणा पर विजयी होंगे। इन दिनों कैसी-कैसी असंभव प्रतीत होने वाली घटनायें घट रही हैं। अपने मुखों को विश्व के प्रकाश की ओर दृढ़तापूर्वक मोड़ो। सभी के प्रति प्रेम दर्शाओ, "प्रेम मानव हृदय में पवित्र आत्मा का श्वास है।" धैर्य रखो। ईश्वर अपने उन बच्चों का साथ भी कभी नहीं छोड़ता जो प्रयत्नशील, कार्यरत और प्रार्थना में लीन होते हैं।

सत्यता का सूर्य

आपके हृदय इस तीव्र इच्छा से भर जायें कि इस सारे युद्ध व्यस्त संसार को शांति और मैत्री भाव अपने पाश में ले लें। तब आपके यत्न फलीभूत होंगे और सार्वलौकिक भ्रातृभाव के साथ साथ शांति और सद्भाव के वातावरण में प्रभु के साम्राज्य का पदार्पण होगा।

आज इस कमरे में कई जातियों के सदस्य हैं, फ्रांसीसी, अमेरिकन, अंग्रेज, जर्मन, इटालियन भाई बहनें जो सद्भाव और मित्रता के साथ एकत्रित हुए हैं। यह सभा उसका पूर्वाभास दे। वस्तुतः इस संसार में शांति तब होगी जब ईश्वर का प्रत्येक बालक यह अनुभव करेगा कि वे एक ही वृक्ष के पत्ते, एक ही फुलवाड़ी के फूल, एक ही समुद्र की बूंदें, एक ही परमपिता के पुत्र-पुत्रियाँ हैं जिसका नाम प्रेम है।

सत्यता का सूर्य

अक्टूबर 22

अब्दुल-बहा ने कहा:

आज बड़ा सुन्दर दिन है, सूर्य पूरे तेज के साथ पृथ्वी पर चमक रहा है और सभी जीवों को ऊष्णता तथा प्रकाश प्रदान कर रहा है। सत्यता का सूर्य भी चमक रहा है और लोगों की आत्माओं को ऊष्णता तथा प्रकाश प्रदान कर रहा है। पृथ्वी पर सभी प्राणियों के पार्थिव शरीरों के लिये सूर्य जीवनदाता है, इसकी ऊष्णता के बिना उनका बढ़ना रुक जायेगा, उनका विकास रुक जायेगा, वे क्षीण हो जायेंगे और मर जायेंगे। इसी

सत्यता का सूर्य

प्रकार मनुष्यों की आत्माओं को भी सत्यता के सूर्य की आवश्यकता होती है जो उनकी आत्माओं पर अपनी किरणों की वृष्टि करे, उनका विकास करे, उन्हें शिक्षा और प्रोत्साहन दे। मानव शरीर के लिये जो कुछ सूर्य है, वही सत्यता का सूर्य आत्मा के लिये है।

कोई व्यक्ति चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति कर ले परंतु सत्यता के प्रकाश बिना उसकी आत्मा का विकास रुक जाता है और वह भूखों मरने लगती है। दूसरे व्यक्ति के पास चाहे भौतिक समृद्धि न हो और चाहे वह सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले सिरे पर हो परंतु सत्यता के सूर्य की गरमाहट की प्राप्ति से उसकी आत्मा महान बन जाती है और उसका आध्यात्मिक ज्ञान निखर जाता है।

ईसाई मत के शिखर के दिनों एक यूनानी दार्शनिक ने, जो ईसाई तत्वों से भरपूर था, यद्यपि वह ईसाई मत का अनुयायी नहीं था, इस प्रकार लिखा: "यह मेरा यकीन है कि धर्म ही सच्ची सभ्यता की नींव है"। क्योंकि जब तक किसी राष्ट्र के नैतिक चरित्र को न सुधारा जाये और उसके दिमाग और योग्यता का विकास न किया जाये तब तक सभ्यता का कोई निश्चित आधार नहीं होता।

चूँकि धर्म नैतिकता की शिक्षा देता है, इसलिए यह सच्चा दर्शनशास्त्र है और इसी पर केवल मात्र सुदृढ़ सभ्यता का निर्माण होता है। इसके उदाहरण के तौर पर, वह उस समय के ईसाइयों की ओर इशारा करता है जिनकी नैतिकता बहुत ऊँचे स्तर की थी। इस दार्शनिक का विश्वास सच्चाई के अनुरूप है क्योंकि ईसाइयों की सभ्यता संसार में सर्वोत्तम तथा प्रबुद्ध थी। ईसाई शिक्षा सत्यता के दिव्य सूर्य के प्रकाश से

सत्यता का सूर्य

युक्त थी, अतः इसके अनुयायियों को सिखलाया जाता था कि वे सब लोगों से भाइयों जैसा प्रेम करें और किसी से न डरें, यहाँ तक कि मौत से भी नहीं। अपने पड़ोसियों से ऐसा प्रेम करें जैसा कि वे स्वयं से करते हैं और मानवता की अधिकतम भलाई के लिये यत्न करते हुए स्वयं अपने स्वार्थों को भूल जायें। ईसा के धर्म का महान उद्देश्य सभी लोगों को प्रभु धर्म की देदीप्यमान सत्यता की ओर आकर्षित करना था।

यदि महात्मा ईसा के अनुयायी पूरी वफादारी के साथ इन नियमों का पालन करते रहे होते तो ईसाई संदेश के नवीकरण की कोई आवश्यकता न होती, उनके अनुयायियों को पुनः जागरूक करने की कोई आवश्यकता न होती, क्योंकि उस दशा में एक महान और तेजमय सभ्यता इस संसार पर राज्य कर रही होती और पृथ्वी पर स्वर्ग का साम्राज्य उतर आता।

परंतु इसके विरुद्ध हुआ क्या है! लोग अपने स्वामी के दिव्य प्रकाशयुक्त निर्देशों के अनुसरण से विमुख हो गये और उनके हृदय ठंडे पड़ गये। क्योंकि जैसे मानव शरीर जीवन के लिये सूर्य की किरणों पर निर्भर है, उसी प्रकार सत्यता के सूर्य की धूप के बिना आत्मा में दैवी सद्गुणों का विकास नहीं हो सकता।

ईश्वर अपने बच्चों को सुख चैन से वंचित नहीं रखता परंतु जब शीतकाल के अंधकार की छाया उनको घेर लेती है तो पुनः पावन बसंत के नवीकरण के साथ प्रभु अपने संदेशवाहकों, अपने अवतारों को भेजता है। संसार के क्षितिज पर सत्यता का सूर्य पुनः प्रकट हो सोने वालों की आँखों पर चमकता है और उन्हें नवप्रभाव के तेज का अवलोकन करने के लिए जगाता है। तब एक बार फिर मानवता का वृक्ष खिल

सत्यता का प्रकाश

उठता है और राष्ट्रों को रोगमुक्त करने के लिये धर्मपरायणता का फल देता है। क्योंकि मनुष्य ने ईश्वरीय विधान को भुलाकर सच्चाई की आवाज के प्रति अपने कान और पवित्र प्रकाश के प्रति अपने चक्षु बंद कर रखे हैं, इसलिये युद्ध और उपद्रवों, अशांति और संतप्ति ने पृथ्वी की बरबादी फैला दी है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप सब ईश्वर के प्रत्येक बालक को सत्यता के सूर्य के प्रकाश में लाने हेतु प्रयत्नशील हों ताकि इसके तेज की पैनी किरणों से अंधकार छिन्न-भिन्न हो जाये और शीत ऋतु की कठोरता तथा ठंडक इसकी धूप की दयापूर्ण गरमी से पिघल जाये।

सत्यता का प्रकाश अब पूर्व और पश्चिम पर चमक रहा है

सोमवार, अक्टूबर 23

जब कोई व्यक्ति किसी विशेष स्थान पर जीवन का आनंद पाता है तो और अधिक आनंद की प्राप्ति के लिये वह उस स्थान पर लौट आता है। जब कोई व्यक्ति किसी खान में सोना पा जाता है तो और अधिक सोना खोद निकालने के लिये वह पुनः उस खान में लौट आता है।

इससे उस आंतरिक शक्ति और प्राकृतिक प्रकृति का पता चलता है जो ईश्वर ने मनुष्य को दी है और उस महत्वपूर्ण उत्साह का भी उसके अंदर उत्पन्न होता है।

आध्यात्मिक ज्ञान पश्चिम ने सदैव पूर्व से प्राप्त किया है।

सत्यता का प्रकाश

प्रभु साम्राज्य का गीत पहले पूर्व में सुनाई देता है परन्तु पश्चिम में सुनने वालों को यह बहुत तेज आवाज में सुनाई देता है।

महात्मा ईसा एक चमकदार सितारे की भाँति पूर्वीय आकाश में उभरे परन्तु उनकी शिक्षा का प्रकाश पश्चिम में अधिक तीव्रता के साथ चमका जहाँ पर उनके प्रभाव की जड़ें ज्यादा मजबूती के साथ जम गई हैं और जहाँ पर अपनी जन्मभूमि की तुलना में उनका धर्म ज्यादा फैल गया है।

ईसा के गीत की प्रति ध्वनि पश्चिमी संसार के सभी देशों में गूँज गई है और इन लोगों के दिलों में घर कर गई है।

पश्चिम के लोग स्थिर स्वभाव के हैं और वे नीवें पत्थर की हैं जिन पर वे निर्माण करते हैं, वे दृढ़ निश्चयी हैं और आसानी से किसी बात को भूलते नहीं।

पश्चिम एक मजबूत और दृढ़ पौधे की भाँति है। इसके पोषण के लिये जब वर्षा हौले हौले गिरती है और सूर्य इस पर चमकता है तो यथासमय यह खिल उठता है और अच्छे फल देने लगता है। काफी समय से जब महात्मा ईसा द्वारा प्रतिबिम्बित सत्यता के सूर्य ने अपना प्रकाश पश्चिम पर डाला था, इसलिये उसे काफी समय हो गया है मुखारविन्द को मानव के पाप और लापरवाही ने ढाँप दिया है। परन्तु, ईश्वर का शक्र है कि पावन आत्मा अब फिर विश्व को संबोधित है। ईश्वरीय प्रकाश की ओर उन्मुख होने वाले सभी लोगों को आनंदित करने के लिये प्रेम, प्रबुद्धता तथा शान्ति का नक्षत्र एक बार फिर दिव्य क्षितिज से जगमगा उठा है। बहाउल्लाह ने पक्षपात और अंधविश्वास के उस पर्दे को छिन्न-भिन्न कर दिया है जिसने लोगों की आत्माओं का दम घोट रखा था।

सार्वलौकिक प्रेम

आइये उस ईश्वर से प्रार्थना करें कि पावनात्मा का श्वास एक बार फिर लोगों को आशा और ताजगी प्रदान करे और उनमें ईश्वर की इच्छा को पूर्ण करने की अभिलाषा उत्पन्न करे। प्रत्येक मानव की आत्मा और मन पुनर्जीवित हो ताकि नये जन्म में वे सब आनंद मना सकें।

तब मानवता प्रभु प्रेम के गौरव में एक नया परिधान धारण कर लेगी और वह एक नई सृष्टि का प्रभात होगा उस समय उस महानतम दयावान की दया की वृष्टि सारी मानव जाति पर होगी और वे एक नये जीवन में कदम रखेंगे।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि आप इस गौरवपूर्ण उद्देश्य के हेतु यत्नपूर्वक काम करें, नई आध्यात्मिक सभ्यता के निर्माण हेतु वफादार और प्रेम पूर्वक कार्यकर्त्ता बनें। "प्रभु के सर्वोच्च उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसके चुने हुए सदा तत्पर और आनंदपूर्ण आज्ञाकारी बनें"। वस्तुतः सफलता निकट ही है, क्योंकि दिव्यता का पताका फहरा दिया गया है और ईश्वर की धर्मपरायणता का सूर्य क्षितिज पर प्रकट हो गया है जिसे सभी लोग देख सकते हैं।

सार्वलौकिक प्रेम

अक्टूबर 24

एक भारतीय ने अब्दुलबहा से कहा:

"मेरे जीवन का उद्देश्य यह है कि जहाँ तक संभव हो मैं श्रीकृष्ण का संदेश संसार को दूँ"

अब्दुलबहा ने कहा: श्रीकृष्ण का संदेश प्रेम का संदेश है। प्रभु के सभी अवतार प्रेम का संदेश लाये हैं। किसी ने कभी

सार्वलौकिक प्रेम

यह सोचा भी नहीं कि युद्ध और घृणा अच्छे हैं। सभी यह कहने में एकमत हैं कि प्रेम और दया ही उत्तम हैं।

प्रेम अपनी वास्तविकता कर्मों में प्रकट करता है, केवल शब्दों में नहीं, केवल शब्दों का कोई प्रभाव नहीं होता। प्रेम द्वारा अपनी शक्ति को प्रत्यक्ष करने के लिये किसी उद्देश्य, किसी साधन या किसी अभिप्राय का होना अनिवार्य है।

प्रेम के नियम की अभिव्यक्ति के कई साधन हैं- परिवार के प्रति प्रेम, देश के लिये प्रेम, जाति प्रेम, राजनैतिक उत्साह और सेवा में हितों की समानता के प्रति प्रेम। ये सभी प्रेम की शक्ति को दर्शाने के तौर तरीके हैं। इस साधनों के बिना प्रेम अनदेखा, अनसुना और अछूता होगा - बिल्कुल अव्यक्त और अप्रत्यक्ष। जल कई प्रकार से अपनी शक्ति दिखाता है, प्यास को बुझा कर बीज को उगाकर आदि। कोयला अपने एक नियम की अभिव्यक्ति गैस के प्रकाश में करता है जबकि विद्युत की एक शक्ति बिजली के प्रकाश में दिखाई देती है। यदि न गैस होती और न बिजली तो संसार की रातें अंधकारपूर्ण होतीं। अतः प्रेम की प्रत्यक्षता के लिए किसी साधन, किसी अभिप्राय, किसी लक्ष्य और अभिव्यक्ति के साधन का होना अनिवार्य है।

मानवता के पुत्रों में प्रेम के प्रसार हेतु हमें अवश्य ही एक रास्ता ढूँढ निकालना चाहिए।

प्रेम असीम, अनंत और बंधन मुक्त होता है। भौतिक वस्तुएँ सीमित, संकुचित और परिमित होती हैं। सीमित साधनों द्वारा आप अनन्त प्रेम की भलीभाँति अभिव्यक्ति नहीं कर सकते।

संपूर्ण प्रेम को एक निःस्वार्थ साधन की आवश्यकता होती

सार्वलौकिक प्रेम

है जो हर प्रकार के बंधनों से मुक्त हो। परिवार प्रेम सीमित होता है, खून के रिश्ते का बंधन ही सबसे मजबूत बंधन नहीं होता। प्रायः एक ही परिवार के सदस्य आपस में असहमत होते हैं यहाँ तक कि वे एक दुसरे से घृणा करते हैं।

देश प्रेम परिमित है, किसी का अपने देश के प्रति प्रेम यदि अन्य सबके प्रति घृणा का कारण हो तो वह संपूर्ण प्रेम नहीं! एक देश के वासी भी आपसी झगड़ों से मुक्त नहीं होते।

जाति के प्रति प्रेम सीमित होता है, यहाँ पर कुछ एकरूपता है परंतु वह पर्याप्त नहीं। प्रेम अवश्य ही सभी सीमाओं से मुक्त हो।

स्वयं अपनी जाति के प्रति प्रेम का अर्थ अन्य सभी से घृणा हो सकता है और प्रायः एक ही जाति के लोग भी एक दूसरे को पसंद नहीं करते।

राजनैतिक प्रेम भी एक दल के प्रति दूसरे दल की घृणा से बुरी तरह जकड़ा हुआ है। यह प्रेम अति संकुचित और अनिश्चित है।

इसी प्रकार सेवा में हित की साझेदारी का प्रेम अस्थिर होता है, प्रायः प्रतिस्पर्धायें उत्पन्न हो जाती हैं जो ईर्ष्या का कारण बनती हैं और अन्ततः प्रेम का स्थान घृणा ले लेती है।

कुछ वर्ष पूर्व तुर्की और इटली में मैत्रीपूर्ण पूर्ण राजनैतिक समझौता था, अब वे आपस में युद्ध कर रहे हैं।

प्रेम के ये सभी बंधन अधरे हैं। यह प्रत्यक्ष है कि सार्वभौम प्रेम की पर्याप्त अभिव्यक्ति के लिये सीमित भौतिक बंधन अपर्याप्त हैं।

सार्वलौकिक प्रेम

मानवता के प्रति महान स्वार्थरहित प्रेम किसी भी अधूरे तथा अर्द्ध-स्वार्थी बंधन से बंधा हुआ नहीं होता। केवल यही एक ऐसा संपूर्ण प्रेम है जो सारी मानवजाति के लिए संभव है और जो केवल दिव्य आत्मा की शक्ति के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी सांसारिक शक्ति सार्वलौकिक प्रेम की प्राप्ति नहीं कर सकती।

प्रेम की इस दिव्य शक्ति में सब एक हो जाएँ। सत्य के सूर्य के प्रकाश में सभी विकास करने में प्रयत्नशील हों, और इस देदीप्यमान प्रेम को सभी लोगों पर प्रतिबिम्बित करते हुए उनके हृदय आपस में इतने जुड़ जायें कि वे सदा सर्वदा असीम प्रेम की काँति में जीवन यापन करें।

पैरिस में आप लोगों के बीच अपने अल्प समय के आवास के दौरान मैं जो आपसे कहता हूँ आप उन शब्दों को याद रखें। मेरी आपको हार्दिक नसीहत है कि आप अपने हृदयों को इस संसार की भौतिक वस्तुओं के बंधनों से न बंधने दें, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि भौतिकता के बंदी बन आप असावधानी की शैय्या पर संतोषपूर्वक न पड़े रहें बल्कि उठ खड़े हों और अपने आपको इसकी जंजीरों से मुक्त करा लें।

पशु जगत भौतिकता का बंदी है, मानव को ईश्वर ने स्वतंत्रता प्रदान की है। पशु प्रकृति के नियम से बच नहीं सकता जबकि मनुष्य इस पर नियंत्रण कर सकता है क्योंकि वह, प्रकृति को अपने में सम्मिलित करते हुए, इससे ऊपर उठ सकता है।

मनुष्य की बुद्धि को निखारकर दिव्य आत्मा की शक्ति ने उसे इस योग्य बना दिया है कि वह कई प्राकृतिक नियमों को

सार्वलौकिक प्रेम

अपनी इच्छानुसार ढालने के साधन ढूँढ सके। वह हवा में उड़ता है, समुद्र में तैरता है और यहाँ तक कि पानी के नीचे भी चलता है।

इन सबसे यह सिद्ध होता है कि किस प्रकार मानव बुद्धि को इस योग्य बनाया गया है कि वह अपने आपको प्रकृति के बंधनों से मुक्त कराए और उसके कई रहस्यों को खोले। किसी हद तक मनुष्य ने भौतिकता की जंजीरों को तोड़ दिया है।

दिव्य आत्मा मनुष्य को इन से भी अधिक शक्तियाँ प्रदान करेगी यदि वह केवल मात्र आत्मिक गुणों की प्राप्ति और अपने हृदय को दिव्य अपरिमित प्रेम के प्रति अनुकूल बनाने का यत्न करें।

जब आप अपने परिवार के किसी सदस्य या अपने देशवासी से प्रेम करें तो अपरिमित प्रेम के अंश के साथ प्रेम करें। प्रभु में और प्रभु के लिए ऐसा करें। जहाँ कहीं भी आप प्रभु के गुण पाएँ आप उस व्यक्ति से प्रेम करें चाहे वह आपके परिवार का हो या किसी अन्य परिवार का। अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक मानव पर असीम प्रेम का प्रकाश फैलायें चाहे वह आपके देश का हो, आपकी जाति का हो, आपके राजनैतिक दल का हो या किसी अन्य राष्ट्र, वर्ण, या राजनैतिक विचारधारा का। संसार के बिखरे हुए लोगों को एकता के सर्वशक्तिशाली तम्बू की छत्रछाया में एकत्रित करने के इस काम में आपके प्रयत्नों को दैवी सहायता प्राप्त होगी।

आप ईश्वर के ऐसे सेवक होंगे जिन्हें उसकी निकटता प्राप्त है, सेवा में प्रभु के दिव्य सहायक जो सारी मानवता की

सार्वलौकिक प्रेम

सेवा जुटे हुए हैं। समूची मानवता! प्रत्येक मानव, इस बात को कभी न भूलें।

यह न कहें कि वह इटली वासी, फ्रांसीसी, अमरीकी या कोई अंग्रेज है। केवल यह याद रखें कि वह ईश्वर का पुत्र है, उस सर्वोच्च प्रभु का सेवक एक मनुष्य है, सभी मनुष्य हैं। राष्ट्रीयताओं को भूल जाइये, ईश्वर की दृष्टि में सब बराबर हैं।

स्वयं अपने सीमाबंधनों का ध्यान न करें। ईश्वर की सहायता आपको प्राप्त होगी। अपने आपको भूल जाइये। प्रभु की सहायता निश्चय ही प्राप्त होगी।

जब आप अपनी सहायता के लिये प्रभु की दया की याचना करेंगे तो आपकी शक्ति दसगुना बढ़ जाएगी।

मेरी ओर देखिये: मैं कितना दुर्बल हूँ, फिर भी मुझे आपके बीच आने की शक्ति मिली, ईश्वर का एक तुच्छ सेवक, जिसे आपको यह संदेश देने के योग्य बनाया गया है। मैं अधिक समय तक आपके साथ नहीं रहूँगा। किसी व्यक्ति को स्वयं अपनी दुर्बलता पर कभी ध्यान नहीं देना चाहिये। यह प्रेम की दिव्य आत्मा की शक्ति ही है जो प्रशिक्षण हेतु बल देती है। हमारी अपनी दुर्बलता का विचार केवल मात्र निराशा ला सकता है। हम निश्चय ही सभी सांसारिक विचारों से ऊपर उठकर सोचें, प्रत्येक भौतिक विचार से अपने आपको अलग कर लें, आत्मिक वस्तुओं की आकांक्षा करें, अपनी दृष्टि को सर्वशक्तिमान प्रभु की अनंत कृपापूर्ण दया पर केन्द्रित करें जो हमारी आत्माओं को अपनी आज्ञा "एक दूसरे से प्रेम करो" की आनंदपूर्ण सेवा को प्रसन्नता से भर देगा।

अब्दुल-बहा का कारावास

4, एवेन्यू डि केमोइन्स
बुधवार, अक्टूबर 25

मुझे बड़ा खेद है कि आज प्रातः मैंने आपको प्रतीक्षा में रखा परंतु प्रभु प्रेम के प्रयोजन हेतु अल्प समय में मुझे बहुत काम करना है।

मुझे आशा है कि मुझसे मिलने के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करना आपको अखरा नहीं होगा। मैंने कारावास में वर्षों इंतजार किया है कि कब आकर मैं आप लोगों से मिलूँ।

ईश्वर की स्तुति हो, सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे हृदय एक स्वर हैं और एक ही उद्देश्य से प्रभु प्रेम की ओर आकर्षित हैं। प्रभु साम्राज्य की कृपा से क्या हमारी इच्छायें, हमारे हृदय, हमारे उत्साह एक ही बंधन में संगठित नहीं? क्या हमारी प्रार्थनायें सभी लोगों को मैत्रीभाव से एक स्थान पर एकत्रित करने के लिये नहीं? अतः क्या हम सदा एक साथ नहीं?

कल शाम जब मैं श्री मूस्योर के मकान से घर लौटा तो मैं बहुत थका हुआ था फिर भी मैं सोया नहीं बल्कि शय्या पर

अब्दुल-बहा का कारावास

पड़ा जागता और सोचता रहा।

मैने कहा, हे भगवान! मैं यहाँ अब पैरिस में हूँ। पैरिस क्या है और मैं कौन हूँ? मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मैं कभी अपने कारावास के अंधकार से निकलकर आप लोगों से आकर मिल सकूँगा यद्यपि जब उन्होंने मुझे मेरी सज़ा सुनाई तो मैंने उस पर विश्वास नहीं किया।

उन्होंने मुझे बताया कि सुल्तान अब्दुल हमीद ने मेरे आजन्म कारावास की आज्ञा दी है और मैने कहा, "यह असंभव है। मैं सदा ही बंदी नहीं रहूँगा। यदि अब्दुल हमीद अमर होता तो शायद ऐसे दण्ड का पूरा होना संभव होता। यह निश्चित है कि एक दिन मैं स्वतंत्र होऊँगा। हो सकता है कि मेरा शरीर कुछ समय के लिये बंदी बने, परन्तु अब्दुल हमीद को मेरी आत्मा पर कोई अधिकार नहीं—निस्सन्देह यह स्वतंत्र रहेगी—उसको कोई व्यक्ति बंदी नहीं बना सकता।"

प्रभु शक्ति द्वारा कारावास से मुक्त होकर मैं अब यहाँ पर प्रभु के मित्रों से मिलता हूँ और उस प्रभु का आभारी हूँ।

आइये हम प्रभु धर्म का प्रसार करें, जिसके लिये मैंने अत्याचार सहे।

हमारे लिये कितने सौभाग्य की बात है कि हम यहाँ पर स्वतंत्रतापूर्वक मिल रहे हैं। हमारे लिये कितनी प्रसन्नता का विषय है कि प्रभु की आज्ञा से हम प्रभु साम्राज्य की स्थापना हेतु मिलकर काम कर रहे हैं।

क्या आप एक ऐसे अतिथि को पाकर प्रसन्न हैं जो एक गौरवशाली संदेश आपको पहुँचाने के लिये कारावास से मुक्त हुआ है? वह, जो कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसी गोष्ठी संभव हो सकेगी! प्रभु की कृपा और उसकी अद्भुत

प्रभु का महानतम उपहार

शक्ति से अब मैं, जिसे पूर्व के एक दरवर्ती नगर में निरन्तर कारावास का दण्ड दिया गया था, यहाँ पैरिस में आप लोगों के साथ बातचीत कर रहा हूँ।

अब से हम लोग हृदय, आत्मा और उत्साह के साथ सदा एक साथ रहकर तब तक काम में जुटे रहेंगे जब तक कि सारे लोग शान्ति का गीत गाते हुए प्रभु साम्राज्य के शिविर की छत्रछाया में इकट्ठे नहीं हो जाते।

मनुष्य को प्रभु का महानतम उपहार

वृहस्पतिवार, अक्टूबर 26

मनुष्य को ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार उसकी बुद्धि या विवेक है।

विवेक वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य सृष्टि के कई जगत्‌ओं का, अस्तित्व के भिन्न चरणों का तथा अदृश्य जगत्‌ के बहुत बड़े भाग का ज्ञान प्राप्त करता है।

यह उपहार पाकर वह स्वयं पूर्व रचनाओं का सार है—वह उन जगत्‌ओं के साथ संपर्क कर सकता है और इस उपहार द्वारा अपने वैज्ञानिक ज्ञान से वह प्रायः भविष्य सूचक दृष्टि की प्राप्ति कर सकता है।

वास्तव में बुद्धि वह सबसे अधिक मूल्यवान् उपहार है जो दिव्य कृपा ने मनुष्य को प्रदान किया है। सारी सृष्टि में केवल मनुष्य को ही यह अद्भुत शक्ति प्राप्त है।

मनुष्य से पूर्व की सारी सृष्टि प्रकृति के कठोर नियम से बँधी हुई है। महान सूर्य, तारागण, सागर और समुद्र, पहाड़,

प्रभु का महानतम उपहार

नदियाँ, वृक्ष, छोटे बड़े सभी प्रकार के पशु-कोई भी प्रकृति के नियम का उल्लंघन कर सकने में समर्थ नहीं।

केवल मनुष्य को ही स्वतंत्रता प्राप्त है तथा अपने विवेक अथवा बुद्धि द्वारा वह उन प्राकृतिक नियमों में से कुछ एक पर नियंत्रण पा सका है और उन्हें अपनी आवश्यकतानुसार ढाल सका है। अपनी बुद्धि की शक्ति द्वारा उसने ऐसे साधन खोज निकाले हैं जिनके द्वारा वह न केवल तेज़ रफ़्तार रेल गाड़ियों से विस्तृत महाद्वीपों तथा जलपोतों से वृहद समुद्रों को पार करता है बल्कि मछली की भाँति वह पनडुब्बियों में जल के नीचे सफर करता है और पक्षियों की नकल करता हुआ हवाई जहाजों द्वारा हवा में उड़ता है।

मनुष्य विद्युत को भिन्न प्रकार से प्रयोग करने में सफल हुआ है—जैसे कि प्रकाश, प्रेरक बल, पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक संदेश भेजने के लिये—और विद्युत द्वारा वह मीलों दूर की आवाज़ को भी सुन सकता है।

विवेक अथवा बुद्धि के इस उपहार द्वारा वह इस योग्य भी बन गया है कि सूर्य की किरणों का उपयोग कर वह लोगों तथा वस्तुओं के चित्र खींच सके और यहां तक कि सुदूर स्थित नक्षत्र मण्डल की आकृति का भी चित्रण कर सके।

हम देखते हैं कि कितने असंख्य तरीकों से मनुष्य प्रकृति की शक्तियों को अपनी इच्छानुसार ढालने में सफल हो गया है।

यह देखकर कितना दुःख होता है कि किस प्रकार मनुष्य ने इस प्रभु प्रदत्त उपहार का प्रयोग युद्ध के हथियार बनाने, ईश्वरीय आज्ञा कि "तुम हत्या नहीं करोगे" को तोड़ने और ईसा की आज्ञा "एक दूसरे से प्रेम करो" का उल्लंघन करने में किया है।

बादल

प्रभु ने यह शक्ति मनुष्य को इस लिये दी कि वह इसका प्रयोग सभ्यता के विकास, मानवता की भलाई, प्रेम, मैत्री और शांति को बढ़ावा देने के लिये करे। परंतु मनुष्य इसका प्रयोग निर्माण की बजाय ध्वंस, अन्याय तथा अत्याचार, घृणा, कलह, सर्वनाश तथा अपने सहमानवों के नाश के लिए ज्यादा पसंद करता है जिनके बारे में ईसा ने आज्ञा दी थी कि वह उन से ऐसा प्रेम करे जैसा वह अपने आप से करता है।

मुझे आशा है कि आप अपनी सूझबूझ को मानव मात्र की एकता, शांति को बढ़ावा देने, लोगों को ज्ञान और सभ्यता देने, अपने आस पास प्रेम उत्पन्न करने और विश्व शांति की स्थापना हेतु प्रयोग करेंगे।

विज्ञानों का अध्ययन कीजिए, अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित कीजिए। निश्चित रूप से मनुष्य को जीवनपर्यन्त शिक्षा ग्रहण करते रहना चाहिए। अपने ज्ञान को सदा दूसरे की भलाई के लिये इस्तेमाल करें, ताकि इस सुन्दर पृथ्वी की सतह से युद्ध समाप्त हो जाये तथा शांति और मैत्री के गौरवशाली भवन का निर्माण हो सके। यत्न कीजिए कि आपके उच्च आदर्श की प्राप्ति पृथ्वी पर प्रभु के साम्राज्य के रूप में हो जाये जैसा कि स्वर्ग में होगा।

सत्य के सूर्य को छुपाने वाले बादल

4 एवेन्यु डि केमोइन्स

शुक्रवार, प्रातः, अक्टूबर 27

आज का दिन बहुत सुन्दर है, वायु शुद्ध है, सूर्य चमक रहा

बादल

है, न धुंध है और न बादल जो इसके तेज को छुपायें।

जैसे ये दमकती हुई किरणें नगर के सभी भागों में प्रवेश कर रही हैं, उसी प्रकार सत्यता का सूर्य मनुष्यों के मन को जगमगाये।

ईसा ने कहा, "वे मानव पुत्र को स्वर्ग के बादलों पर सवार आता देखेंगे" बहाउल्लाह ने कहा, "जब ईसा पहली बार आये, तो वे बादलों पर सवार आये" ईसा ने कहा कि वे आकाश से, स्वर्ग से आये हैं, कि वे प्रभु की ओर से आये हैं, जबकि वे अपनी माता, मेरी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। परन्तु जब उन्होंने घोषणा की कि वे स्वर्ग से आये हैं तो यह प्रत्यक्ष है कि उनका अर्थ नीला आकाश नहीं था। बल्कि वे प्रभु के साम्राज्य के स्वर्ग की बात कर रहे थे और यह कि वे उस स्वर्ग से बादलों पर उतरे थे। जैसे बादल सूर्य के प्रकाश की राह में बाधा होते हैं, इसी प्रकार मानवता के संसार के बादलों ने मनुष्यों की आँखों से मसीह की दिव्यता के तेज को छुपा लिया था।

लोगों ने कहा कि "वह नजारेथ का वासी है, मेरी का पुत्र है, हम उसे जानते हैं और उसके सगे संबंधियों को भी जानते हैं। उसके कहने का क्या अर्थ हो सकता है? वह क्या कह रहा है कि वह ईश्वर की ओर से आया है?"

मसीह का शरीर नजारेथ की माता मेरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था परन्तु आत्मा ईश्वर की थी। उनके मानव शरीर की क्षमताएं सीमित थीं। परन्तु उनकी आत्मा की शक्ति विस्तृत, असीम तथा अथाह थी।

लोग पूछते, "वह क्यों कहता है कि वह ईश्वर की ओर से है?" यदि वे मसीह की वास्तविकता को समझ पाये होते तो वे

बादल

जान जाते कि उनका मानव शरीर एक बादल था जिसने उनकी दिव्यता को छुपा रखा था। संसार ने केवल उनकी मानव आकृति को देखा और इसलिये अचम्भा करने लगे कि किस प्रकार वे "स्वर्ग से उतर सके।"

बहाउल्लाह ने कहा "जिस प्रकार बादल आकाश तथा सूर्य को हमारी नज़रों से ओझल कर देते हैं, उसी प्रकार मसीह की मानव आकृति ने लोगों से उनके वास्तविक दिव्य आचरण को छुपा दिया"।

मुझे आशा है कि पृथ्वी की वस्तुओं को न देखते हुए आप अपनी निर्मल दृष्टि सत्यता के सूर्य पर केन्द्रित करेंगे, न कि पृथ्वी की वस्तुओं पर ताकि ऐसा न हो कि आपके हृदय संसार के क्षणभंगुर और बेकार भोग विलासों की ओर आकर्षित हो जायें। उस दिव्य सूर्य की अपनी शक्ति आपको प्रदान कर दें, तब पक्षपात के बादल उसकी दीप्ति को आपकी दृष्टि से छुपा न सकेंगे। तब सूर्य आपके लिये बादलों के आवरण से मुक्त होगा।

शुद्धता की वायु में सांस लें। मेरी प्रार्थना है कि आप में से प्रत्येक और सब स्वर्ग के साम्राज्य की दिव्य कृपाओं में से भाग ग्रहण करें। आपके लिये संसार ऐसी बाधा न बने जो सत्य को आपकी निगाहों से ओझल करे, जैसे कि मसीह के मानव शरीर ने उनके समय के लोगों से उनकी दिव्यता को छुपाया। आपको पवित्र आत्मा की निर्मल दृष्टि प्राप्त हो ताकि आपके हृदय देदीप्यमान हों और सभी भौतिक बादलों के बीच चमकते हुए सत्यता के सूर्य और ब्रह्माण्ड में फैली उसकी भव्यता को आप पहचान सकें।

शारीरिक वस्तुओं को आत्मा के दैवी प्रकाश को छुपाने न

धार्मिक पक्षपात

देन ताकि दैवी कृपा से आप ईश्वर के बालकों के साथ उसके अनंत साम्राज्य में प्रवेश कर सकें।

आप सबके लिए यही मेरी प्रार्थना है।

* सैन्ट मैथ्यू x x iv 30

* सैन्ट मैथ्यू x vi 27

* सैन्ट जान iii, 13

धार्मिक पक्षपात

अक्टूबर 27

बहाउल्लाह की शिक्षा का आधार मानवमात्र की एकता है और उनकी यह उत्कृष्ट इच्छा थी कि लोगों के हृदय में प्रेम तथा सद्भाव का संचार हो। चूँकि उन्होंने लोगों को कलह तथा मतभेद को त्यागने का उपदेश दिया था अतः मैं आप के लिये राष्ट्रों के बीच अशांति के मुख्य कारणों की व्याख्या करना चाहता हूँ। मुख्य कारण है धर्मगुरुओं तथा नेताओं द्वारा धर्म की मिथ्या परिभाषा। वे अपने अनुयायियों को इस बात का विश्वास करना सिखाते हैं कि स्वयं उनका धर्म ही केवल मात्र ऐसा है जो प्रभु को अच्छा लगता है तथा किसी अन्य धर्म के अनुयायियों की उस उच्च सर्व प्रेममय पिता द्वारा निन्दा की जाती है और उन्हें उसकी दया तथा कृपा से वंचित रखा जाता है। अतः लोगों के बीच अस्वीकृत झगड़े, घृणा तथा तिरस्कार उत्पन्न हो जाते हैं। यदि इन धार्मिक पक्षपातों का उन्मूलन किया जा सके तो शीघ्र ही राष्ट्र शांति तथा सहमति का आनंद उठा सकेंगे।

धार्मिक पक्षपात

एक बार मैं तिबेरियस में था जहाँ पर यहूदियों का मंदिर है। मैं मंदिर के बिल्कुल सामने एक मकान में रहता था और वहाँ पर मैंने एक रब्बी को यहूदी भक्तजनों को सम्बोधित करते देखा और सुना। वह इस प्रकार बोला:

"हे यहूदियो, वास्तव में तुम ईश्वर के लोग हो! अन्य सभी जातियाँ और धर्म शैतान के हैं। ईश्वर ने तुम्हें अब्राहम के वंशजों के रूप में उत्पन्न किया है और उसने तुम पर अपने आशीर्वादों की वृष्टि की है। प्रभु ने मूसा, जैकब और जोज़िफ तथा कई अन्य महान अवतारों को तुम लोगों के बीच भेजा। ये सभी अवतार तुम्हारी जाति से थे।

"तुम्हारे लिये ही ईश्वर ने पिराउन की शक्ति को कुचला और लालसागर को सुखा दिया, तुम्हारे भोजन के लिये उसने स्वर्ग से मन्ना भी भेजा और पथरीली जमीन से जल निकाल कर तुम्हें अपनी प्यास बुझाने के लिये दिया। निश्चय ही तुम ईश्वर के चुने हुए लोग हो, तुम धरती की अन्य सभी जातियों से ऊँचे हो! अतः अन्य सभी जातियाँ ईश्वर के सम्मुख घृणित हैं और उसके द्वारा निन्दित हैं। वास्तव में तुम विश्व पर राज्य करोगे और उसे झुकाओगे और सभी लोग तुम्हारे दास बन जाएँगे।"

"उन लोगों के साथ घुलमिलकर जो स्वयं तुम्हारे अपने धर्म के नहीं, अपने आपको गंदा मत करो। ऐसे लोगों के साथ मित्रता मत करो।"

जब रब्बी का वाकपटु व्याख्यान समाप्त हुआ तो उसके श्रोताओं के हृदय उल्लास और संतोष से गद्गद थे। आप से उनकी प्रसन्नता की व्याख्या करना असंभव है।

अफसोस! ऐसे पथभ्रष्ट लोग ही धरती पर बंटवारे और

धार्मिक पक्षपात

घृणा का कारण बनते हैं। आज भी लाखों ऐसे लोग हैं जो अभी भी मूर्ति पूजा करते हैं और संसार के महान धर्म आपसी युद्धों में व्यस्त हैं। 1300 वर्षों से ईसाई और मुसलमान आपस में झगड़ रहे हैं जबकि बहुत थोड़े यत्न से ही उनके मतभेदों और झगड़ों को निबटाया जा सकता है और उनके बीच शान्ति और मैत्रीभाव की स्थापना हो सकती है और संसार चैन की सांस ले सकता है।

कुरान में हम पढ़ते हैं कि हजरत मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को यह कह कर सम्बोधित किया:

“आप लोग ईसा और इंजील में विश्वास क्यों नहीं करते? आप मूसा तथा अवतारों को स्वीकार क्यों नहीं करते, क्योंकि निश्चय ही बाइबल ईश्वर का ग्रंथ है? वास्तव में मूसा एक उत्कृष्ट अवतार थे और मसीह दिव्य आत्मा से भरपूर थे। वे प्रभु की शक्ति द्वारा संसार में आये, दिव्य आत्मा तथा पवित्र कुंवारी मेरी से उत्पन्न हुए। उनकी माता मेरी स्वर्ग की एक साध्वी थीं। वे अपने दिन मंदिर में प्रार्थना करने में व्यतीत करती थीं और उसका भोजन उन्हें ऊपर (स्वर्ग) से भेजा जाता था। उसका पिता ज़करियास उसके पास आया और उससे पछा कि खाना कहाँ से आता है, तो मेरी ने जबाव दिया “स्वर्ग से” निश्चय ही ईश्वर ने मेरी को अन्य सभी स्त्रियों से श्रेष्ठ बनाया था।”

यह है वह जो हजरत मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को ईसा और मूसा के बारे में सिखाया और इन महान शिक्षकों में विश्वास की कमी के लिये उनकी भर्त्सना की और उन्हें सचाई और सहनशीलता के पाठ पढ़ाये। ईश्वर ने हजरत मोहम्मद को ऐसे लोगों के बीच काम करने के लिये भेजा जो

धार्मिक पक्षपात

जंगली जानवरों की भाँति असभ्य तथा हिंसक थे। वे सूझबूझ से बिलकुल कोरे थे और न ही उनमें प्रेम, सहानुभूति और दया की भावना थी। स्त्रियाँ इतनी अपमानित और तिरस्कृत थीं कि कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को जीवित जमीन में गाड़ सकता था और दासियों के रूप में जितनी चाहे पत्नियाँ रख सकता था।

अपने दिव्य संदेश के साथ हज़रत मोहम्मद को ऐसे अर्द्ध-पशु लोगों के बीच भेजा गया। उन्होंने लोगों को बताया कि मूर्तिपूजा ठीक नहीं बल्कि वे मूसा, ईसा तथा अन्य अवतारों का आदर करें। उनके प्रभाव से वे लोग अधिक ज्ञानवान तथा सभ्य हो गये और इस अपमानजनक स्थिति से, जिसमें उन्होंने उन्हें पाया था, ऊपर उठ गये। क्या यह एक अच्छा काम नहीं था, जो प्रशंसा, आदर तथा प्यार के योग्य हो?

महात्मा ईसा की इंजील का अवलोकन कीजिये और देखिये कि यह कितनी श्रेष्ठ है। फिर भी आज भी लोग इसके अमूल्य सौन्दर्य को समझ सकने में असफल हैं और इसके विद्वतापूर्ण शब्दों का गलत अर्थ निकालते हैं।

ईसा ने युद्ध की मनाही की! जब उनके शिष्य पीटर ने अपने स्वामी को बचाने के बारे में सोचते हुए उच्च पुजारी के सेवक का कान काट डाला तो ईसा ने उस से यूँ कहाँ "अपनी तलवार को म्यान में डालो"। फिर भी उस स्वामी की, जिसकी सेवा करने का वे दावा करते हैं, स्पष्ट आज्ञा के बावजूद लोग आपस में झगड़ते हैं, युद्ध करते हैं, एक दूसरे का हनन करते हैं और ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसकी शिक्षा और परामर्श को भुला दिया गया हो।

धार्मिक पक्षपात

परंतु केवल इस लिये अनुयायियों के दुष्कार्यों का दोष उन अवतारों व महापुरुषों को न दीजिये। यदि पुजारी, शिक्षक और लोग ही उस धर्म के विपरीत जीवन व्यतीत करें जिसके अनुसरण का वे दावा करते हैं, तो क्या यह ईसा मसीह या अन्य दैवी शिक्षकों की गलती है?

इस्लाम के अनुयायियों को यह शिक्षा दी गई कि किस प्रकार ईसा प्रभु की ओर से आये और पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुए तथा लोगों में सबसे ज्यादा श्रेष्ठता उन्हें दी जाए। मूसा ईश्वर के अवतार थे और अपने युग में तथा उन लोगों के लिये जिनके बीच उन्हें भेजा गया था। उन्होंने प्रभु के पावन ग्रंथ को प्रकट किया।

हज़रत मोहम्मद ने ईसा की उत्कृष्ट महिमा तथा मूसा और अन्य अवतारों की महानता को पहचाना। यदि सारा विश्व हज़रत मोहम्मद तथा अन्य सभी दिव्य शिक्षकों की महानता को स्वीकार कर ले तो असहमति और कलह शीघ्र ही धरती से लुप्त हो जाएँगे और लोगों में ईश्वर का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा।

ईसा का गुणगान करने से इस्लाम के अनुयायियों की प्रतिष्ठा नष्ट नहीं होती है।

ईसा ईसाइयों के अवतार थे, मूसा यहूदियों के—प्रत्येक अवतार के अनुयायी दूसरे अवतार को भी स्वीकार कर उसका आदर क्यों न करें! यदि लोग मात्र आपसी सहनशीलता, मैत्रीभाव तथा भ्रातृ तुल्य प्रेम का पाठ सीख सकें तो विश्व की एकता शीघ्र ही एक निश्चित तथ्य बन जायेगी।

बहाउल्लाह ने अपना सारा जीवन प्रेम तथा एकता के इस पाठ को पढ़ाने में व्यतीत कर दिया। अतः आइये हर प्रकार की

ईश्वर के वरदान

असहनशीलता तथा पक्षपात से अपने आपको विशुद्ध कर हम पूरे तन मन से ईसाइयों और मुसलमानों के बीच सद्भावना एवं एकता लाने हेतु प्रयत्न करें।

मनुष्य को ईश्वर के वरदान

4 एवेन्यू डि केमोइन्स
अक्तूबर 27

केवल ईश्वर ही सभी बातों की आज्ञा देता है और सर्वशक्तिमान है। तो फिर वह अपने सेवकों पर कठिनाइयाँ क्यों भेजता है?

मनुष्य की कठिनाइयाँ दो प्रकार की होती हैं। (क) उसके स्वयं अपने कर्मों का फल। यदि कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा खाता है तो वह अपनी पाचन शक्ति को बिगाड़ लेता है; यदि वह विषपान करता है तो बीमार हो जाता है या मर जाता है। यदि कोई व्यक्ति जुआ खेलता है तो वह अपना रुपया पैसा हार जाता है; यदि वह अधिक मात्रा में मदिरा का सेवन करता है तो वह अपना संतुलन खो बैठता है। ये सारे दुःख स्वयं मनुष्य के अपने पैदा किये हुए हैं, अतः यह प्रत्यक्ष है कि कुछ व्यथाएँ स्वयं हमारी अपनी करनी का फल हैं।

(ख) और भी कष्ट हैं जो ईश्वर भक्तों के सम्मुख आते हैं। उन महान कष्टों का विचार कीजिए जो ईसा तथा उनके पट्टशिष्यों को सहन करने पड़े।

जो जितना ज्यादा दुःख उठाते हैं वे उतनी ही ज्यादा संपूर्णता प्राप्त करते हैं।

ईश्वर के वरदान

वे लोग जो ईसा के लिए अधिक से अधिक कष्ट झेलने की इच्छा प्रकट करते हैं, वे अवश्य ही अपनी निष्ठा का प्रमाण दें। वे जो महान बलिदान देने की अपनी तीव्र इच्छा की घोषणा करते हैं, अपनी सच्चाई को केवल अपने कर्मों द्वारा ही सिद्ध कर सकते हैं। जोब ने अपने प्रभु प्रेम की सच्चाई को अपनी महान विपत्ति तथा अपने जीवन को समृद्ध समय के दौरान भी वफादार रहकर सिद्ध किया। ईसा के पटुशिष्य जिन्होंने दृढ़तापूर्वक सभी कष्टों तथा दुःखों को सहन किया—क्या उन्होंने अपनी निष्ठा का प्रमाण नहीं दिया? क्या उनकी सहनशीलता सर्वोत्तम प्रमाण नहीं थी?

ये सारे दुःख अब समाप्त हो चुके हैं।

कैयाफास सुखपूर्ण तथा आनंदमय जीवन व्यतीत करता था जबकि पीटर का जीवन दुखों और कष्टों से भरा हुआ था। इन दोनों में से कौनसा अधिक वांछनीय है? निस्सन्देह हम पीटर की वर्तमान स्थिति को चुनेंगे क्योंकि उसे अमर जीवन प्राप्त है जबकि कैयाफास को अनंत अपमान (कलंक) मिला है। पीटर के कष्टों ने उसकी वफादारी को परखा। परीक्षाएँ ईश्वर के वरदान हैं जिनके लिए हमें उसका आभारी होना चाहिए। दुःख और कष्ट संयोगवश नहीं आते, हमारी अपनी सम्पूर्णता के लिये दिव्य दया द्वारा वे हम पर भेजे जाते हैं।

प्रसन्नता की स्थिति में मनुष्य अपने ईश्वर को भूल सकता है, परंतु जब कष्ट आते हैं और दुःख उसे घेर लेते हैं तब वह उस परम पिता को याद करता है जो स्वर्ग में है और जो उसको उसके दुःखों से छुटकारा दिला सकता है।

जो लोग कष्ट नहीं उठाते वे सम्पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते। माली जिस पौधे की अधिक कांटछांट करता है,

विविधता में सौन्दर्य

ग्रीष्मऋतु आने पर वह पौधा बड़ी अच्छी तरह से फलता-फूलता है और प्रचुर मात्रा में फल देता है।

मजदूर अपने हल से धरती का सीना चीरता है और उस धरती से समृद्ध और प्रचुर मात्रा में फसल प्राप्त होती है। मनुष्य जितना अधिक अनुशासित होगा उतना ही ज्यादा आध्यात्मिक गुणों की फसल को वह दर्शाएगा। एक सैनिक कुशल सेनापति नहीं बन सकता जब तक कि वह भीषण युद्ध में भाग नहीं लेता और गहरे जख्म नहीं खाता।

ईश्वर अवतारों की प्रार्थना सदा यह रही है और अब भी है: हे प्रभु, मैं तेरी राह में अपने जीवन की बलि देने का इच्छुक हूँ। मैं तेरे लिए अपना रक्त बहाना चाहता हूँ तथा सर्वोच्च बलिदान करना चाहता हूँ।

विविधता में सौन्दर्य और समन्वय

अक्तूबर 28

सभी का सृष्टा वही एक परमात्मा है।

उसी एक परमात्मा से सारी सृष्टि अस्तित्व में आई और वही एक ऐसा लक्ष्य है जिसकी आकांक्षा प्रकृति की प्रत्येक वस्तु करती है। यही कल्पना ईसा के शब्दों में विद्यमान थी जब उन्होंने कहा "मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा—आरम्भ और अंत"। मानव सृष्टि का योगफल है और संपूर्ण मानव स्रष्टा के पूर्ण विचार की अभिव्यक्ति-ईश्वर का शब्द।

उत्पन्न किये गये जीवों के संसार का विचार कीजिए, वे

विविधता में सौन्दर्य

कितने भिन्न और विविध प्रकार के हैं, फिर भी उनका मूल केवल मात्र एक है। जितनी भी भिन्नताएँ दिखाई देती हैं वे केवल बाहरी आकार और वर्ण की होती हैं। किस्मों की यह विविधता सारी की सारी प्रकृति में प्रत्यक्ष है।

फूलों, पौधों और वृक्षों से भरे एक सुन्दर उद्यान का ध्यान कीजिये। प्रत्येक फूल का भिन्न आकर्षण है, विशेष सौन्दर्य है, उसकी अपनी प्यारी सुगंध और सुन्दर रंग है। वृक्ष भी आकार में, विकास में, फूल पत्तियों आदि में कितने भिन्न हैं, और कितने विविध प्रकार के फल उन पर लगते हैं। फिर भी ये सभी फूल पौधे उसी एक ही मिट्टी से उत्पन्न होते हैं, वही एक सूर्य उन पर चमकता है और समान बादल उन पर बरसते हैं।

मानवता के साथ भी ऐसा ही है। यह कई जातियों से बनी हुई है और इसके लोगों के रंग भिन्न हैं, गोरे, काले, पीले, भूरे और लाल परन्तु वे सब उसी एक परमात्मा की ओर से आते हैं और सभी उसके सेवक हैं। खेद की बात है कि मानव संतान में इस विविधता का वैसा प्रभाव नहीं जैसा कि वनस्पति जगत में है जहाँ पर भावना अधिक मैत्रीपूर्ण है। मनुष्यों में विविध प्रकार का वैरभाव होता है और यही है वह जो विश्व के भिन्न राष्ट्रों के बीच युद्ध और घृणा का कारण बनता है।

रक्त मात्र के मतभेद भी उनके लिए एक दूसरे को मारने और नष्ट करने के कारण बनते हैं। अफसोस, कि अब भी ऐसा होता है। आइये हम भिन्नता में छुपे सौन्दर्य को निहारें और वनस्पति जगत से सबक सीखें। यदि आप किसी ऐसे बगीचे को देखें जिसमें सभी पौधों की आकृति, रंग और सुगंध एक ही प्रकार की हो तो वह आपको बिल्कुल सुन्दर नहीं

विविधता में सौन्दर्य

लगेगा, बल्कि उसके विपरीत वह अरुचिकर और उकता देने वाला लगेगा। नैनों को सुख देने वाला और हृदय को प्रसन्न करने वाला बाग वह होता है जिसमें प्रत्येक वर्ण, सुगंध और आकार वाले पुष्प पास-पास खिले हों और वर्ण की आनंदमय भिन्नता ही वह वस्तु है जो आकर्षण तथा सौन्दर्य प्रदान करती है। ऐसा ही वृक्षों के साथ है। फलदार वृक्षों से भरा बगीचा आनंदकारक होता है। भिन्न प्रकार के पैड़ पौधों से भरपूर बागान की भी यही बात है। केवल भिन्नता तथा विविधता ही इसका आकर्षण है। प्रत्येक पुष्प, प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक फल स्वयं अपने आप में सुन्दर होते हुए भिन्नता द्वारा दूसरों के गुणों को उजागर करता है और प्रत्येक तथा सबके विशेष सौन्दर्य को दर्शाता है।

मनुष्य की संतान में भी ऐसा ही होना चाहिए। मानव परिवार की विविधता को प्रेम तथा मैत्रीभाव का कारण होना चाहिये जैसा कि संगीत में होता है जहाँ पर भिन्न स्वर आपस में मिलकर एक सम्पूर्ण तान बनते हैं। यदि आप अपने से भिन्न जाति तथा वर्ण के लोगों से मिलें तो उन पर अविश्वास कर अपने आपको रूढ़िवादिता के खोल में बंद न कर लें बल्कि खुश हों और उनके प्रति कृपा दर्शाएं उन्हें अलग अलग मानव रंगों के गुलाब के फूल समझें जो मानवता की सुन्दर बगिया में खिले हुए हैं और उनकी संगत में आनन्द उठायें।

इसी प्रकार जब आप उनसे मिलें जिनकी धारणा आपकी धारणा से भिन्न हो, तो आप उनसे मुहँ न फेर लें। सभी सच्चाई के जिज्ञासु हैं और सच्चाई पर पहुँचने के कई मार्ग हैं। सच्चाई के कई पहलू हैं परंतु यह सर्वदा एक ही रहती है।

विचारों की भिन्नता अथवा मतभेद आपको अपने

ईसा का आगमन

सहमानवों से अलग करने का कारण न बनें और न ही आपके हृदयों में कलह घृणा तथा अनबन का कारण बनें। अपितु आप सच्चाई को ढूँढ निकालने का अनथक प्रयास करें और सभी लोगों को अपना मित्र बनायें।

प्रत्येक इमारत में तरह तरह के पत्थर लगे होते हैं फिर भी वे एक दूसरे पर इतने आश्रित होते हैं कि यदि उनमें से एक को भी निकाल दिया जाये तो सारी इमारत को क्षति पहुँचेगी। यदि एक में भी त्रुटि हुई तो ढाँचा भी त्रुटिपूर्ण होगा।

बहाउल्लाह ने एकता का एक दायरा खींचा है, उन्होंने सभी लोगों को एक करने और उन सबको विश्व एकता की छत्रछाया में लाने हेतु एक रूपरेखा तैयार की है। यह दिव्य कृपा का काम है और हमें निश्चय ही तन और मन से तब तक प्रयास करते रहना चाहिये जब तक हमारे बीच वास्तविक एकता स्थापित न हो जाये। और जैसे जैसे हम इस काम में अग्रसर होंगे, वैसे वैसे हमें शक्ति प्रदान होती रहेगी। अहं तथा स्व के सारे विचार भुला दीजिए और केवल मात्र प्रभु इच्छा के सामने झुकने और उसकी आज्ञापालन का प्रयास कीजिए। केवल इसी प्रकार ही हम प्रभु साम्राज्य के नागरिक बन सकेंगे और अमर जीवन की प्राप्ति कर सकेंगे।

ईसा के आगमन के बारे में भविष्यवाणियों का वास्तविक अर्थ

अक्टूबर 30

बाइबल में ईसा के आगमन के बारे में भविष्यवाणियाँ हैं।

ईसा का आगमन

यहूदी अब भी मसीहा के आने की प्रतीक्षा में हैं और रात दिन उनके शीघ्र आगमन के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

जब ईसा आये तो उन्होंने यह कहकर उनकी भर्त्सना की और बध किया कि "यह वह नहीं जिसकी हम प्रतीक्षा में हैं। देखना, जब मसीहा आयेगा तो चिन्ह और चमत्कार इसका प्रमाण देंगे कि वह ही वास्तव में ईसा है। हम उन चिन्हों और परिस्थितियों को जानते हैं और वे अभी प्रत्यक्ष नहीं हुए। मसीहा एक अनजाने नगर से आयेगा। वह डेविड के सिंहासन पर विराजमान होगा, और देखना कि वह फौलादी तलवार के साथ प्रकट होगा और लौह राजदण्ड के साथ शासन करेगा। वह अवतारों के सिद्धान्त को पूरा करेगा। वह पूर्व और पश्चिम को जीत लेगा और अपने चहेते लोगों, (यहूदियों) को गौरवशाली बनायेगा। वह अपने साथ शान्ति का युग लायेगा जिसके दौरान पशु भी मानव के साथ अपनी शत्रुता भुला देंगे। क्योंकि, देखना, भेड़िया और मेमना एक ही स्रोत से जलपान करेंगे, बाघ और मृग एक ही चरागाह में विश्राम करेंगे, सर्प और मूस एक ही बिल में रहेंगे और ईश्वर के सारे प्राणी सुख चैन से रहेंगे।

यहूदियों के अनुसार, ईसा मसीह ने इन में से किसी भी शर्त को पूरा नहीं किया, क्योंकि उनकी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ था और वे देखने में असमर्थ थे।

वे नजारथ से आये जो कि अनजानी जगह नहीं थी। उनके हाथ में तलवार तो क्या एक छड़ी तक भी न थी। वे डेविड के सिंहासन पर विराजमान नहीं थे, वे एक दरिद्र व्यक्ति थे। उन्होंने मूसा के कानून में सुधार किया और सब्बाध दिवस का उल्लंघन किया। उन्होंने पूर्व तथा पश्चिम पर विजय नहीं

ईसा का आगमन

पायी, अपितु वे स्वयं रोमन कानून के आधीन थे। उन्होंने यहूदियों को श्रेष्ठता प्रदान नहीं की बल्कि समानता तथा भाईचारे की शिक्षा दी और धर्मशास्त्रियों तथा फरीसियों (पाखंडियों) की भर्त्सना की। उन्होंने शान्ति की स्थापना नहीं की क्योंकि उनके जीवनकाल में अन्याय तथा क्रूरता में इतनी अधिक वृद्धि हो गई थी कि वे भी उसके शिकार हो गये तथा क्रूस पर उनकी बड़ी लज्जाजनक मृत्यु हुई।

यहूदियों के सोचविचार और बात करने का यह ढंग था क्योंकि वे धर्मशास्त्रों तथा उनमें दिये गये परम सत्य को नहीं समझते थे। अक्षर उनको कंठस्थ थे परंतु उनके जीवनदायक सार का वे एक शब्द भी नहीं समझ सकते थे।

सुनिये और मैं आपको इसका अर्थ बताऊंगा। यद्यपि वे नजारथ से आये थे जो एक जाना माना स्थान था, परंतु वे स्वर्ग से भी आये थे। उनका शरीर मेरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ परंतु उनकी आत्मा स्वर्ग से आई थी। उनके पास जो तलवार थी वह वाणी की तलवार थी जिससे वे अच्छाई को बुराई से, सत्य को असत्य से, वफादारों को गद्दारों से तथा प्रकाश को अंधकार से अलग करते थे। निःसन्देह उनका शब्द एक पैनी तलवार था! जिस सिंहासन पर वे आसीन हुए वह अमर सिंहासन है जहाँ से ईसा सदा सर्वदा के लिये शासन करते हैं, एक स्वर्गीय सिंहासन, पार्थिव सिंहासन नहीं, क्योंकि सांसारिक वस्तुओं का अन्त हो जाता है परंतु स्वर्गिक वस्तुओं का नहीं। उन्होंने मूसा के सिद्धान्त की पुनः व्याख्या की और उसे पूरा किया तथा अवतारों के सिद्धान्त की पूर्ति की। उनके शब्द ने पूर्व तथा पश्चिम पर विजय प्राप्त की। उनका साम्राज्य अनंत है। उन्होंने उन यहूदियों को गौरवशाली

ईसा का आगमन

बनाया जिन्होंने उन्हें पहचाना। वे निम्न जातियों के पुरुष और स्त्रियाँ थीं परंतु उन (ईसा) के साथ संपर्क ने उन्हें महान बना दिया और उन्हें अमर प्रतिष्ठा प्रदान की। एक दूसरे से मिलकर रहने वाले पशुओं से अर्थ यह था कि भिन्न जातियाँ तथा सम्प्रदाय जो कभी आपस में युद्धरत थे, वे अब ईसा रूपी अमर स्रोत से जीवन जल का पान करते हुए मिलजुलकर प्रेम और सद्भाव के साथ रहेंगे।

इस प्रकार ईसा के आगमन से सम्बद्ध सभी आध्यात्मिक भविष्यवाणियाँ पूरी हुई परंतु यहूदियों ने अपनी आँखें और कान बंद कर लिये ताकि वे न देख सकें न सुन सकें और इस प्रकार ईसा की दिव्य सत्यता उनके बीच से बिना सुनवाई, बिना प्रेम और बिना स्वीकृति गुजर गई।

पावन धर्मशास्त्रों को पढ़ना आसान है परंतु शुद्ध हृदय और मन से ही कोई व्यक्ति उनके वास्तविक अर्थों को समझ सकता है। आइये हम प्रभु की सहायता की याचना करें ताकि हम पवित्र धर्मग्रंथों को समझ सकें। आइये हम देखने योग्य नेत्रों, सुनने योग्य कानों और शांति चाहने वाले हृदयों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।

परमात्मा की अनंत दया अथाह है। उसने सदा कुछ ऐसी आत्माओं का चयन किया है जिनको उसने हृदय की दिव्य उदारता प्रदान की है, जिनके मन को उसने दिव्य प्रकाश से परिपूर्ण किया है, जिन पर उसने अपने पवित्र रहस्यों को प्रकट किया है और जिनकी दृष्टि के सामने उसने सत्य के दर्पण को निर्मल बनाये रखा है। ये ईश्वर के शिष्य हैं और उसकी परोपकारिता की कोई सीमा नहीं। आप जो उस सर्वोच्च ईश्वर के सेवक हैं, आप भी उसके शिष्य बन सकते

मध्यस्थ शक्ति

हैं। ईश्वर के भण्डार असीम हैं।

पावन धर्मग्रंथों द्वारा प्रवाहित होने वाली आत्मा उन सबका भोजन है जो इसकी इच्छा करते हैं। ईश्वर, जिसने अपना प्रकाश अवतारों को दिया है, निश्चय ही अपने भण्डार से उन सबको दैनिक आहार देगा जो शुद्ध हृदय से इसकी कामना करेंगे।

पवित्र आत्मा — ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ शक्ति

एवेन्यु डि केमोइन्स
अक्टूबर 31

दिव्य वास्तविकता अविचारणीय, असीम, अनन्त, अमर तथा अगोचर है।

पार्थिव संसार प्राकृतिक नियमों से बँधा हुआ, सीमित तथा नश्वर है।

यह नहीं कहा जा सकता कि अनंत वास्तविकता में कमीबेशी होती है। यह मानव की समझ से परे है और इसकी उन शब्दों में व्याख्या नहीं की जा सकती जो सृजित संसार के हृदय क्षेत्र पर लागू होते हैं।

अतः मनुष्य को उस केवल मात्र शक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है जिसके माध्यम से वह दिव्य वास्तविकता की सहायता प्राप्त कर सकता है। केवल वही शक्ति उसे जीवन स्रोत के सम्पर्क में लाती है।

दो छोरों को एक दूसरे से जोड़ने के लिये किसी मध्यस्थ

मध्यस्थ शक्ति

की आवश्यकता होती है। समृद्धि और दरिद्रता, अधिकता और आवश्यकता, किसी मध्यस्थ शक्ति के बिना इन परस्पर विरोधी जोड़ों के बीच कोई संबंध संभव नहीं।

अतः हम कह सकते हैं कि ईश्वर और मानव के बीच एक मध्यस्थ का होना अनिवार्य है और यह पवित्र आत्मा के सिवाय और कोई नहीं जो सृष्टि को "अनिवार्य" अर्थात् दिव्य वास्तविकता के सम्पर्क में लाती है।

दिव्य वास्तविकता की संज्ञा सूर्य से दी जा सकती है और पावन आत्मा की सूर्य की किरणों से। जैसे सूर्य की किरणें सूर्य के प्रकाश तथा ताप को पृथ्वी तक लाती हैं, जिनसे सभी प्राणियों को जीवन मिलता है, उसी प्रकार मानव आत्माओं को जीवन तथा प्रकाश देने के लिये (ईश्वर के) अवतार सत्यता के दिव्य सूर्य (ईश्वर) से पावन आत्मा की शक्ति को लाते हैं।

देखिये, सूर्य तथा पृथ्वी के बीच किसी मध्यस्थ वस्तु का होना जरूरी है। सूर्य स्वयं पृथ्वी पर नहीं उतरता और न ही पृथ्वी सूर्य पर जाती है। यह संपर्क सूर्य की किरणों द्वारा किया जाता है जो प्रकाश, ताप और गर्मी लाती हैं।

पावनात्मा (ईश्वरीय अवतार) सत्य के सूर्य (ईश्वर) का प्रकाश है जो अपनी अनंत शक्ति द्वारा मानवमात्र के लिये जीवन और बोध लाती है, सभी आत्माओं को दिव्य ज्योति से परिपूर्ण करती है, और सारे विश्व को ईश्वरीय दया के वरदान देती है। सूर्य की किरणों के प्रकाश तथा ताप के माध्यम के बिना पृथ्वी सूर्य से कोई लाभ नहीं उठा सकती।

इसी प्रकार पावन आत्मा ही मनुष्य के जीवन का कारण है, पावनात्मा के बिना उसके पास ज्ञान शक्ति नहीं होगी,

मनुष्य की दो प्रकृतियाँ

वह वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पायेगा जिसके द्वारा वह शेष सृष्टि पर अपना महान प्रभाव प्राप्त करता है। पावनात्मा की दीप्ति मानव को विचार शक्ति प्रदान करती है और उसे खोज करने के योग्य बनाती है जिनके द्वारा वह प्रकृति के नियमों को अपनी इच्छानुसार झुकाता है।

यह पावनात्मा ही है जो ईश्वरावतारों के माध्यम से मनुष्य को आध्यात्मिक गुण सिखाती है और उसे अमर जीवन प्राप्त करने के योग्य बनाती है।

ये सभी वरदान पावनात्मा मनुष्य पर लाती है, अतः हम समझ सकते हैं कि पावनात्मा ही स्रष्टा और सृष्टि के बीच मध्यस्थ है। सूर्य का प्रकाश और ऊष्णता पृथ्वी के फलने फलने का कारण हैं और सभी विकासशील वस्तुओं को जीवन देते हैं और पावन आत्मा मानव आत्माओं को स्फूर्ति प्रदान करती है।

दो महान धर्म प्रचारक, सेन्ट पीटर तथा सुसमाचारक सेन्ट जान कभी सादा, विनम्र मजदूर होते थे जो अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये परिश्रम करते थे। पावन आत्मा की शक्ति से उनकी आत्माएँ दीप्तिमान हो गईं और उन्होंने महात्मा ईसा मसीह के अनन्त वरदान प्राप्त किये।

मनुष्य की दो प्रकृतियाँ

नवम्बर 1

आज पेरिस में आनंद का दिन है! वे 'सर्व संत' उत्सव मना रहे हैं। आपके विचार में क्या कारण है कि इन लोगों

मनुष्य की दो प्रकृतियाँ

को "संत" कहा जाता था? इस शब्द का एक विशेष वास्तविक अर्थ है। संत वह होता है जो शुद्ध जीवन व्यतीत करता है, वह जिसने अपने आपको सभी मानव दुर्बलताओं तथा अपूर्णताओं से मुक्त कर लिया हो।

मनुष्य में दो प्रकार की प्रकृतियाँ होती हैं—उसकी आध्यात्मिक तथा उच्च प्रकृति तथा भौतिक अथवा निम्न प्रकृति। एक के द्वारा वह प्रभु की निकटता प्राप्त करता है और दूसरी द्वारा वह केवल मात्र संसार के लिये ज़िन्दा रहता है। इन दोनों प्रकृतियों के चिन्ह मनुष्य में पाये जाते हैं। अपने भौतिक पहलू में वह झूठ, क्रूरता तथा अन्याय को व्यक्त करता है। ये सब उसकी निम्न प्रकृति के परिणाम हैं। उसकी दिव्य प्रकृति के गुण, प्रेम, कृपा दया, सत्यता तथा न्याय में दिखाई देते हैं जिनमें से प्रत्येक या सभी उसकी उच्च प्रकृति की अभिव्यक्ति हैं। प्रत्येक अच्छी आदत और प्रत्येक उत्तम गुण मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति से संबंध रखता है जबकि उसकी सभी अपूर्णतायें तथा कुकर्म उसकी भौतिक प्रकृति से जन्म पाते हैं। यदि किसी मनुष्य की दिव्य प्रकृति मानव प्रकृति पर हावी हो तो वह संत बन जाता है।

मनुष्य में अच्छा और बुरा करने की दोनों प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं। यदि उसकी अच्छाई की शक्ति अधिक है और बुराई की ओर उसका झुकाव पराजित हो जाता है तो ऐसे मनुष्य को वास्तव में संत कहना चाहिये। परंतु इसके प्रतिकूल यदि वह अच्छी बातों का तिरस्कार करता है और अपनी कुप्रवृत्तियों को अपने आप पर हावी होने देता है तो वह पशु मात्र से बेहतर नहीं होता।

संत वे व्यक्ति होते हैं जिन्होंने अपने आपको पार्थिव

मनुष्य की दो प्रकृतियाँ

संसार से मुक्त करा लिया हो और जिन्होंने पाप वृत्ति पर विजय प्राप्त कर ली हो। वे संसार में तो रहते हैं परंतु इसका भोग नहीं होते क्योंकि उनका ध्यान सदा आत्मा के संसार में लगा रहता है। उनके जीवन पवित्रता में व्यतीत होते हैं और उनके कर्म प्रेम, न्याय तथा ईश्वरपरायणता दर्शाते हैं। उन्हें स्वर्ग से दीप्ति प्राप्त होती है, वे पृथ्वी के अंधकारमय स्थानों पर चमकते हुए और प्रकाशमान दीपों के समान होते हैं। वे प्रभु के संत होते हैं। ईसा मसीह के पट्ट शिष्य साधारण लोगों की भाँति थे। अपने सहजनों की भाँति वे भी सांसारिक वस्तुओं की ओर आकर्षित थे, और प्रत्येक केवल अपने ही लाभ की बात सोचता था। वे न्याय के बारे में कुछ नहीं जानते थे और न ही उनमें दिव्य संपूर्णतायें पायी जाती थीं। परन्तु जब उन्होंने ईसा का अनुसरण किया और उनमें विश्वास किया तो उनमें अज्ञानता का स्थान ज्ञान और विवेक ने ले लिया, क्रूरता न्याय में, झूठ सच्चाई में और अंधकार प्रकाश में बदल गया। वे संसारी थे, अब वे आध्यात्मिक तथा दिव्य बन गये। वे अंधकार की संतान थे, अब वे ईश्वर की संतान बन गये, वे संत बन गये। अतः सभी सांसारिक वस्तुओं को त्याग कर उनके पदचिह्नों पर चलने का प्रयास कीजिये और आध्यात्मिक साम्राज्य को प्राप्त होने की चेष्टा कीजिए।

ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि दिव्य गुणों में वह आपको मजबूत बनाये ताकि संसार में आप देवदूतों की भाँति हों और विवेकशील हृदयों पर प्रभु साम्राज्य के रहस्यों के उद्घाटन हेतु प्रकाशपुंज बनें।

ईश्वर ने अपने अवतारों को संसार में मनुष्य की शिक्षा

भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति

और प्रबोधन, उस पर पावन आत्मा की शक्ति के रहस्य को खोलने, उसे प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने के योग्य बनाने के लिये भेजा ताकि अपनी पारी पर वह अन्य लोगों के लिये पथप्रदर्शन का साधन बन सके। दैवी ग्रंथ जैसे कि बाइबल, कुरान तथा अन्य पवित्र लेख ईश्वर ने दिव्य गुण, प्रेम, न्याय तथा शांति की राह में मार्गदर्शक के रूप में दिये हैं।

अतः मैं आपसे कहता हूँ कि आप उन पावन ग्रंथों में दिये गये परामर्शों का अनुसरण करें और अपने जीवन को ऐसे ढालें कि आपके सामने प्रस्तुत किये गये उदाहरणों का अनुसरण करते हुए आप स्वयं उस सर्वोच्च परमात्मा के संत बन जायें।

भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति

नवम्बर 2

अब्दुल-बहा ने कहा:

आज मौसम कितना सुन्दर है, आसमान साफ है, सूर्य चमक रहा है और इससे मनुष्य का हृदय प्रसन्न हो रहा है।

ऐसा साफ और सुन्दर मौसम मनुष्य को नया जीवन और शक्ति देता है, और यदि वह अस्वस्थ है तो एक बार फिर वह अपने हृदय में पुनः स्वास्थ्य प्राप्ति की आनंदमयी आशा का अनुभव करता है। प्रकृति के ये सारे उपहार मनुष्य के भौतिक पहलू से संबंध रखते हैं क्योंकि केवल उसका शरीर ही भौतिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति अपने व्यवसाय, कला या धंधे में सफल होता है तो इससे वह अपने शारीरिक सुख को बढ़ाने के

भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति

योग्य बनता है और अपने शरीर को ऐसा सुख और आराम देता है जिससे वह आनंदित होता है। आज हम चारों ओर देखते हैं कि किस प्रकार मनुष्य ने अपने आपको हर प्रकार की आधुनिक सुविधा और विलासिता से घेर रखा है और अपनी प्रकृति के भौतिक तथा शारीरिक पहलू को किसी भी चीज से वंचित नहीं करता। परन्तु, सावधान, ऐसा न हो कि शारीरिक वस्तुओं के बारे में अधिक सोच विचार के कारण आप आत्मा से संबंधित बातों को भूल जायें, क्योंकि भौतिक लाभ मनुष्य की आत्मा को ऊँचा नहीं उठाते। सांसारिक वस्तुओं में संपूर्णता मानव शरीर के लिये आनंदमयी है परन्तु यह किसी भी प्रकार से उसकी आत्मा को महिमायुक्त नहीं बनाती।

यह संभव है कि कोई व्यक्ति जिसे प्रत्येक भौतिक लाभ प्राप्त हो और जो उन तमाम महान सुविधाओं के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हो जो आधुनिक सभ्यता उसे दे सकती है, परन्तु वह पावन आत्मा के सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपहार से वंचित है। भौतिक उन्नति करना निश्चय ही एक अच्छी और प्रशंसनीय बात है परन्तु ऐसा करते हुए इससे अधिक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रगति से हमें असावधान न होना चाहिये और हमारे बीच चमकते हुए दिव्य प्रकाश से आँखें बंद नहीं कर लेनी चाहिए।

केवल आध्यात्मिक (तथा साथ ही भौतिक सुधार) द्वारा ही हम कोई वास्तविक उन्नति कर सकते हैं और संपूर्ण जीव बन सकते हैं। संसार में यह आध्यात्मिक जीवन तथा प्रकाश लाने के लिये ही सभी महान शिक्षक (ईश्वरीय अवतार) प्रकट हुए हैं। वे इसलिये आये कि सत्यता का सूर्य प्रत्यक्ष हो

भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति

और मनुष्यों के हृदयों पर चमके और इसकी अद्भुत शक्ति द्वारा मानव अनंत प्रकाश प्राप्त कर सकें।

जब महात्मा ईसा प्रकट हुए तो उन्होंने पावन आत्मा व प्रकाश को अपने चारों ओर फैलाया और उनके शिष्य तथा अन्य सभी लोग, जिन्होंने उनकी दीप्ति प्राप्त की, ज्ञानवान, आध्यात्मिक प्राणी बन गये।

इसी प्रकाश को प्रत्यक्ष करने के लिये बहाउल्लाह उत्पन्न हुए और संसार में आये। उन्होंने लोगों को अनंत सच्चाई की शिक्षा दी और सभी देशों पर दिव्य प्रकाश की किरणें डालीं।

अफसोस! देखिये किस प्रकार मनुष्य अवहेलना करता है। वह अभी भी अपने अंधकार के पथ पर चल रहा है और फूट, झगड़े और भयानक युद्ध अभी भी जारी हैं।

वह भौतिक प्रगति को अपनी युद्ध की लालसा को पूरा करने के लिये प्रयोग करता है और वह अपने ही मनुष्य भाई का नाश करने के लिये विनाशकारी उपकरण और यंत्र बनाता है।

परंतु हमें आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए क्योंकि सच्ची प्रगति का केवल यही एक सही मार्ग है वह जो ईश्वर से आता है और केवल मात्र वही धर्मपरायण है।

मैं आप में से प्रत्येक के लिए प्रार्थना करता हूँ कि पावन आत्मा की कृपायें आपको प्राप्त हों ताकि आप सचमुच प्रबुद्ध हो जायें और सदा प्रभु के साम्राज्य की ओर उन्नति करें। तब आपके हृदय शुभ समाचार पाने के लिये तैयार हो जायेंगे, आपके नेत्र खुल जायेंगे और आप ईश्वर की महिमा

आत्मा का विकास

का अवलोकन कर सकेंगे, आपके कान खुल जाएंगे और आप प्रभु साम्राज्य की आवाज को सुन सकेंगे और वाक्पटु जिव्हा के साथ आप लोगों का दिव्य शक्ति तथा प्रभु प्रेम की अनुभूति हेतु आह्वान करेंगे।

भौतिक तत्व का उत्थान तथा आत्मा का विकास

नवम्बर 3

पेरिस में सर्दी बढ़ती जा रही है। इतनी अधिक कि मुझे शीघ्र ही यहाँ से चला जाना पड़ेगा परंतु फिर भी आपके प्रेम की गरमाहट मुझे यहाँ पर रोके हुए है। प्रभु ने चाहा तो मैं कुछ समय और आप लोगों के बीच रुकने की आशा करता हूँ। शारीरिक सर्दी और गर्मी आत्मा पर प्रभाव नहीं डाल सकती क्योंकि यह प्रभु प्रेम की ज्वाला से गरमाहट प्राप्त करती है। जब हम यह बात समझ लेते हैं तो आने वाले संसार में अपने जीवन के बारे में हम कुछ कुछ समझना शुरू कर देते हैं।

अपनी कृपा से प्रभु ने पूर्वाभास हमें यहीं पर दे दिया है। शरीर और आत्मा के बीच अंतर के कुछ प्रमाण हमें दिये हैं।

हम देखते हैं कि शीत, ताप, कष्ट आदि केवल शरीर से ही संबंध रखते हैं, आत्मा पर उनका कुछ असर नहीं।

कितनी बार हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो गरीब होते हैं, रोगी होते हैं, जिनके तन पर पूरे कपड़े नहीं होते, जिनका कोई सहारा नहीं होता परंतु फिर भी वे आध्यात्मिक रूप से मजबूत होते हैं। उनके शरीर को जो कुछ भी सहना पड़े,

आत्मा का विकास

उनकी आत्मा स्वच्छन्द और स्वस्थ होती है। पुनः, कितनी बार हम किसी समृद्ध व्यक्ति को देखते हैं जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और शक्तिशाली होता है परंतु जिसकी आत्मा बड़े भयंकर रूप से रोगग्रस्त होती है।

विवेकशील मन के लिए यह बिलकुल प्रत्यक्ष है कि किसी व्यक्ति की आत्मा उसके भौतिक शरीर से बिलकुल भिन्न होती है।

आत्मा अपरिवर्तनशील और अविनाशकारी होती है। आत्मा की उन्नति और विकास, इसके आनंद और दुख भौतिक शरीर से परे होते हैं।

यदि किसी मित्र के कारण हमें खुशी या दुख होता है, या प्रेम सच्चा या झूठा सिद्ध होता है तो इससे आत्मा पर प्रभाव पड़ता है। यदि हमारे प्रियजन हमसे दूर हों तो यह आत्मा ही होती है जिसे दुख होता है और आत्मा के दुख या कष्ट की प्रतिक्रिया शरीर पर हो सकती है।

इस प्रकार जब आत्मा का पोषण सद्गुणों पर किया जाता है तो शरीर आनंदित होता है। यदि आत्मा पाप के गड्ढे में गिर जाये तो शरीर पीड़ित होता है।

जब हम सच्चाई, स्थिरता, निष्ठा और प्रेम पा लेते हैं तो हम प्रसन्न होते हैं परंतु यदि हमारा पाला झूठ, अनिष्ठा और धोखे से पड़ता है तो हम दुःखी होते हैं।

इन सब बातों का संबंध आत्मा से हैं और वे शारीरिक रोग नहीं। अतः यह प्रत्यक्ष है कि शरीर की भाँति आत्मा भी स्वयं अपना व्यक्तित्व रखती है। परंतु यदि शरीर में परिवर्तन हो तो जरूरी नहीं कि आत्मा पर भी इसका प्रभाव हो। यदि आप उस दर्पण को तोड़ दें जिस पर सूर्य चमक रहा

आत्मा का विकास

हो तो दर्पण तो टूट जाता है परन्तु सूर्य फिर भी चमकता रहता है। यदि उस पिंजरे को तोड़ दिया जाये जिसमें कोई पक्षी बंद हो तो इससे पक्षी को कोई हानि नहीं पहुँचती। यदि दीपक टूट जाये तो भी शिखा पूरी क्रान्ति के साथ जलती रह सकती है।

बिल्कुल यही बात मनुष्य की आत्मा पर लागू होती है। यद्यपि मृत्यु उसके शरीर को नष्ट कर देती है परन्तु आत्मा पर इसका कोई जोर नहीं, यह अमर है, अनंत है, अजन्मी और अनश्वर।

जहाँ तक मृत्योपरांत मानव आत्मा का संबंध है, वह उतनी ही शुद्ध रहती है जितना इसने मानव शरीर में रहते हुए विकास किया था और शरीर से अलग होने पर यह प्रभु की दया के सागर में डूबी रहती है।

जिस क्षण मनुष्य की आत्मा शरीर को छोड़ स्वर्ग जगत में पहुँचती है उस क्षण से उसका विकास आध्यात्मिक होता है और विकास है ईश्वर की निकटता प्राप्त करना।

भौतिक सृष्टि में विकास संपूर्णता के एक अंश से दूसरे अंश तक होता है। खनिज पदार्थ अपनी सारी खनिज संपूर्णताओं के साथ वनस्पति में परिवर्तित होते हैं, वनस्पति अपनी समूची संपूर्णताओं के साथ पशु जगत में पहुँच जाती है और इस प्रकार धीरे धीरे मानवजगत में। ऐसा दिखाई देता है कि यह संसार परस्पर विरोधों से भरा पड़ा है। इनमें से प्रत्येक जगत (खनिज, वनस्पति और पशु) में जीवन का अस्तित्व इसके अंश के अनुसार होता है। यद्यपि मानव जीवन की तुलना में भूमि मृतप्रायः प्रतीत होती है फिर भी वह जीवित है और इसका अपना अलग जीवन है। इस

आध्यात्मिक गोष्ठियाँ

संसार में वस्तुएँ जिन्दा रहती हैं और मृत्यु को प्राप्त होती हैं और पुनः जीवन के नए रूप में जीती हैं। परंतु आत्मा जगत में इसके बिलकुल विपरीत होता है।

नियम के तौर पर आत्मा का उत्थान एक अंश से दूसरे अंश तक नहीं होता। प्रभु की दया और कृपा से यह केवल प्रभु की निकटता प्राप्त करती है।

मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि हम सब प्रभु के साम्राज्य और उसकी निकटता को प्राप्त करें।

पैरिस में आध्यात्मिक गोष्ठियाँ

नवम्बर 4

यूरोप भर में आज हम गोष्ठियों और सभाओं के बारे में सुन रहे हैं और हर प्रकार की सोसायटियों का गठन किया जा रहा है। कुछ लोगों की दिलचस्पी वाणिज्य, विज्ञान, राजनीति तथा अन्य अनेक बातों में है। ये सब भौतिक सेवा के लिये हैं। उनकी इच्छा होती है कि पार्थिव जगत उन्नत और ज्ञानयुक्त हो। परंतु आत्मा जगत का श्वास शायद ही कभी उन्हें प्राप्त होता है। वे दिव्य वाणी से अनभिज्ञ लगते हैं, ईश्वर संबंधी बातों से असावधान। परंतु पैरिस की यह गोष्ठी निश्चय ही एक आध्यात्मिक गोष्ठी है। दिव्य श्वास आपके मध्य फूँक दिया गया है, प्रभु साम्राज्य का प्रकाश आप सबके हृदयों में देदीप्यमान है। ईश्वर का दिव्य प्रेम आपके अन्दर एक शक्ति है और प्यासी आत्माओं के साथ आप परम आनंद के शुभ समाचार प्राप्त करते हैं।

आध्यात्मिक गोष्ठियाँ

विश्व एकता की इच्छा रखते हुए तथा उसके लिये कार्यरत, एक दूसरे की ओर आकर्षित हृदयों तथा दिव्य प्रेम से ओतप्रोत आत्माओं के साथ आप सब यहाँ पर एकत्रित हुए हैं।

निःसंदेह यह सभी आध्यात्मिक है। यह एक सुन्दर सुगंधपूर्ण बगिया के तुल्य है। स्वर्गिक सूर्य इस पर अपनी सुनहरी किरणें डालता है और उसकी गरमाहट प्रत्येक प्रतीक्षाकारी हृदय में घुसकर उसे आनंदविभोर कर देती है। ईसा का प्रेम जो सारे ज्ञानों से ऊँचा है, आप लोगों में विद्यमान हैं और पावनात्मा आपकी सहायक है।

दिन प्रतिदिन यह गोष्ठी में उन्नति करेगी और यह क्रमशः इतनी शक्तिशाली हो जायेगी कि इसकी भावना सारे जगत को जीत लेगी।

ईश्वर के स्वइच्छुक साधन बनने हेतु पूर्ण मन से प्रयास करें। मैं आपको बताता हूँ कि विश्व भर में उसके प्रेमदूत बनने, उसके आध्यात्मिक उपहारों को मानव तक ले जाने और धरती पर एकता और मित्रता फैलाने के साधन बनने के लिये ईश्वर ने आपको चुना है। पूरे मन से ईश्वर के प्रति आभार प्रकट कीजिये कि आपको ऐसा विशेषाधिकार दिया गया है क्योंकि स्तुति में लीन जीवन इतना लम्बा नहीं होता कि ऐसी महान कृपा के लिये ईश्वर के प्रति आभार प्रकट किया जा सके।

अपने हृदयों को वर्तमान से ऊपर उठायें और विश्वास की दृष्टि के साथ भविष्य में झाँकें। आज बीज बोया गया है, दाना धरती पर गिरा है, परंतु देखिये वह दिन आयेगा जब इससे एक गौरवशाली वृक्ष उत्पन्न होगा, उसकी शाखायें

दो प्रकार का प्रकाश

फलों से लदी होंगी। प्रसन्न हों और आनंद मनायें कि इस दिन का उदय हुआ है, इसकी शक्ति का अनुभव करने की कोशिश करें क्योंकि निसंदेह यह अद्भुत है। ईश्वर ने आपको सम्मान का मुकुट पहनाया है और आपके हृदयों में उसने एक जगमगाता सितारा रख छोड़ा है। वस्तुतः उसका प्रकाश सारे संसार को जगमगा देगा।

दो प्रकार का प्रकाश

नवम्बर 5

आज मौसम उदासीन और निरुत्साह है। पूर्व में निरंतर धूप रहती है, सितारे कभी छुपते नहीं और बादल बहुत कम आते हैं। प्रकाश सदा पूर्व से उदय होता है और अपनी दीप्ति को पश्चिम में भेजता है।

प्रकाश दो प्रकार का होता है। सूर्य का दृष्टिगोचर प्रकाश, जिसकी सहायता से हम अपने आसपास के संसार की सुन्दरताओं को पहचान सकते हैं—इसके बिना हम कुछ भी नहीं देख सकते।

फिर भी यद्यपि इस प्रकाश का काम हमारे लिये वस्तुओं का दृश्य बनाना है, यह हमें उन्हें देख सकने की शक्ति नहीं दे सकता और न ही हमें समझा सकता है कि उनके विभिन्न आकर्षण क्यों हैं क्योंकि इस प्रकाश में कोई सूझबूझ या चेतना नहीं होती। यह ज्ञानशक्ति का प्रकाश ही है जो हमें सूझबूझ और बोध प्रदान करता है और इस प्रकाश के बिना भौतिक नेत्र बेकार होंगे।

दो प्रकार का प्रकाश

ज्ञानशक्ति का प्रकाश अस्तित्व के सभी प्रकाशों में सर्वोच्च है क्योंकि यह दिव्य प्रकाश से उत्पन्न होता है।

ज्ञानशक्ति का प्रकाश हमें सृष्टि की सभी वस्तुओं को समझने और उनका अनुभव करने के योग्य बनाता है परन्तु यह केवल मात्र दिव्य प्रकाश ही है जो हमें अदृश्य वस्तुओं के बारे में ज्ञान दे सकता है और जो हमें उन सत्यताओं को देखने के योग्य बनाता है जो अब से हजारों वर्ष पश्चात् संसार में दृष्टिगोचर होंगी।

यह दिव्य प्रकाश ही था जिसने अवतारों को दो हजार वर्ष पूर्व दिखा दिया था कि क्या होने वाला है और आज हम उनकी कल्पना को पूरा होते हुए देख रहे हैं। अतः यह वही प्रकाश है जिसे पाने के लिये हमें प्रयास करना चाहिये क्योंकि यह किसी भी अन्य प्रकाश से अधिक महान है।

इसी प्रकाश के द्वारा मूसा दिव्य प्रकाश को देखने और समझने तथा उस स्वर्गिक वाणी को सुनने में समर्थ हुए जिसने ज्वलन्त झाड़ी से उनको संबोधित किया।

यह है वही प्रकाश जिसके बारे में हज़रत मोहम्मद कहते हैं, "अल्लाह स्वर्गों और पृथ्वी का प्रकाश है।"

पूरे मन से इस स्वर्गिक प्रकाश की प्राप्ति का यत्न कीजिए ताकि आप वास्तविकताओं को समझ सकने के योग्य बन सकें, ताकि आप ईश्वर की रहस्यपूर्ण बातों का भेद पा सकें, ताकि छुपे हुए रहस्य आप पर खुल जायें।

इस प्रकाश की उपमा किसी दर्पण से दी जा सकती है। जैसे दर्पण अपने सामने आने वाली प्रत्येक वस्तु को प्रतिबिम्बित करता है उसी प्रकार यह दिव्य प्रकाश हमारी आत्मा के चक्षुओं को वह सब कुछ दिखाता है जिनका

आध्यात्मिक आकांक्षा

अस्तित्व प्रभु साम्राज्य में है तथा वस्तुओं की वास्तविकता को गोचर बनाता है। इस देदीप्यमान दिव्य प्रकाश की सहायता से पावन लेखों की सारी आध्यात्मिक व्याख्या प्रत्यक्ष हो गई है, प्रभु की सृष्टि की गुप्त बातें प्रकट हो गई हैं और हम मनुष्य के लिए दिव्य अभिप्राय को समझने के योग्य बन गये हैं।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि अपनी दया से प्रभु अपने तेजपूर्ण प्रकाश से आपकी आत्मा और मन को युक्त कर दे और तब आप में से प्रत्येक संसार के अंधकारमय स्थानों पर एक देदीप्यमान सितारे की भाँति जगमगा उठें।

पश्चिम में आध्यात्मिक आकांक्षा

अब्दुल-बहा ने कहा:

आपका हार्दिक स्वागत है।

मैं आप लोगों के साथ थोड़ा समय ठहरने के लिये पूर्वीय देशों से पश्चिम आया हूँ। पूर्व में प्रायः यह कहा जाता है कि पश्चिम के लोग आध्यात्मिकता रहित हैं परन्तु मैंने ऐसा नहीं पाया। ईश्वर का शुक्र है, मैं देखता और महसूस करता हूँ कि पश्चिम के लोगों में प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक आकांक्षा है और कुछ दिशाओं में उनका आध्यात्मिक ज्ञान उनके पूर्वीय भाइयों से भी अधिक है। यदि पूर्व में दी गई शिक्षा को पश्चिम में ईमानदारी से फैलाया जाता तो आज यह संसार एक अधिक प्रबुद्ध स्थान होता।

यद्यपि अतीत में सभी महान आध्यात्मिक शिक्षक पूर्व में

आध्यात्मिक आकांक्षा

उत्पन्न हुए हैं फिर भी वहाँ पर बहुत से ऐसे लोग हैं जो आध्यात्मिकता से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। आत्मा से संबंधित बातों में वे ऐसे निष्प्राण हैं जैसे पत्थर और न ही वे इसके विपरीत बनना चाहते हैं क्योंकि उनका विचार है कि मानव पशु का एक उच्च रूप मात्र है और ईश्वर संबंधी बातों से उसका कोई सरोकार नहीं।

परंतु मनुष्य की आकांक्षा इससे ऊँची होनी चाहिए—उसे सदा अपने से ऊपर की ओर देखना चाहिये, सदा ऊपर की ओर और आगे ही आगे जब तक कि प्रभु की दया द्वारा वह स्वर्ग के साम्राज्य को प्राप्त हो जाये। पुनः ऐसे लोग भी हैं जिनके नेत्र केवल भौतिक उन्नति और पार्थिव जगत के विकास के प्रति ही खुले हुए हैं। अपनी आत्मा और परमात्मा के गौरवमय संबंध पर विचार करने के बजाय वे अपने भौतिक शरीर और अन्दर के शरीर की समरूपता के अध्ययन को ज्यादा बेहतर समझते हैं। निश्चय ही यह आश्चर्यजनक बात है क्योंकि केवल शारीरिक रूप से ही मनुष्य निम्न सृष्टि के समरूप है, जहाँ तक बुद्धि का संबंध है वह इससे बिलकुल भिन्न है।

मानव सदा उन्नति करता रहता है। उसके ज्ञान का दायरा सदा बढ़ता रहता है और उसका मानसिक कार्यकलाप कई विभिन्न साधनों द्वारा प्रवाहित होता रहता है। देखिये विज्ञान के क्षेत्र में मनुष्य ने क्या क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। उसकी विभिन्न खोजों, आविष्कारों तथा प्राकृतिक नियमों के बारे में उसके गहरे ज्ञान का ध्यान कीजिये।

कला जगत में भी यही बात है और जैसे जैसे समय व्यतीत होता जाता है मनुष्य की क्षमताओं का यह अद्भुत

आध्यात्मिक आकांक्षा

विकास और अधिक गति पकड़ता जाता है। यदि पिछले पन्द्रह सौ वर्षों की खोजों, आविष्कारों तथा भौतिक उपलब्धियों को एक स्थान पर इकट्ठा किया जा सकता तो आप देखते कि पिछली चौदह शताब्दियों की तुलना में पिछले एक सौ वर्षों में अधिक प्रगति हुई है, क्योंकि जिस गति से मनुष्य उन्नति कर रहा है वह हर शताब्दी में उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है।

विचार शक्ति मनुष्य के लिये ईश्वर के महान उपहारों में से एक है। यही वह शक्ति है जो उसे पशु की तुलना में उत्कृष्ट प्राणी बनाती है, क्योंकि शताब्दी दर शताब्दी और युग दर युग जबकि मानव की बुद्धि प्रखर होती जाती है, पशु की बुद्धि वैसी की वैसी ही बनी रहती है। हजार वर्ष पूर्व उनकी बुद्धि जैसी थी, ठीक वैसी आज भी है। पशु जगत से मानव की भिन्नता दर्शाने के लिये क्या इससे बड़े किसी प्रमाण की आवश्यकता है? निश्चय ही यह ऐसे ही प्रत्यक्ष है जैसे दिन का उजाला।

जहां तक आध्यात्मिक संपूर्णताओं का संबंध है वे मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार हैं और सारी सृष्टि में केवल मात्र उसी को प्राप्त हैं। वास्तव में मनुष्य एक आध्यात्मिक जीव है और केवल आध्यात्मिक जीवन व्यतीत कर उसे सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह आध्यात्मिक आकांक्षा और बोध सभी लोगों में एक जैसे होते हैं और यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि पाश्चात्य लोगों में महान आध्यात्मिक आकांक्षा है।

मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि पूर्व का सूर्य पाश्चात्य जगत पर अपनी तेजमयी किरणें डाले और पश्चिम के लोग पूर्व में

पेरिस में भाषण

अपने भाइयों की मदद के लिये भारी संख्या में उत्साह और साहस के साथ उठ खड़े हों।

पेरिस के एक स्टूडियो में दिया गया भाषण

नवम्बर 6

वास्तव में यह एक बहाई भवन है। जब कभी भी किसी ऐसे भवन या सभा स्थल की स्थापना होती है तो यह उस नगर या देश के सामान्य विकास में सहायता का एक बहुत बड़ा साधन बन जाता है जहां यह स्थित होता है। यह ज्ञान और विज्ञान के विकास को प्रोत्साहित करना है और अपनी गहन आध्यात्मिकता तथा लोगों के बीच प्रेम प्रसार के लिये प्रख्यात होता है।

महान सम्पन्नता सदा ऐसे सभा-स्थल की स्थापना का अनुसरण करती है। तेहरान में स्थापित होने वाली पहली बहाई आध्यात्मिक सभा को अनुपम वरदान प्राप्त था। एक ही वर्ष में इसने इतने वेग से उन्नति की कि इसके सदस्यों की संख्या मौलिक संख्या से नौ गुना हो गई। दूर स्थित ईरान में आजकल ऐसी कई सभायें हैं जहाँ पर प्रभुभक्त पूर्ण आनंद, प्रेम और एकता के साथ आपस में मिलते हैं। वे प्रभुधर्म का प्रशिक्षण करते हैं, अज्ञानियों को शिक्षा देते हैं और भ्रातृभाव कृपा से हृदयों को एक दूसरे की ओर आकर्षित करते हैं। वे दरिद्रों तथा जरूरतमंदों की सहायता करते हैं और उन्हें रोजी रोटी देते हैं। वे रोगियों से प्रेम करते हैं, उनकी सेवा करते हैं तथा उदास और पीड़ित व्यक्तियों के लिये आशा और सांत्वना के दूत हैं।

पैरिस में भाषण

हे पैरिस वासियो, यत्न करो कि आपकी सभायें भी ऐसी ही हों और इससे भी ज्यादा लाभदायक बनें।

हे प्रभु भक्तों! यदि आप ईश्वर के शब्दों में विश्वास करेंगे और सुदृढ़ बनेंगे, यदि आप रोगियों की सेवा, गिरे हुआं को उठाने, दरिद्रों तथा जरूरतमंदों की देखभाल, निःस्सहायों को आश्रय, पीड़ितों की रक्षा, दुखियों को दिलासा और पुरे मन से मानवजगत से प्रेम करने के बारे में बहाउल्लाह की आज्ञाओं का पालन करेंगे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि शीघ्र ही यह सभा स्थल आश्चर्य-जनक परिणामों का अवलोकन करेगा। दिन-प्रतिदिन प्रत्येक सदस्य प्रगति करता जायेगा और अधिकाधिक आध्यात्मिक बनता जायेगा। परंतु आपकी नींव अवश्य ही सुदृढ़ हो और प्रत्येक सदस्य आपके ध्येयों और महत्वाकांक्षाओं को भलीभाँति समझ ले। वे निम्न प्रकार होंगे:

1. सारे मानवमात्र के प्रति सद्भावना और सहानुभूति दर्शाना।
2. मानवता की सेवा करना।
3. अंधकार में डूबे लोगों को प्रकाश में लाने और उनके मार्गदर्शन का प्रयास करना।
4. प्रत्येक के प्रति कृपापूर्ण होना और प्रत्येक जीवात्मा के प्रति स्नेह दर्शाना।
5. ईश्वर के प्रति अपने व्यवहार में विनम्र होना, उसकी प्रार्थना में अटल रहना, ताकि दिन प्रतिदिन अधिक से अधिक ईश्वर की निकटता प्राप्त हो सके।
6. अपने सभी कार्यों में इतना निष्ठावान और ईमानदार होना कि प्रत्येक सदस्य अपनी ईमानदारी, प्रेम,

बहाउल्लाह

आस्था, दया, उदारता तथा साहस के गुणों को मूर्तिमान करने के लिये प्रख्यात हो। स्वर्गिक श्वास से आकर्षित, उन सबसे अलग हो जो ईश्वर की ओर से नहीं—एक दिव्य आत्मा की ओर से हो, ताकि सारा संसार जान ले कि बहाई एक संपूर्ण मानव है।

इन सभाओं में इसकी प्राप्ति का प्रयत्न करें। तब निश्चय ही और वस्तुतः आप, प्रभु मित्र, परम आनंद के साथ एकत्रित हों। एक दूसरे की मदद कीजिए और पूर्ण एकता को प्राप्त हो एक ही शरीर समान बनिये।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप आध्यात्मिकता में दिनोंदिन विकास करें, प्रभु प्रेम ज्यादा से ज्यादा आप में प्रत्यक्ष हो, आपके हृदयों के विचार विशुद्ध बनें और आप सदा प्रभु की ओर उन्मुख रहें। आप सब एकता की दहलीज पर पहुँचें और प्रभु साम्राज्य में प्रवेश करें। प्रभु प्रेम की ज्वाला से प्रचण्ड आप में से प्रत्येक एक धधकती हुई मशाल के समान बनें।

बहाउल्लाह

नवम्बर 7

अब्दुल-बहा ने कहा:

आज मैं आप से बहाउल्लाह के विषय में बात करूँगा। बाब द्वारा अपने मिशन की घोषणा के तीसरे वर्ष कट्टरपंथी मुल्लाओं ने बहाउल्लाह पर नये सिद्धांत में विश्वास करने का आरोप लगाया और उन्हें गिरफ्तार कर बंदीगृह में डाल

बहाउल्लाह

दिया गया। किन्तु सरकार के कई मंत्रियों तथा अन्य प्रभावशाली लोगों के हस्तक्षेप के कारण दूसरे दिन उन्हें रिहा कर दिया गया। बाद में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया और मुल्लाओं ने उन्हें प्राणदंड दिया। क्रांति के भय से गवर्नर ने यह दण्ड दिये जाने में हिचकिचाहट दिखाई।

मुल्लागण उस मसजिद में इकट्ठे हुए जिसके सामने फांसी-स्थल था। मसजिद के बाहर नगर के सब लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। बड़ई अपनी आरियाँ और हथौड़े साथ लाये, कसाई अपने छुरों के साथ आये, राजगीर और मकान बनाने वाले कुदालें उठाये हुए थे। उन्मत्त थे। मसजिद के अन्दर धर्म आचार्य एकत्रित हुए थे। बहाउल्लाह उनके सामने खड़े हुए और बड़ी विद्वता के साथ उनके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। विशेषकर मुख्य आचार्य के सभी तर्कों का खंडन कर बहाउल्लाह ने उसे बिल्कुल चुप करा दिया।

बाब के लेखों के कुछ शब्दों के अर्थों को लेकर इन में से दो मुल्लाओं के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। उन पर अशुद्ध कथन का आरोप लगाते हुए उन्होंने बहाउल्लाह को चुनौती दी कि यदि संभव हो सके तो वे उनका बचाव करें। इन मुल्लाओं की बुरी तरह मान हानि हुई क्योंकि बहाउल्लाह ने समूची सभा के सामने यह सिद्ध कर दिया कि बाब ने बिल्कुल सही कहा था और यह आरोप अज्ञानता के कारण लगाया गया था।

परास्त व्यक्तियों ने अब उन्हें पाँव के तलवों पर बेंत लगाने की यातना का निशाना बनाया और पहले से ज्यादा गुस्से से भड़ककर वे उन्हें मसजिद की दीवारों से बाहर फाँसी स्थल पर ले आये जहाँ पर पथभ्रष्ट लोग उनके आने

बहाउल्लाह

की राह तक रहे थे।

फिर भी गवर्नर उन्हें फाँसी देने की मूलाओं की माँग को पूरा करने में घबरा रहा था। उस खतरे को अनुभव करते हुए जिससे यह सम्मानित बंदी घिरा हुआ था, उन्हें बचाने के लिए कुछ लोगों को भेजा गया। मसजिद की दीवार को तोड़कर और उस छिद्र में से बहाउल्लाह को सुरक्षित स्थान पर ले जाकर वे अपने कार्य में सफल हुए परंतु उन्हें रिहा नहीं किया गया क्योंकि उन्हें तेहरान भेजकर गवर्नर ने अपने कंधों का बोझ हल्का कर लिया। यहाँ पर उन्हें एक भूमिगत कोठरी में बंद कर दिया गया जहाँ पर दिन के उजाले का भी कभी गुजर नहीं होता था। उनके गले में एक भारी जंजीर डाल दी गई। इस जंजीर से पाँच अन्य बाबी भी बंधे हुए थे। ये जंजीर मजबूत और बड़े भारी काबलों और पेचों से आपस में जुड़ी हुई थी। उनके कपड़े और उनकी टोपी फटकर टुकड़े टुकड़े हो गये। इस भयानक स्थिति में उन्हें चार माह तक रखा गया।

इस दौरान उनका कोई भी मित्र उनके पास न पहुँच सका।

एक कारावास अधिकारी ने उन्हें विष देने का यत्न किया परंतु अत्यधिक पीड़ा देने के अतिरिक्त उन पर विष का कोई असर न हुआ।

कुछ समय पश्चात सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया तथा उनको और उनके परिवार को बगदाद में निष्कासित कर दिया जहाँ पर उन्होंने ग्यारह वर्ष व्यतीत किये। अपने दुश्मनों की सतर्क घृणा से घिरे होने के कारण इस दौरान उन्होंने बड़ी कठिन मुसीबतों का सामना किया।

बहाउल्लाह

बड़े साहस और धैर्य के साथ उन्होंने सभी यातनाओं और दुखों को झेला। प्रायः जब वे सुबह जागते थे तो उनको मालूम नहीं होता था कि सूर्यास्त तक वे जीवित भी रहेंगे या नहीं। इस दौरान प्रतिदिन मुल्ला लोग उनके पास आकर धर्म और तत्वमीमांसा के बारे में प्रश्न पछते।

आखिरकार तुर्की सरकार ने उन्हें कुस्तुनतुनिया में निष्कासित किया और वहां से उन्हें अदरना भेजा गया यहाँ पर वे पाँच वर्ष रहे। अन्ततः उन्हें दूर स्थित बंदी दुर्ग सेन्ट जीन डि अकरे में भेजा गया। यहाँ पर उन्हें दुर्ग के सैनिक भाग में कैद किया गया और उनकी बड़ी कड़ी निगरानी की जाने लगी। उस कैदखाने में जिन कठिनाइयों का उन्होंने सामना किया और जिन कष्टों को उन्होंने सहन किया उनका वर्णन करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल पा रहे। यह सब कुछ होते हुए भी इसी बंदीगृह से बहाउल्लाह ने युरोप के सभी बादशाहों के नाम पत्र लिखे और एक के अतिरिक्त ये सभी पत्र डाक द्वारा भेजे गये।

नसीरुद्दीन शाह के नाम पत्र एक ईरानी बहाई मिर्जा बदी खुरासानी को सौंपा गया जिसने इसे स्वयं शाह के हाथों तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया। यह साहसी व्यक्ति तेहरान के पास शाह के गुजरने की प्रतीक्षा करने लगा जिसका इरादा अपने ग्रीष्मकालीन महल को जाने के लिये उस रास्ते से यात्रा करने का था। साहसी संदेशवाहक शाह के पीछे पीछे उसके महल तक गया और कई दिनों तक प्रवेश द्वार के निकट मार्ग पर प्रतीक्षा करता रहा। मार्ग के उसी एक स्थान पर वह सदा प्रतीक्षा करते दिखाई देने लगा, यहाँ तक कि लोग अचंभा करने लगे कि वह वहाँ पर क्यों था?

बहाउल्लाह

आखिरकार शाह ने भी उसके बारे में सुना और अपने सेवकों को आज्ञा दी कि उस व्यक्ति को उसके सामने प्रस्तुत किया जाये।

"हे शाह के सेवको, मैं एक पत्र लाया हूँ जो मुझे केवल उन्हीं के हाथों देना है", बंदी ने कहा और तब बंदी ने शाह से कहा, "मैं आपके लिए बहाउल्लाह का एक पत्र लाया हूँ।"

उसे तुरंत पकड़ लिया गया और वे लोग उससे पूछताछ करने लगे जो ऐसी सूचना पाने के इच्छुक थे जो बहाउल्लाह के और अधिक उत्पीड़न में उनकी सहायक सिद्ध होती। बंदी एक शब्द भी न बोला। तब उन्होंने उसे यातनायें दीं, फिर भी वह चुप रहा। उसे बोलने के लिये मजबूर करने में असफल हो तीन दिनों के बाद उन्होंने उसे मार डाला। जब उसे यातनायें दी जा रही थी तो इन क्रूर व्यक्तियों ने उसके फोटो खींचे। (एक व्यक्ति ने, जो उस समय उपस्थित था जब बंदी को शाह के पास पत्र ले जाने के लिए कहा गया, उसे रूपान्तरित होते हुए देखा, वह तेजयुक्त हो गया था।)

शाह ने बहाउल्लाह का पत्र मुल्लाओं के हवाले दिया ताकि वे उसे इसकी व्याख्या बतायें। कुछ दिनों पश्चात मुल्लाओं ने शाह को बताया कि वह पत्र एक राजनैतिक शत्रु की ओर से था। शाह क्रोधित हो उठा और उसने कहा "यह कोई व्याख्या नहीं। मैं तुम लोगों को अपने पत्र पढ़ने और उनका उत्तर देने का वेतन देता हूँ, अतः आज्ञा का पालन हो।"

अल्प शब्दों में, नसीरुद्दीन शाह के नाम पत्र का भाव और अर्थ यह था: "अब जबकि समय आ गया है जब

बहाउल्लाह

ईश्वरीय गौरव का प्रयोजन प्रकट हो गया है, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे तेहरान आकर मुल्लाओं के उन प्रश्नों का उत्तर देने की अनुमति दी जाये जो वे मुझसे पूछना चाहते हों।”

“मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप अपने साम्राज्य के सांसारिक वैभव से अपने आपको अलग कर लें। उन सब महान अधिपतियों का ध्यान करें जो आपसे पहले हुए—उनके गौरव समाप्त हो चुके हैं।”

पत्र बड़े सुन्दर ढंग से लिखा गया था और निरंतर बादशाह को चेतावनी देता रहा और पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों ही संसारों में बहाउल्लाह के साम्राज्य की आगामी सफलताओं के बारे में उसे बताता रहा।

इस पत्र में दी गई चेतावनी पर बादशाह ने कोई ध्यान न दिया और अन्त तक उसी ढंग का जीवन व्यतीत करता रहा।

यद्यपि बहाउल्लाह बंदीगृह में थे फिर भी पावन आत्मा की महान शक्ति उनके साथ थी।

बंदीगृह में उन जैसा कोई और व्यक्ति नहीं हो सकता था। उन सभी कठिनाइयों के बावजूद जो उन्होंने सहन की, उन्होंने कभी शिकायत नहीं की।

अपने गौरव की प्रतिष्ठा के कारण उन्होंने गवर्नर अथवा नगर के अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों से मिलने से सदा इन्कार किया।

यद्यपि निगरानी बड़ी कड़ी थी फिर भी वे अपनी इच्छा से आते जाते थे। उनका देहावसान उस मकान में हुआ जो सेन्ट जीन डि अकरे से तीन किलोमीटर की दूरी पर था।

अच्छे विचारों को अवश्य ही कार्यरूप दिया जाये

नवम्बर, 8

संसार भर में सुन्दर लोकोक्तियों का गुणगान तथा अच्छे विचारों की प्रशंसा सर्वत्र सुनाई देती है। सभी लोग कहते हैं कि वे अच्छाई से प्रेम करते हैं और बुराई से नफरत। शुद्ध हृदयता प्रशंसनीय है जबकि झूठ बोलना घृणित है। वफादारी मानवता का एक सद्गुण है और गद्दारी एक कलंक। लोगों के हृदयों को प्रसन्न करना एक पुण्य काम है लेकिन उन्हें दुख देना गलत बात। कृपावान और दयावान होना सही है जबकि घृणा करना पाप है। न्याय एक सद्गुण है और अन्याय अधर्म। हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह दयावान हो, किसी को हानि न पहुँचाये और हर मूल्य पर ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहे। बुद्धिमत्ता अज्ञानता नहीं, प्रकाश, अन्धकार नहीं मानवता का गौरव है। अपना मुख ईश्वर की ओर मोड़ना उत्तम है, और उसकी उपेक्षा करना मूर्खता। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उत्थान की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन करें, उसको भ्रांति में न डालें और उसकी गिरावट का कारण न बनें। इस प्रकार के और बहुत से उदाहरण हैं।

पर ये सब लोकोक्तियाँ केवल शब्द मात्र हैं और हम उनमें से बहुत कम को कार्यरूप में परिणित होते देखते हैं। इसके प्रतिकूल हम देखते हैं कि लोग भावना और स्वार्थ के प्रवाह में बह जाते हैं, प्रत्येक व्यक्ति केवल यही सोचता है

कार्यरूप

कि किस प्रकार स्वयं उसको लाभ हो चाहे इस कारण उसके भाई की बरबादी हो। वे सभी स्वयं अपना भाग्य सुधारने को उत्सुक हैं और दूसरों के कल्याण की परवाह बिलकुल नहीं करते। वे केवल अपने ही सुख और शांति की चिन्ता करते हैं जबकि अपने सहमानवों की परिस्थिति के बारे में उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती।

दुर्भाग्यवश यह है वह पथ जिस पर अधिकतर लोग चल रहे हैं! परंतु बहाई बन्धु अवश्य ही ऐसे न हों, निश्चय ही वे इस परिस्थिति से ऊपर उठें। शब्दों के बजाय कर्म उनके लिये ज्यादा जरूरी हों। केवल शब्दों में ही नहीं बल्कि कर्मों में भी वे अवश्य दयावान हों। शब्दों में वे जो कहते हैं, हर अवसर पर कर्मों द्वारा वे अवश्य ही उसकी पुष्टि करें। उनके कर्म अवश्य ही उनकी ईमानदारी को प्रमाणित करें और उनका व्यवहार अवश्य ही दिव्य प्रकाश को व्यक्त करे।

आपका व्यवहार चिल्ला चिल्लाकर संसार से कहे कि निश्चय ही आप बहाई हैं क्योंकि कर्म ही दुनिया को संबोधित करते हैं और मानवता की उन्नति का कारण होते हैं।

यदि हम सच्चे बहाई हैं तो हमें कथन की आवश्यकता नहीं। हमारे कर्म संसार की सहायता करेंगे, सभ्यता फैलायेंगे, विज्ञान की उन्नति में सहायक होंगे और कलाओं के विकास का कारण बनेंगे। कर्म के बिना भौतिक जगत में कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता और न ही बिना सहायता केवल मात्र शब्द मनुष्य का आध्यात्मिक जगत में विकास कर सकते हैं। केवल दिखावटी प्रेम द्वारा ही प्रभु भक्तों ने

बपतिस्मा का सही अर्थ

पवित्रता प्राप्त नहीं की बल्कि सक्रिय सेवा के धैर्यपूर्ण जीवन द्वारा वे संसार में प्रकाश लायें हैं।

अतः प्रयास करें कि आपके कार्य दिन प्रतिदिन सुन्दर प्रार्थनाओं का रूप धारण कर लें। ईश्वर की ओर मुख मोड़ें और सदा वही काम करने की कोशिश करें जो सही और उत्तम हो। दरिद्रों को समृद्ध बनायें, गिरे हुए को उठायें, दुखियों को दिलासा दें, रोगियों को स्वास्थ्य दें, सहमं हुओं को आश्वासन दें, पीड़ितों की रक्षा करें, निराशा को आशा बाँधायें, निराश्रितों को आश्रय दें।

सच्चे बहाई का यही काम है और इसी की उससे आशा की जाती है। यदि हम यह सब करने का प्रयास करते हैं तो हम सच्चे बहाई हैं, परन्तु यदि हम इसकी अवहेलना करते हैं तो हम प्रकाश के अनुयायी नहीं और हमें यह नाम धारण करने का कोई अधिकार नहीं।

सभी हृदयों का हाल जानने वाला ईश्वर जानता है कि कहाँ तक हमारे जीवन हमारे शब्दों को कार्य रूप में परिणित करते हैं।

जल और अग्नि द्वारा बपतिस्मा का सही अर्थ

नवम्बर 9

सेन्ट जॉन के अनुसार गॉस्पल में ईसा ने कहा है:

“जब तक मनुष्य जल और अग्नि से उत्पन्न नहीं होता, वह स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता” (सेन्ट जॉन iii 5) पुरोहितों ने इसका अर्थ यह लगाया है कि मुक्ति के

बपतिस्मा का सही अर्थ

लिये बपतिस्मा आवश्यक है। एक अन्य गॉस्पल में यह कहा गया है: "वह पवित्र आत्मा और अग्नि द्वारा तुम्हें बपतिस्मा करेगा।" (सेन्ट मैथ्यू iii II)

इस प्रकार बपतिस्मा का जल और अग्नि एक ही वस्तु हैं। इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि जिस 'जल' की चर्चा की गई है वह भौतिक जल हो क्योंकि यह 'अग्नि' से बिल्कुल विपरीत है और एक दूसरे का नाश करता है। गॉस्पल में जब ईसा 'जल' की चर्चा करते हैं तो उनका संकेत उस जल की ओर होता है जो जीवन का कारण होता है, क्योंकि जल के बिना कोई भी सांसारिक प्राणी जीवित नहीं रह सकता—खनिज, वनस्पति, पशु और मानव, ये सब अपने अस्तित्व के लिये जल पर ही निर्भर हैं। जी हाँ, ताजा वैज्ञानिक खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि खनिज पदार्थ में भी एक प्रकार का जीवन होता है और अपने अस्तित्व के लिये उसे जल की आवश्यकता होती है।

जल जीवन का कारण है और जब ईसा जल के बारे में चर्चा करते हैं तो वे उस वस्तु की ओर संकेत करते हैं जो अनंत जीवन का कारण है।

जिस जीवनदायक जल की वे चर्चा करते हैं वह अग्नि के समान है क्योंकि वह प्रभु प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं, और इस प्रेम का अर्थ है हमारी आत्माओं का जीवन।

प्रभु प्रेम की ज्वाला से वह आवरण जल जाता है जो हमें स्वर्गिक वास्तविकताओं से अलग करता है, और स्पष्ट दृष्टि के साथ सद्गुण और पवित्रता के पथ पर सदा उन्नति करते हुए और विश्व के लिए प्रकाश का साधन बनते हुए हम सब आगे बढ़ने और ऊपर उठने के लिये संघर्ष करने के

बपतिस्मा का सही अर्थ

योग्य बनते हैं।

प्रभु प्रेम से बढ़कर महान और शुभ वस्तु और कोई नहीं। यह रोगियों को स्वास्थ्य, घायलों को मरहम, विश्व भर को आनंद और सात्वना प्रदान करता है और केवल इसी के द्वारा मनुष्य अमर जीवन प्राप्त कर सकता है। सभी धर्मों का सार प्रभु है और यही सभी पावन शिक्षाओं की आधारशिला है।

यह प्रभु प्रेम ही था जिसने अब्राहम, आईज़क तथा जैकब का मार्गदर्शन किया, जिसने मिस्र में जोज़फ को शक्ति दी और मूसा को साहस एवं धैर्य प्रदान किया।

प्रभु प्रेम द्वारा ही ईसा मसीह को उनके आत्म उत्सर्ग और निष्ठापूर्ण आदर्श जीवन के प्रेरणादायक उदाहरण के साथ संसार में भेजा गया। वे लोगों के लिये अमर जीवन का संदेश लाये। यह प्रभु प्रेम ही था जिसने हजरत मोहम्मद को अरब वासियों को पाशाविक अपमान की गहराइयों से अस्तित्व की उच्च स्थिति में लाने की शक्ति प्रदान की।

यह प्रभु प्रेम ही था जिसने बाब को बल दिया, उन्हें महान बलिदान के लिए तैयार किया और उन्होंने अपने को स्वेच्छा से हजार गोलियों का निशाना बनवाया।

अन्ततः, यह प्रभु प्रेम ही था जिसने पूर्व को बहाउल्लाह प्रदान किया और अब उनकी शिक्षाओं के प्रकाश का प्रसार पश्चिम में दूर दूर तक और उत्तर ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक हो रहा है।

अतः मैं आप में से प्रत्येक को निर्देश करता हूँ कि इसके सौन्दर्य और शक्ति को अनुभव कर प्रत्येक हृदय में प्रभु प्रेम का ज्ञान भरने के लिये आप अपने सारे विचारों, शब्दों तथा कर्मों का उत्सर्ग कर दें।

"लि अलायन्स स्पिरिच्युलिस्ट" में प्रवचन

सेल डि लि एथीनी,
सेन्ट जर्मन, पैरिस,
नवम्बर 9

मैं आपके आतिथ्य के लिए आपका आभारी हूँ और आपके आध्यात्मिक झुकाव पर बड़ा प्रसन्न हूँ। मैं ऐसी सभा में उपस्थित होकर बहुत खुश हूँ जो दिव्य संदेश को सुनने के लिए आयोजित हुई है। यदि आप यथार्थ के चक्षु से देखें तो इस स्थान पर आपको आध्यात्मिकता की महान लहरें दृष्टि गोचर होंगी। पावन आत्मा की शक्ति यहां पर सबके लिए है। परमात्मा की स्तुति हो कि आपके हृदय दिव्य उत्साह से उत्प्रेरित हैं। आपकी आत्मायें उत्साह के सागर की लहरों के समान हैं। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट लहर है परन्तु सागर एक ही है, सभी लोग परमात्मा में संगठित हैं।

प्रत्येक हृदय एकता का प्रसार करे ताकि सबके लिये उस एक ही स्रोत का प्रकाश पूर्ण दीप्ति के साथ जगमगा उठे। हम केवल अलग अलग लहरों का ही ध्यान न करें, अपितु समूचे सागर का विचार करें। हम व्यैक्तिकता से सम्पूर्णता की ओर उन्नति करें। महान आत्मा एक महान सागर के समान है और मानव आत्मायें इसकी लहरों के तुल्य हैं।

पावन धर्मग्रंथों में हमें बताया गया है कि पृथ्वी पर नवीन जेरूसलम प्रकट होगा। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि यह दैवी नगर

'लि अलायन्स स्पिरिच्युलिस्ट'

भौतिक पत्थरों और गारे से नहीं बना हुआ परन्तु यह ऐसा नगर है जो मानव हाथों से न बनकर स्वर्ग में बना है और अमर है।

यह एक भविष्यसूचक संकेत है जिसका अर्थ है लोगों के हृदयों में ज्ञान प्रसार के लिये दिव्य शिक्षाओं का पुनः आगमन। काफी लंबे समय से इस पावन मार्गदर्शन ने मानवता के जीवन पर शासन नहीं किया। परन्तु, अन्ततः अब नवीन जेरूसलम के पावन नगर का संसार में आगमन हुआ। पूर्वी आकाश में यह पुनः प्रकट हुआ है सारे विश्व को देदीप्यमान करने के लिये इसकी दीप्ति का प्रकाश ईरान के क्षितिज से प्रकट हुआ है। इन दिनों हम दिव्य भविष्यवाणी को पूरा होते हुए देख रहे हैं। जेरूसलम का लोप हो गया था। दैवी नगर का ध्वंस हो गया था, अब इसका पुनर्निर्माण हो गया है: इसको धूल में मिला दिया गया था, परन्तु अब इसकी दीवारों और कलशों को फिर से बना दिया गया है और अपनी नवीन तथा गौरवमयी सुन्दरता के साथ वे अपना शीष ऊँचा उठाये खड़े हैं।

पश्चिमी जगत में भौतिक समृद्धि की जीत हुई है जबकि पूर्व में आध्यात्मिक सूर्य चमका है।

पैरिस में मैं इस जैसी सभा को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ जहाँ पर आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति एकता में परस्पर मिलती हैं।

मनुष्य—वास्तविक मनुष्य—आत्मा है, शरीर नहीं। यद्यपि शारीरिक रूप से मनुष्य पशु जगत से संबंध रखता है, फिर भी उसकी आत्मा अन्य सारी सृष्टि से उसको उत्कृष्ट बनाती है। देखिये, किस प्रकार सूर्य का प्रकाश पार्श्व संसार को

‘लि अलायन्स स्पिरिच्युलिस्ट’

जगमगा देता है। ठीक इसी प्रकार दिव्य प्रकाश आत्मा जगत पर अपनी किरणें डालता है। यह आत्मा ही है जो मानव प्राणी को दैवी अस्तित्व बना देती है।

पावन आत्मा की शक्ति द्वारा, जो उसकी आत्मा के साधन से काम करती है, मनुष्य वस्तुओं की दिव्य वास्तविकता को समझ सकने में समर्थ है। कला और विज्ञान की सभी महान कृतियाँ दिव्य आत्मा की इस शक्ति की साक्षी हैं।

वही दिव्य आत्मा अनंत जीवन प्रदान करती है।

केवल वही लोग जिन्हें दिव्य आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जायेगा, सभी लोगों को एकता के बंधन में जोड़ने में सफल हो सकेंगे। दिव्य आत्मा की शक्ति द्वारा ही आध्यात्मिक विचार के पूर्वी जगत का पश्चिम के कार्य क्षेत्र के साथ सम्मिश्रण हो सकता है ताकि पार्थिव संसार दिव्य बन जाये।

इसका अर्थ यह है कि जो लोग सर्वोच्च उद्देश्य की पूर्ति में कार्यरत हैं वे दिव्यात्मा की सेना हैं।

दिव्य जगत का प्रकाश अंधकार और भ्रम के जगत से युद्धव्यस्त है। सत्यता के सूर्य की किरणें अंधविश्वास और गलतफहमियों के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर देती हैं।

आप परमात्मा का अंग है। आप के लिये, जो सत्य प्राप्ति के इच्छुक हैं, बहाउल्लाह का प्रकाशन परम आनंद के रूप में आएगा। यह शिक्षा परमात्मा की है और इसमें ऐसी कोई आज्ञा नहीं जो दिव्य आत्मा की न हो।

आत्मा को भौतिक शरीर की ज्ञानेन्द्रियों द्वारा नहीं देखा जा सकता सिवाय इसके जैसे इसकी अभिव्यक्ति बाह्य चिन्हों और कार्यों द्वारा की गई हो। मानव शरीर दृष्टिगोचर है, आत्मा अगोचर। फिर भी यह आत्मा ही है जो मनुष्य की

‘लि अलायन्स स्परिच्युलिस्ट’

क्षमता का निर्देशन करती है और उसकी मानवता पर शासन करती है।

आत्मा की दो मुख्य क्षमतायें हैं। (क) जैसे मनुष्य के नेत्रों, कानों और दिमाग द्वारा बाहरी परिस्थितियों की जानकारी आत्मा तक पहुँचती है, उसी प्रकार आत्मा भी अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों को दिमाग के जरिये भौतिक शरीर के हाथों और जिह्वा तक पहुँचाती है और इस प्रकार अपनी अभिव्यक्ति करती है। आत्मा की स्फूर्ति ही जीवन का सार है। (ख) आत्मा की दूसरी क्षमता अपने आपको कल्पना जगत में व्यक्त करती है जहाँ पर स्फूर्तियुक्त आत्मा का अस्तित्व होता है और जहाँ पर यह भौतिक ज्ञानेन्द्रियों की सहायता के बिना काम करती है। कल्पना जगत में आत्मा भौतिक नेत्रों की सहायता के बिना देखती है, भौतिक कानों की सहायता के बिना सुनती है और शारीरिक हरकत पर निर्भर न रहकर विचरण करती है। अतः यह प्रत्यक्ष है कि मानव आत्मा की स्फूर्ति साधारण ज्ञानेन्द्रियों को प्रयोग कर भौतिक शरीर द्वारा काम कर सकती है तथा उनकी सहायता के बिना कल्पना जगत में भी रह और काम कर सकती है। निःसंदेह इससे यह सिद्ध होता है कि मानव आत्मा को उसके शरीर पर और पदार्थ पर श्रेष्ठता प्राप्त है।

उदाहरणस्वरूप,

इस दीपक को ही देखिये। क्या इसके अंदर का प्रकाश दीपक के खोल से श्रेष्ठ नहीं? दीपक की आकृति चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, यदि इसमें प्रकाश न हो तो इसका उद्देश्य पूरा नहीं होता, यह निष्प्राण होता है—एक मृत वस्तु! दीपक को प्रकाश की आवश्यकता होती है परन्तु प्रकाश को दीपक

की नहीं।

आत्मा को शरीर की आवश्यकता नहीं होती परन्तु शरीर को आत्मा की आवश्यकता होती है वरना यह जीवित नहीं रह सकता। आत्मा बिना शरीर जीवित रह सकती है परन्तु आत्मा के बिना शरीर मर जाता है।

यदि कोई व्यक्ति अपने नेत्र या श्रवणशक्ति खो बैठे, उसके हाथ पाँव कट जायें, फिर भी उसकी आत्मा उसके शरीर में बनी रहती है; तथा दिव्य सद्गुणों को व्यक्त कर सकती है। दूसरी ओर, आत्मा के बिना किसी सम्पूर्ण शरीर का अस्तित्व भी असंभव बन जायेगा।

पावन आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्ति सत्य के दिव्य अवतारों में होती है। परम आत्मा की शक्ति द्वारा स्वर्गिक शिक्षा मानवता के संसार को प्रदान की गई है। परम आत्मा की शक्ति द्वारा ही मानव संतान को अनंत जीवन प्राप्त हुआ है। परम आत्मा की शक्ति द्वारा ही दिव्य तेज पूर्व से पश्चिम पर देदीप्यमान हुआ है और उसी परम आत्मा की शक्ति द्वारा मानवता के दिव्य गुण प्रत्यक्ष होंगे।

हमारी सबसे बड़ी चेष्टा यह हो कि हम सांसारिक वस्तुओं से विरक्त बनें। निश्चय ही, हम दिव्य शिक्षा के परामर्श का अनुसरण करने, एकता और वास्तविक समता के उद्देश्य की सेवा करने, दयापूर्ण बनने और सर्वोच्च परमात्मा के प्रेम को सभी लोगों पर प्रतिबिम्बित करने का यत्न करने हेतु और अधिक आध्यात्मिक बने; अधिक दीप्तिमान हों, ताकि हमारे सभी कामों में प्रभु के प्रकाश की झलक मिले, इस उद्देश्य से कि सारी मानवता एक हो जाए, उसका तूफानी समुद्र शांत हो जाए, जीवन सागर की सतह से सभी प्रचण्ड लहरें लुप्त हो

'लि अलायन्स स्पिरिच्युलिस्ट'

जायें और वह शांत और स्थिर हो जाए। तब ही नवीन जेरूसलम का नगर मानवता को दृष्टिगोचर होगा, वह इसके द्वारों से इसमें प्रवेश करेगा और दैवी कृपा प्राप्त करेगा।

मैं ईश्वर का आभारी हूँ कि आज शाम आप लोगों के बीच उपस्थित हो सका तथा आपकी आध्यात्मिक भावना के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपका दैवी उत्साह बढ़े तथा परमात्मा में एकता की शक्ति का संवर्द्धन हो ताकि भविष्यवाणियाँ पूरी हों और ईश्वरीय प्रकाश की इस महान शताब्दी में धर्मग्रंथों में लिखित सभी शुभ समाचारों की पूर्ति हो। यही वह गौरवपूर्ण समय है जिसके बारे में प्रभु यसूह मसीह ने हमें यह प्रार्थना करने को कहा था: "धरती पर तेरे साम्राज्य का आगमन हो और यहाँ भी तेरी इच्छा वैसे ही पूर्ण हो जैसे स्वर्ग में होती है।" मेरा विचार है कि यह आप की भी आशा और महत्वाकांक्षा है।

हम एक ही उद्देश्य में संगठित हैं और आशा करते हैं कि सभी एकरूप हो जाएंगे और प्रत्येक हृदय हमारे दैवी पिता, परमात्मा, के प्रेम से जगमगा उठेगा।

हमारे सारे काम आध्यात्मिक हों और हमारी सभी रुचियाँ तथा अनुराग गौरव के साम्राज्य में केन्द्रित हों।

आत्मा की उन्नति

आत्मा की उन्नति

15 रुए ग्रियूज़, पैरिस।

नवम्बर 10

प्रकृति में पूर्ण विश्रान्ति नहीं होती। सभी वस्तुएँ या तो उन्नति करती हैं या पिछड़ जाती हैं। प्रत्येक वस्तु या तो आगे बढ़ती है या पीछे हटती है, कोई भी वस्तु बिना हरकत के नहीं होती। जन्म से ही मनुष्य शारीरिक तौर पर उन्नति करता रहता है जहाँ तक कि वह प्रौढ़ता को प्राप्त होता है। तब जीवन के शिखर पर पहुँचकर उसका पतन आरंभ हो जाता है, उसके शरीर की शक्तियाँ और क्षमताएँ क्षीण हो जाती हैं और धीरे-धीरे वह मृत्यु की घड़ी के पास पहुँच जाता है। इसी प्रकार पौधा भी बीज रूप से प्रौढ़ता तक उन्नति करता रहता है और फिर इसकी जीवन शक्ति कम होना शुरू हो जाती है यहाँ तक कि वह क्षीण होकर मुरझा जाता है। पक्षी किसी विशेष ऊँचाई तक उड़ान भरता है और अपनी उड़ान के उच्चतम बिन्दु तक पहुँचकर धरती पर उतरना आरंभ कर देता है।

इस प्रकार यह प्रत्यक्ष है कि सारे अस्तित्व के लिये हरकत अनिवार्य है। सभी भौतिक वस्तुएँ एक बिन्दु विशेष तक उन्नति करती हैं और फिर उनका क्षय आरंभ हो जाता है। यह नियम सारी भौतिक सृष्टि पर लागू होता है।

आइये, अब हम आत्मा का ध्यान करें। हमने देखा है कि अस्तित्व के लिये हरकत आवश्यक है, कोई भी प्राणधारी वस्तु बिना हरकत नहीं होती। सारी सृष्टि चाहे वह खनिज, वनस्पति या पशु जगत हो, हरकत के नियम के पालन के

आत्मा की उन्नति

लिए बाध्य है, निश्चय ही यह या तो उन्नति करे या अवनति। परंतु मानव आत्मा के पतन का प्रश्न ही नहीं उठता। इसकी हरकत केवलमात्र संपूर्णता की ओर होती है, विकास और उन्नति ही आत्मा की केवल हरकत है।

दिव्य संपूर्णता असीम है। अतः आत्मा की उन्नति भी असीम है। मानव जन्म से ही उसकी आत्मा की उन्नति आरंभ हो जाती है, बुद्धि का विकास होता है और ज्ञान में वृद्धि होती है।

यदि आत्मा जीवित नहीं रहती तो इसका भी कुछ अर्थ नहीं निकलता। यही तथ्य कि हमारी आत्मिक अंतःप्रेरणा जो कभी व्यर्थ नहीं होती हमारे शरीर का अंत होने पर भी आत्मा जीवित रहती है। सृष्टित भौतिक प्राणियों के सभी अंश सीमित होते हैं परन्तु आत्मा की कोई सीमा नहीं होती।

सभी धर्मों में यह विश्वास पाया जाता है कि शरीर के नष्ट होने पर भी आत्मा शेष रह जाती है। प्रिय मृत व्यक्तियों के लिये ईश्वर से विनती की जाती है, उनकी आत्मा की उन्नति तथा उनके पापों की क्षमा हेतु प्रार्थनायें की जाती हैं। यदि शरीर के साथ आत्मा का भी नाश हो जाता तो ये सब व्यर्थ होता। इसके अतिरिक्त शरीर के स्वतंत्र होने के पश्चात् यदि संपूर्णता की ओर आत्मा की प्रगति संभव न होती तो इन सब प्रेम पूर्ण प्रार्थनाओं तथा उपासना का क्या लाभ है?

पावन लेखों में हम पढ़ते हैं कि "सभी सद्कार्यों की पुनः स्थापना होती है।" अर्थात् सभी अच्छे कार्यों का स्वयं अपना परितोषक होता है। अब, यदि आत्मा जीवित न रहती तो, इसका भी कुछ अर्थ न होता।

यही तथ्य है कि हमारी आध्यात्मिक प्रकृति, जो निश्चय ही बेकार नहीं, हमें अपने उन प्रिय जनों के कल्याण हेतु

आत्मा की उन्नति

प्रार्थना के लिये प्रोत्साहन देती है जो इस भौतिक संसार से प्रस्थान कर चुके हैं। क्या यह उसके अस्तित्व की निरन्तरता का साक्षी नहीं?

आत्मा के संसार में गिरावट नहीं होती। मृत्युलोक परस्पर विरोधों, प्रतिकूलताओं का संसार है। गति अनिवार्य होने के कारण प्रत्येक वस्तु निश्चित रूप से या तो आगे बढ़े या पीछे हटे। आत्मा के क्षेत्र में पीछे हटना संभव ही नहीं, सारी गति निश्चित रूप से संपूर्णता की स्थिति की ओर होती है। पदार्थ के संसार में 'उन्नति' आत्मा की अभिव्यक्ति है। मानव की बुद्धि, उसकी तर्क शक्तियाँ, आत्मा का ज्ञान, उसकी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, ये सब आत्मा की अभिव्यक्ति होते हुए आध्यात्मिक उन्नति के अवश्यभावी नियम का भाग हैं और इसलिए अनिवार्य तौर पर अमर है।

आपसे मुझे आशा है आप आत्मा तथा पदार्थ दोनों ही लोकों में उन्नति करेंगे, उनकी बुद्धि प्रखर होगी, आपके ज्ञान में वृद्धि होगी, और उनकी सूझबूझ बढ़ेगी।

आप अवश्य ही सदा आगे बढ़ें और कभी न रुकें, निष्क्रियता से बचें, जो पीछे ले जाने वाला, पतन की ओर पहला कदम है।

सम्पूर्ण भौतिक सृष्टि नश्वर है। यह पार्थिव शरीर अणुओं से बने हैं। जब ये परमाणु बिखरने लगते हैं तो पृथकीकरण आरंभ हो जाता है, तब उसका आगमन होता है जिसे हम मृत्यु कहते हैं। परमाणुओं का यह संयोजन जो शरीर या किसी सृष्टित अस्तित्व के मरणशील तत्व की रचना करता है, अस्थायी होता है। जब आकर्षण शक्ति, जो इन परमाणुओं को इकट्ठा किये रखती है, समाप्त हो जाती है, तो

आत्मा की उन्नति

इस रूप में शरीर के अस्तित्व का अंत हो जाता है।

आत्मा की बात अलग है। आत्मा तत्वों का संयोजन नहीं। यह परमाणुओं से मिलकर नहीं बनती, यह एक ही अभाज्य तत्व से बनती है और इसलिए अनंत होती है। भौतिक सृष्टि के दायरे से यह बिल्कुल परे है। यह अमर होती है।

विज्ञान दर्शन ने सिद्ध किया है कि सादा तत्व, 'सादा' अर्थात् जो संयोजित नहीं होता, अविनाशी तथा अनंत होता है। तत्वों का संयोजन न होने के कारण आत्मा चारित्रिक रूप से सादा तत्व होती है और इसलिए इसके अस्तित्व का अंत नहीं होता।

एक ही अविभाज्य तत्व से बनी होने के कारण आत्मा न तो छिन्न-भिन्न हो सकती है और न ही नष्ट, अतः इसकी समाप्ति का कोई कारण ही नहीं पैदा होता। सभी जीवित वस्तुएँ अपने अस्तित्व के चिन्ह प्रदर्शित करती हैं, अर्थात् जिनको वे व्यक्त करती हैं या जिनकी वे साक्षी देती हैं यदि उसका अस्तित्व न होता तो ये संकेत स्वयं अपने आप प्रकट नहीं हो सकते थे। जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं होता, निश्चय वह अपने अस्तित्व का संकेत नहीं दे सकती। आत्मा के अस्तित्व के विविध चिन्ह सदा सर्वदा हमारे सम्मुख प्रस्तुत रहते हैं।

ईसा मसीह की आत्मा के चिह्न, उनकी दिव्य शिक्ष के प्रभाव, आज भी हमारे बीच विद्यमान हैं और अमर हैं।

यह तो मानी हुई बात है कि जिस वस्तु का अस्तित्व न हो वह चिह्नों द्वारा देखी नहीं जा सकती। कुछ लिखने के लिये मनुष्य का अस्तित्व होना आवश्यक है—वह जिसका अस्तित्व नहीं, लिख नहीं सकता। स्वयं लेखन कार्य लेखक की आत्मा तथा बुद्धि का प्रतीक है। पावन लेख (जिसकी शिक्षा सदा

आत्मा की उन्नति

सर्वदा एक ही प्रकार की होती है) आत्मा की निरंतरता को सिद्ध करते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति के उद्देश्य का विचार कीजिए। क्या यह संभव है कि धरती पर मनुष्य के जीवन के कुछ वर्ष के ही लक्ष्य को बना कर अनगिनत युगों में उन्नति और विकास करने के लिए सब कुछ उत्पन्न किया जाये? क्या यह बात असंभव नहीं कि अस्तित्व का यह उद्देश्य अंतिम है?

खनिज पदार्थ का तब तक विकास होता रहता है जब कि यह वनस्पति के जीवन में शामिल नहीं हो जाता। वनस्पति की उन्नति तब तक होती रहती है जहाँ तक कि यह अपना जीवन पशु को प्रदान कर देती है। अपनी बारी पर मानव का आहार बनकर पशु मानव जीवन में विलीन हो जाता है।

इस प्रकार मनुष्य को सारी सृष्टि के योगफल के रूप में दिखाया गया है। वह सृष्टि के सभी जीवों में उत्कृष्ट है, ऐसा लक्ष्य जिसकी ओर अस्तित्व के अनगिनत युगों ने उन्नति की है।

अधिक से अधिक मनुष्य इस संसार में चार बीसी (अस्सी) वेंदस अर्थात् नब्बे वर्ष व्यतीत करता है—निश्चय ही यह अल्प समय है।

शरीर छोड़ने पर क्या मनुष्य के अस्तित्व का अंत हो जाता है? यदि उसके जीवन का अंत हो जाता है, तो पिछला सारा विकास बेकार हो गया, सब कुछ व्यर्थ हुआ। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि सृष्टि का इससे बड़ा कोई उद्देश्य नहीं?

आत्मा अमर है, अनंत है।

भौतिकवादी पूछते हैं: "आत्मा कहाँ है? यह क्या है? हम

आत्मा की उन्नति

इसे न तो देख सकते हैं और न ही स्पर्श कर सकते हैं।”

इसका उत्तर हमें निःसंदेह इस प्रकार देना चाहिये: खनिज पदार्थ चाहे कितना ही विकास क्यों न कर ले, वह वनस्पति जगत को समझ नहीं सकता। परन्तु ज्ञान का अभाव वनस्पति के अस्तित्व का न होना सिद्ध नहीं करता।

पौधा चाहे कितने ही ऊँचे अंश तक उन्नति कर ले, यह पशु जगत को समझ पाने में असमर्थ है। यह अज्ञानता इस बात का प्रमाण नहीं है कि पशु जगत का कोई अस्तित्व ही नहीं।

पशु विकास चाहे कितना ही ज्यादा हो, परन्तु वह मनुष्य की बुद्धि की कल्पना नहीं कर सकता, और न ही वह उसकी आत्मा की प्रकृति का अनुभव कर सकता है। फिर भी इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि मनुष्य के पास बुद्धि या आत्मा नहीं होती। इससे केवल यही पता चलता है कि अस्तित्व की एक किस्म अपने से श्रेष्ठ किस्म को समझ सकने में असमर्थ है।

पुष्प मनुष्य जैसी किसी वस्तु के बारे में अनभिज्ञ हो सकता है परन्तु इसके अज्ञान का तथ्य मानवता के अस्तित्व में कोई रुकावट नहीं होता।

इसी प्रकार यदि भौतिकवादी आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते तो उनका अविश्वास यह सिद्ध नहीं करता कि आत्मा जगत जैसा कोई क्षेत्र ही नहीं। मनुष्य के विवेक का अस्तित्व ही उसके अमरत्व को प्रमाणित करता है। इसके अतिरिक्त, अंधकार प्रकाश के अस्तित्व को सिद्ध करता है। क्योंकि प्रकाश के बिना छाया हो ही नहीं सकती। दरिद्रता समृद्धि के अस्तित्व को सिद्ध करती है, वरना समृद्धि के बिना हम दरिद्रता का नाप-तोल कैसे कर सकते? अज्ञानता

आत्मा की उन्नति

सिद्ध करती है कि ज्ञान का अस्तित्व है, क्योंकि ज्ञान के बिना अज्ञानता कैसे हो सकती है?

अतः मृत्यु के विचार अमरत्व के अस्तित्व की पूर्वकल्पना है—क्योंकि यदि अनंत जीवन न होता तो इस संसार के जीवन को नापने का कोई साधन न होता।

यदि आत्मा अमर न होती तो ईश्वरावतार इतने कठोर दुःखों को क्यों सहन कर पाते।

ईसा मसीह ने सूली पर भयानक मृत्यु का कष्ट क्यों उठाया?

हजरत मोहम्मद ने अत्याचार क्यों सहे?

बाब ने सर्वोच्च बलिदान क्यों दिया? बहाउल्लाह ने अपने जीवन के अधिकांश वर्ष बंदीगृह में क्यों व्यतीत किये?

ये सारे महान कष्ट सहन होते यदि इनका उद्देश्य आत्मा के अनंत जीवन को सिद्ध करना न होता?

मसीह ने कष्ट उठाये। उन्होंने अपनी आत्मा के अमरत्व के कारण ही इन सभी दुःखों को स्वीकार किया। यदि मनुष्य चिंतन करे तो वह उन्नति की आध्यात्मिक विशेषता को समझ सकता है कि किस प्रकार सभी वस्तुएं निम्न श्रेणी से उच्च श्रेणी को अग्रसर होती हैं।

केवल बुद्धि विहीन मनुष्य ही इन सब बातों पर विचार करने के बाद यह कल्पना कर सकता है कि सृष्टि की महान परियोजना की उन्नति अचानक बंद हो सकती है अथवा विकास ऐसे अपर्याप्त अन्त को प्राप्त होगा।

भौतिकवादी जो इस प्रकार तर्क करते हैं और दलील देते हैं कि हम आत्मा जगत को देख सकने या परमात्मा के वरदानों को समझने में असमर्थ हैं, निश्चय ही पशु समान हैं जो बुद्धि

ईच्छाएँ और प्रार्थनायें

विहीन होते हैं। नेत्र होते हुए भी देख नहीं सकते, उनके कान होते हैं परंतु सुन नहीं सकते। दृष्टि और श्रवणशक्ति का यह अभाव किसी और बात को नहीं बल्कि स्वयं उनकी हीनता का प्रमाण है जिसके बारे में हम कुरान में पढ़ते हैं कि "वे ऐसे लोग हैं जो परम आत्मा की ओर अंधे और बहरे हैं।" वे ईश्वर के महान उपहार, समझने की शक्ति का प्रयोग नहीं करते जिसके द्वारा वे आत्मा के चक्षुओं से देख सकते हैं, आध्यात्मिक कर्णों से सुन सकते हैं और दिव्य प्रकाश से प्रदीप्त हृदय से समझ भी सकते हैं।

अनंत जीवन के विचार को समझ सकने में भौतिकवादी मन की असमर्थता इस बात का प्रमाण नहीं है कि जीवन का अस्तित्व ही नहीं।

उस अन्य जीवन को समझ सकना हमारे अपने आध्यात्मिक जन्म पर निर्भर है।

आपके लिये मेरी प्रार्थना है कि आपकी आध्यात्मिक क्षमतायें और आकांक्षाएँ दिनों-दिन बढ़ें और आप दैवी प्रकाश के गौरव को भौतिक पदों द्वारा अपनी आँखों से ओझल न होने दें।

अब्दुल-बहा की इच्छाएँ और प्रार्थनायें

नवम्बर 15

अब्दुल-बहा ने कहा:

आप सबका हार्दिक स्वागत है और मैं आपसे गहरा प्रेम

ईच्छाएँ और प्रार्थनायें

रखता हूँ।

दिन रात मैं आपके लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको बल मिले कि आप सब बहाउल्लाह के वरदानों में भाग लें और प्रभु साम्राज्य में प्रवेश करें।

मैं याचना करता हूँ कि देदीप्यमान की भाँति आप दिव्य प्रकाश से युक्त नये प्राणी बनें और योरुप के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक प्रभु प्रेम के ज्ञान का प्रसार हो।

आपके हृदय और मन असीम प्रेम से इतने भर जायें कि उनमें उदासीनता के लिये कोई स्थान शेष न रहे और आनन्दपूर्ण हृदयों के साथ पक्षियों की भाँति आप दिव्य दीप्ति में उड़ान भरें।

आपके हृदय चमचमाते दर्पणों की भाँति साफ सुथरे बन जायें जिनसे सत्यता का सूर्य गौरवपूर्ण तेज के साथ प्रतिबिम्बित हो।

प्रभु साम्राज्य के चिन्हों का अवलोकन करने हेतु आपके चक्षु खुल जायें और आपके बीच होती हुई दिव्य उद्घोषणा को पूरी समझदारी के साथ सुन सकने के लिए आपके कानों की बाधा दूर हो।

आपकी आत्माओं को सुख और सहायता प्राप्त हो और इस प्रकार शक्ति पाकर आप बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अनुसार जीवन यापन करने में समर्थ हों।

मैं आप में से प्रत्येक और सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप विश्व में प्रेम की प्रचण्ड ज्योति बनें और आपके प्रकाश की दीप्ति और आपके स्नेह की ऊष्णता ईश्वर के प्रत्येक दुःखी और उदास बालक को प्राप्त हो सके।

आप सदा के लिये प्रभु राज्य में चमकते सितारों की भाँति

शरीर, आत्मा और मन

ज्योतिर्मय और प्रकाशयुक्त बनें।

मैं आपको परामर्श देता हूँ कि आप गंभीरतापूर्वक बहाउल्लाह की शिक्षाओं का अध्ययन करें ताकि ईश्वर की कृपा से आप सच्चे और वास्तविक बहाई बन सकें।

शरीर, आत्मा और मन के संबंध में

4, ऐवेन्यु डिकेमोइन्स, पैरिस,

शुक्रवार, प्रातः

नवम्बर 17

मानव जगत के तीन अंश होते हैं—शरीर, आत्मा तथा मन। शरीर मनुष्य का भौतिक अथवा पाशविक अंश है। शारीरिक दृष्टिकोण से, मनुष्य पशु जगत का सहभागी है। मनुष्य तथा पशु दोनों ही के शरीर उन तत्वों से बने हैं जो आकर्षण शक्ति के नियमों द्वारा सूत्रबद्ध होते हैं।

पशु की भाँति मनुष्य को भी ज्ञानेन्द्रियों की क्षमताएँ प्राप्त हैं। वह ताप, शीत, भूख, प्यास आदि के आधीन है। पशु के विपरीत मनुष्य को एक विवेकपूर्ण आत्मा, मानव बुद्धि प्राप्त है।

मानव की यह बुद्धि उसके शरीर तथा उसकी अन्तरात्मा के बीच माध्यम का काम करती है।

जब मनुष्य, अपनी आत्मा द्वारा, अन्तरात्मा (मन) को ज्ञान से प्रकाशयुक्त कर लेता है तो वह सारी सृष्टि को अपने अंदर समो लेता है। चूँकि मनुष्य पूर्व की सभी वस्तुओं की पराकाष्ठा और इस तरह सभी पूर्व विकासों का योग फल है

शरीर, आत्मा और मन

इसलिये वह अपने अंदर सारे निम्न जगत को समाए हुए है। आत्मा के साधन से अन्तरात्मा द्वारा प्रकाशयुक्त मानव की देदीप्यमान बुद्धि ही उसे सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट बिन्दु बना देती है।

परन्तु दूसरी ओर जब मनुष्य अपने मन और हृदय को अन्तरात्मा के वरदानों के प्रति नहीं खोलता, बल्कि अपनी आत्मा को पार्थिव दिशा और अपनी प्रकृति को शारीरिक भाग की ओर उन्मुख करता है तब अपने उच्च स्थान से उनका पतन हो जाता है और वह निम्न पशु जगत के प्राणियों से भी हीन बन जाता है। इस हालत में मनुष्य की दशा बहुत बुरी होती है। क्योंकि यदि दिव्य आत्मा की श्वास की ओर उन्मुख आत्मा के आध्यात्मिक गुणों को उपयोग में न लाया जाए तो वे क्षीण और दुर्बल हो जाते हैं और अन्ततः अयोग्य बन जाते हैं। यदि आत्मा के केवल भौतिक गुणों का ही प्रयोग किया जाए तो वे बहुत अधिक शक्तिशाली बन जाते हैं और दुःखी तथा भ्रम ग्रस्त इंसान निम्न पशुओं से भी अधिक वहशी, अन्यायी, भ्रष्ट, क्रूर और द्वेषपूर्ण बन जाता है। उसकी सभी महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं को आत्मा की प्रकृति के निम्न स्तर से बल मिलता है और वह अधिकाधिक क्रूर बनता जाता है, यहाँ तक कि उसका सारा अस्तित्व उन पशुओं से बेहतर नहीं होता जो मर खप जाते हैं। ऐसे मनुष्य सदा बुरे काम करके, दुःख पहुँचाने और विनाशकारी योजना बनाने में व्यस्त रहते हैं। वे दिव्य दया की भावना से पूर्णतया वंचित होते हैं क्योंकि आत्मा के दिव्य गुण पर भौतिक गुण छा जाता है। इसके विपरीत यदि आत्मा की आध्यात्मिक प्रकृति इतनी शक्तिशाली बन जाये कि वह भौतिक पहलू को नियंत्रण में

शरीर, आत्मा और मन

रख सके तो मानव दिव्यता को प्राप्त हो जाता है। उसकी मानवता इतनी प्रतापशाली बन जाती है कि दिव्य सभा (देवताओं) के सद्गुण उसमें प्रत्यक्ष होने लगते हैं, वह प्रभु की दया का प्रसारण करता है और मानवता की आध्यात्मिक उन्नति को प्रोत्साहन देता है, क्योंकि वह उनके मार्ग दर्शन हेतु दीप ज्योति समान बन जाता है।

आप जानते हैं कि किस प्रकार आत्मा, शरीर और अन्तरात्मा के बीच माध्यम का काम करती है—इसी प्रकार यह पौधा (पास पड़ी मेज पर रखे नांगरी के एक छोटे से पौधे की और संकेत) बीज और फल के बीच माध्यम है। जब वृक्ष पर फल आता है और पक जाता है तो हम जान लेते हैं कि वृक्ष संपूर्ण है। यदि वृक्ष फल नहीं देता तो वह व्यर्थ उपज होगी जिससे कोई अभिप्राय पूरा नहीं होता।

जब किसी आत्मा को अन्तरात्मा मन का जीवन प्राप्त होता है तो इसका फल उत्तम होता है कि यह एक दैवी वृक्ष तुल्य बन जाती है। मैं चाहता हूँ कि आप इस उदाहरण को समझने का प्रयास करें। मुझे आशा है कि ईश्वर की अवर्णनीय उत्तमता आपको इतना बल देगी कि आपकी आत्मा के दिव्य गुण, जो उसे अन्तरात्मा के साथ जोड़ते हैं, सदा सर्वदा के लिए भौतिक पहलू को अधीनस्त कर और ज्ञानेन्द्रियों पर ऐसा काबू पा ले कि आत्मा स्वर्गिक साम्राज्य की संपूर्णताओं की निकटता प्राप्त कर ले। दिव्य प्रकाश की ओर दृढ़तापूर्वक उन्मुख हुए आपके चेहरे ऐसे देदीप्यमान हो जायें कि आपके सभी विचार, शब्द और कर्म आध्यात्मिक दीप्ति से देदीप्यमान हों जिनसे आपकी आत्माएँ भरपूर हैं, ताकि विश्व की सभाओं में आप अपने जीवन की सम्पूर्णता

शरीर, आत्मा और मन

को दर्शा सकें।

कुछ लोगों के जीवन केवल मात्र इस संसार की वस्तुओं में ही उलझे हुए हैं। उनके दिमाग बाहरी रीतियों और परम्परागत रुचियों से ऐसे घिरे हुए हैं कि वे अस्तित्व के किसी अन्य क्षेत्र तथा सभी वस्तुओं की आध्यात्मिक विशेषता से आंखें बन्द किये हुए हैं। वे सांसारिक और भौतिक उन्नति के बारे में ही सोचते हैं और उन्हीं के स्वप्न देखते हैं। प्रसिद्धि ऐन्द्रिय आनंद और सुखदायक वातावरण द्वारा उनकी सीमाएँ बंधी हुई हैं, उनकी उच्चतम आकांक्षाएँ सांसारिक स्थितियों और परिस्थितियों की सफलता पर केन्द्रित होती हैं। वे अपनी निम्न प्रवृत्तियों को दबाते नहीं, वे खाते हैं पीते हैं और सो जाते हैं। पशुओं के समान अपने स्वयं के शारीरिक कल्याण के अतिरिक्त वे और कुछ नहीं सोचते। यह सही है कि इन आवश्यकताओं को अवश्य ही पूरा किया जाये। जीवन एक ऐसा बोझ है जो हमें धरती पर रहते हुए उठाना ही पड़ता है परन्तु जीवन की निम्न वस्तुओं की चिन्ताओं को मनुष्य की समस्त आकांक्षाओं और विचारों पर हावी नहीं हो जाने देना चाहिए। हार्दिक इच्छाओं का लक्ष्य अधिक गौरवपूर्ण हो, मानसिक कार्यकलाप ऊँचे स्तर पर हों। लोग अपनी आत्माओं में दिव्य सम्पूर्णता की कल्पना करें और वहाँ पर दिव्य आत्मा की अक्षय कृपा के निवास हेतु स्थान बनायें।

आपकी अभिलाषा धरती पर दैवी सभ्यता की उपलब्धि हो। मैं आपके लिये सर्वश्रेष्ठ वरदान की याचना करता हूँ कि आप दिव्य आत्मा की शक्ति से इतने परिपूर्ण हों कि आप संसार के जीवन का कारण बन जाएँ।

संसार की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए बहाई अवश्य ही तन और मन से काम करें

नवम्बर 19:

ऐसी सभा का अवलोकन कर कितना आनंद होता है जैसे कि यह, क्योंकि वास्तव में यह "स्वर्गिक मनुष्यों" का आपस में मिल बैठना है।

हम सब एक ही दिव्य उद्देश्य में संगठित हैं, हमारा कोई भौतिक अभिप्राय नहीं, और हमारी मनोकामना विश्वभर में प्रभु प्रेम का प्रसार है।

हम मानवता की एकता के लिए कार्य एवं प्रार्थना रत हैं कि धरती की सभी जातियाँ एक जाति बन जाएं, सभी देश एक देश बन जाएं, और संपूर्ण एकता तथा भाईचारे के लिए मिल कर काम करते हुए सभी हृदय एक हृदय बन कर धड़कें। ईश्वर की जय हो कि हमारे प्रयास सच्चे हैं और हमारे हृदय प्रभु साम्राज्य की ओर उन्मुख हैं। हमारी सर्वोच्च आकांक्षा यह है कि संसार में सच्चाई का बोल-बाला हो और इस आशा के साथ हम प्रेम और स्नेह में एक दूसरे के निकट आयें। प्रत्येक और सभी शुद्धहृदयी और निःस्वार्थी हैं जो अपनी सभी महत्वाकांक्षाओं का उन महान आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने को तैयार हैं जिनकी प्राप्ति हेतु वे प्रत्यनशील हैं—अर्थात् लोगों के बीच भातृत्व, प्रेम, शांति तथा एकता स्थापित हो।

इसमें संदेह नहीं कि ईश्वर हमारे साथ है, हमारे दायें भी और हमारे बायें भी, कि दिन प्रतिदिन वह हमारी संख्या में बढ़ोत्तरी करेगा और हमारी सभाओं की शक्ति तथा उपयोगिता में वृद्धि होगी।

बेहतर संसार

यह मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप एक दूसरे के लिए वरदान सिद्ध हों और आध्यात्मिक नेत्रहीनों की दृष्टि, आध्यात्मिक वधियों को श्रवण शक्ति तथा पाप में डूबे हुए लोगों को जीवन प्रदान करें, आप भौतिकता में डूबे हुए लोगों की सहायता करें ताकि वे अपने दिव्य पुत्र होने की अनुभूति प्राप्त कर सकें और उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे उठें और अपने जन्मसिद्ध अधिकार के योग्य काम करें ताकि आप के प्रयत्नों से मानवता का संसार प्रभु का तथा उसके चुने हुए लोगों का साम्राज्य बन जाये।

मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि हम इस महान आदर्श में एकमत हैं, कि मेरी और आपकी आकांक्षाएँ एक सी हैं तथा परस्पर मिलकर हम पूर्ण एकता के साथ कार्यरत हैं।

आज पृथ्वी पर निर्मम युद्ध का दुःखद दृश्य दिखाई पड़ रहा है। स्वार्थपूर्ण लाभ तथा अपने क्षेत्र को बढ़ाने के लिए मनुष्य अपने भाई मनुष्य की हत्या कर रहा है। इस नीच अभिलाषा के कारण घृणा ने उसके हृदय पर कब्जा जमा लिया है और अधिकाधिक रक्त बहाया जा रहा है।

नई-नई लड़ाइयाँ लड़ी जा रही हैं, सेनाओं को बढ़ाया जा रहा है, अधिक तोपों, अधिक बंदूकों और सभी प्रकार की विस्फोटक सामग्री अधिक मात्रा में बाहर भेजी जा रही है—और इसी प्रकार दिनों दिन घृणा और कटुता में वृद्धि हो रही है।

परन्तु, ईश्वर का शुक्र है कि यह सभा केवल शांति तथा एकता की अभिलाषा करती है और संसार में बेहतर स्थिति लाने के लिए अवश्य ही पूरे मन और हृदय से कार्यरत है।

आप जो ईश्वर के सेवक हैं, अत्याचार, घृणा और

मिथ्या दोषारोपण

असहमति के विरुद्ध युद्ध करते हैं ताकि युद्धों का अंत हो और लोगों के बीच शांति तथा प्रेम के ईश्वरीय नियमों की स्थापना हो।

काम कीजिये, अपनी पूरी शक्ति के साथ काम कीजिये, लोगों में प्रभु साम्राज्य के प्रयोजन को फैलाइये, स्वनिर्भरों को विन्नमतापूर्वक प्रभु की ओर उन्मुख होना सिखाइये, पापियों को पाप न करना सिखाइये, और शुभ आशा के साथ प्रभु साम्राज्य के आगमन की प्रतीक्षा कीजिये।

अपने स्वर्गिक पिता से प्रेम करें और उसकी आज्ञा का पालन करें विश्वास रखें कि दिव्य सहायता आपको प्राप्त होगी। निस्संदेह मैं आप से कहता हूँ कि निश्चय ही आप संसार पर विजय प्राप्त करेंगे।

केवल विश्वास, धैर्य और साहस रखें-यह मात्र आरम्भ है, परन्तु निश्चय ही आप विजयी होंगे क्योंकि ईश्वर आपके साथ है।

मिथ्या दोषारोपण के विषय में

सोमवार, नवम्बर 20:

सृष्टि के आरंभ से अब तक प्रभु द्वारा भेजे गये प्रत्येक अवतार अर्थात् दैवी अवतार का "अन्धकार की शक्तियों" ने मूर्तरूप से विरोध किया है।

अन्धकार की इस शक्ति ने सदैव प्रकाश को बुझाने का यत्न किया है। अत्याचार ने सदा न्याय पर छा जाना चाहा है। अज्ञानता ने ज्ञान को पाँव तले कुचलने का निरन्तर प्रयास

मिथ्या दोषारोपण

किया है। आरंभिक युगों से ही यह भौतिक संसार का चलन रहा है।

मुसा के काल में फिराउन ने उनका प्रकाश सारे विदेश में फैलने से रोकने की कोशिश की।

ईसा के दिनों में अन्नाओं और कौयाफाओं ने यहूदियों को उनके विरुद्ध भड़काया और उनकी शक्ति का विरोध करने के लिए इसराईल के विद्वान पंडित आपस में एक जुट हो गये। उनके विरुद्ध सभी प्रकार के झूठे दोषों का प्रचार किया गया। धर्मशास्त्रियों तथा फारसियों ने लोगों को यह विश्वास दिलाने का षड्यंत्र किया कि वे (ईसा) झूठे, विधर्मी तथा धर्म निन्दक थे। समूचे पूर्वी संसार में उन्होंने ईसा के विरुद्ध इन झूठे आरोपों को फैलाया और उनकी अपमानजनक मृत्यु का कारण बने।

हज़रत मोहम्मद के विषय में भी उनके युग के विद्वान पण्डितों ने उनके प्रभाव के प्रकाश को बुझाने का निश्चय किया। तलवार की शक्ति के बल पर उन्होंने उनकी शिक्षा को फैलने से रोकने का प्रयास किया।

उनके सभी यत्नों के बावजूद सत्यता का सूर्य क्षितिज से चमक उठा। संसार के रणक्षेत्र में प्रत्येक दशा में प्रकाश की सेना ने अन्धकार की शक्तियों पर विजय पायी और दिव्य शिक्षा की दीप्ति से पृथ्वी देदीप्यमान हो उठी। उन्होंने शिक्षा को स्वीकार किया और प्रभु प्रयोजन के निमित्त काम किया, वे मानवता के आकाश के जगमगाते सितारे बन गये और स्वयं हमारे युग में इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है।

वे जो लोगों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि धर्म उनकी निजी सम्पत्ति है, एक बार फिर सत्यता के सूर्य के

मिथ्या दोषारोपण

विरुद्ध यत्नशील हैं, वे ईश्वर की आज्ञा का प्रतिरोध करते हैं, इसके विरुद्ध तर्क तथा प्रमाण न पा कर वे कल्पित दोषारोपण करते हैं। वे अपने मुंह छिपाकर आक्रमण करते हैं और दिन के उजाले में सामने आने का साहस नहीं जुटा पाते।

हमारे साधन निम्न हैं। हम आक्रमण नहीं करते और न ही दोषारोपण करते हैं। हम उन से झगड़ा नहीं करना चाहते। हम प्रमाण और तर्क प्रस्तुत करते हैं। हम उन्हें हमारे कथनों का खंडन करने को आमंत्रित करते हैं। वे हमें उत्तर नहीं दे सकते बल्कि इसकी बजाय वे दिव्य संदेशवाहक बहाउल्लाह के विरुद्ध सब कुछ लिखते हैं जो वे सोच सकते हैं।

इन निन्दात्मक लेखों से आप घबरायें नहीं। बहाउल्लाह की आज्ञाओं का पालन करें और उन्हें जवाब न दें। अपितु, आप प्रसन्न हों कि ये मिथ्या बातें भी सच्चाई के प्रसार का कारण बनेंगी। जब ये मिथ्या बातें सामने आती हैं तो पूछताछ और जाँच होती है और जो लोग जाँच करते हैं उन्हें प्रभु धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है।

यदि कोई व्यक्ति कहे कि "दूसरे कमरे में एक दीपक है जो प्रकाश नहीं दे रहा", तो उसका एक सुनने वाला इस विवरण से संतुष्ट हो सकता है परन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति स्वयं यह देखने के लिए उस कमरे में जायेगा और देखिये, जब वह दीपक में प्रकाश को पूरे तेज के साथ चमकते हुए पायेगा तो वह स्वयं जान जायेगा कि सच क्या है।

पुनः एक व्यक्ति कहता है, "एक बगीचा है जिसके वृक्षों की शाखायें टूटी हुई हैं, जिन पर फल नहीं आता और जिनकी पत्तियाँ कुम्हलाई हुई तथा पीली पड़ चुकी हैं। उसी बगीचे में फूलों के पौधे हैं जिन पर कोई फूल नहीं और गुलाब के पौधे

मिथ्या दोषारोपण

मुर्झाये और कुम्हाले हुए हैं— उस बगीचे में मत जाओ”। बाग के बारे में यह विवरण सुनकर कोई न्यायी व्यक्ति स्वयं यह देखे बिना संतुष्ट नहीं होगा कि यह सच है या झूठ। वे जब बाग में प्रवेश करता है तो पाता है कि उसकी भली भाँति जुताई हुई है। वृक्षों की शाखायें दृढ़ और मजबूत हैं और वह सुन्दर हरी पत्तियों की बहुतायत के साथ पके हुए अत्यंत मीठे फलों से भी भरपूर हैं। फूलों के पौधों पर विविध रंगों के फूल खिले हुए हैं, गुलाब के झाड़ सुगन्धित और प्यारे-प्यारे गुलाबों से भरे हुए हैं, सर्वत्र हरियाली है और उसकी अच्छी देखरेख की जा रही है। जब उस न्यायशील व्यक्ति की दृष्टि के सामने उत्थान के गौरव का दृश्य प्रस्तुत होता है तो वह ईश्वर की स्तुति करता है कि अयोग्य दोषारोपण द्वारा ऐसे अद्भुत सौन्दर्य स्थल की ओर उसका मार्ग दर्शन हुआ है।

यह मिथ्यापवादी व्यक्ति के कार्य का परिणाम है—सत्यता की खोज में लोगों के मार्ग दर्शन का कारण बनना।

हम जानते हैं कि ईसा तथा उनके पट्टशिष्यों के बारे में फैलाई गई सभी मिथ्या बातें तथा उनके विरुद्ध लिखी गई सभी पुस्तकें लोगों द्वारा उनके सिद्धान्त की जांच करने का कारण बनीं और फिर इसके सौन्दर्य का अवलोकन कर और इसकी सुगन्धि का श्वास भर वे उस दिव्य उद्यान के गुलाब के फूलों और फलों के बीच सदा-सर्वदा के लिये विचरने लगे।

अतः मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि आप पूरी शक्ति के साथ दिव्य सत्यता का प्रसार करें ताकि मानव का विवेक प्रकाशयुक्त हो जाये—मिथ्यापवादियों के लिये यह सर्वोत्तम उत्तर है। मैं उन लोगों के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता और न ही उनकी बुराई करना चाहता हूँ—केवल आपसे इतना

मिथ्या दोषारोपण

ही कहना चाहता हूँ कि मिथ्या दोषारोपण का कोई महत्व नहीं।

बादल चाहे सूर्य को ढाँप लें और चाहे वे कितने ही घने हों, परन्तु सूर्य की किरणें उन्हें भेद देंगी। दिव्य उद्यान को ऊष्णता पहुँचाने और जीवन प्रदान करने के लिये सूर्य के तेज अवतरण को कोई नहीं रोक सकता।

आकाश से वर्षा को गिरने से कोई वस्तु नहीं रोक सकती।

ईश्वर की वाणी को पूरा होने से कोई चीज नहीं रोक सकती।

अतः जब आप दैवी संदेश के विरुद्ध लिखी गई पुस्तकों तथा लेखों को देखें तो दुःखी न हों, अपितु इस आश्वासन के साथ सुखी हों कि इस प्रयोजन को शक्ति प्राप्त होगी।

फल रहित वृक्ष को कोई पत्थर नहीं मारता। प्रकाश-रहित दीप को बुझाने का कोई प्रयास नहीं करता।

अतीत का ध्यान कीजिये। क्या फिराउन के मिथ्यापवादों का कोई प्रभाव हुआ? उसने पृष्टि की कि मूसा एक हत्यारा था, कि उन्होंने एक व्यक्ति की हत्या की थी और फाँसी दिये जाने योग्य थे उसने यह भी कहा कि मूसा और आरोन मतभेद फैलाते थे और उन्होंने मिस्र के धर्म के उन्मूलन का यत्न किया और इसलिये अवश्य ही उन्हें मृत्युदण्ड मिलना चाहिये। फिराउन के यह शब्द व्यर्थ सिद्ध हुए। मूसा का प्रकाश जगमगा उठा। ईश्वरीय विधान की दीप्ति ने विश्व को अपने आलिंगन में ले लिया है।

ईसा के बारे में फारसियों ने कहा कि उन्होंने सैबथ दिवस (Sabbath Day) को भंग किया है, उन्होंने मूसा के कानून का उल्लंघन किया है, उन्होंने मंदिर तथा यरुशलम के पवित्र

आध्यात्मिकता

नगर को ध्वंस करने की धमकी दी और यह कि वे सलीब पर लटकाये जाने के योग्य हैं—हम जानते हैं कि इन मिथ्या आरोपों का गॉस्पेल के प्रसार पर कोई बाधक प्रभाव नहीं पड़ा।

ईसा का सूर्य पूर्ण तेज के साथ आकाश में चमका और पवित्रात्मा की सूर्य की सारी धरती पर फैल गई।

और मैं आपसे कहता हूँ कि ईश्वरीय प्रकाश के विरुद्ध कोई भी मिथ्यापवाद सफल नहीं हो सकता। इसका परिणाम केवल यह हो सकता है कि इस प्रकाश को और अधिक सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त हो। यदि किसी प्रयोजन का कोई महत्व न हो, तो कौन व्यक्ति उसका विरोध करने का कष्ट करेगा।

परन्तु सदैव होता है कि प्रयोजन जितना महान होता है उतने ही अधिक शत्रु, ज्यादा से ज्यादा संख्या में, उसके उन्मूलन की चेष्टा करते हैं। प्रकाश जितना उज्ज्वल होगा, छाया उतनी ही गहरी होगी। हमारा काम यह है कि हम नम्रता तथा दृढ़ता के साथ बहाउल्लाह की शिक्षा के अनुसार अपनी भूमिका निभाते जायें।

आध्यात्मिकता के अभाव में वास्तविक प्रसन्नता तथा उन्नति संभव नहीं

नवम्बर 21

उग्रता और क्रूरता पशुओं के लिये प्राकृतिक है परन्तु मानव को प्रेम और स्नेह के गुणों का प्रदर्शन करना चाहिए।

आध्यात्मिकता

ईश्वर ने अपने सभी अवतारों को संसार में केवल एक ही उद्देश्य से भेजा है कि वे लोगों के हृदयों में प्रेम और सद्भाव का बीज बोयें और इस महान उद्देश्य के लिये वे कष्ट उठाने और मरने को तैयार रहें। सभी पावन ग्रन्थ प्रेम और एकता के पथ पर मानव के मार्ग दर्शन और नेतृत्व हेतु लिखे गये परन्तु फिर भी इन सब के होते हुए अपने बीच युद्ध और रक्तपात का दुखदायी दृश्य हम देखते हैं।

जब हम पिछले और वर्तमान इतिहास के पन्नों का अवलोकन करते हैं तो हम श्यामल मिट्टी को मानव रक्त से रंजित हुआ पाते हैं। जंगली भेड़ियों की भांति मानव एक दूसरे का हनन करते हैं और प्रेम तथा सहनशीलता के नियमों को भूल जाते हैं।

अब यह ज्योतिर्मय युग आ गया है और अपने साथ में एक अद्भुत सभ्यता तथा भौतिक उन्नति लाया है। लोगों की बुद्धि का विकास हुआ है, उनके ज्ञान में वृद्धि हुई है परन्तु खेद है कि इन सब के बावजूद प्रतिदिन ताजा रक्त बहाया जा रहा है। तुर्की तथा इटली के बीच अभी हाल में चल रहे युद्ध को ही लीजिये। एक क्षण के लिये इन दुःखी लोगों के भाग्य के बारे में सोचिये। इस दुखदायी समय में कितने लोग मारे जा चुके हैं? कितने घर उजड़ गये हैं। कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं और कितने बालक अनाथ हो गये हैं। इस सारी वेदना और व्यथा के बदले में क्या प्राप्त होगा? भूमि का केवल एक टुकड़ा।

इन सब से पता चलता है कि केवल भौतिक उन्नति ही मानव को ऊँचा नहीं उठा सकती। इसके विपरीत जितना अधिक वह भौतिक उन्नति की गहराई में डूबता चला जा रहा है, उतनी ही अधिक उसकी आध्यात्मिकता धुंधली होती

आध्यात्मिकता

चली जा रही हैं।

अतीत के भौतिक स्तर पर उन्नति की गति इतनी तीव्र नहीं थी और न ही रक्तपात की इतनी अधिकता। प्राचीन युद्धों में न तोपें होती थीं, न बन्दूकें, न गोले, न तारपीडो नौकाएँ, न युद्धपोत और न ही पनडुब्बियाँ। अब भौतिक सभ्यता के कारण हमारे पास ये सभी आविष्कार हैं और युद्ध अधिक से अधिक भयानक बनता चला जा रहा है। स्वयं योरुप बारूद से भरा एक विशाल शस्त्रागार समान बन गया है। भगवान् करे इस बारूद के ढेर पर चिंगारी न गिरे क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो सारा संसार इसकी लपेट में आ जायेगा।

मैं चाहता हूँ कि आप यह भली-भाँति समझ ले कि भौतिक उन्नति तथा आध्यात्मिक उन्नति दो बिल्कुल भिन्न वस्तुएँ हैं और यदि भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति भी हो केवल तब ही सच्ची उन्नति प्राप्त हो सकती है और संसार में सर्वमहान् शांति का शासन हो सकता है। यदि लोग पावन परामर्शों का और दैवी अवतारों की शिक्षाओं का अनुसरण करें, यदि सभी हृदयों में दिव्य प्रकाश प्रस्फुटित हो जाए और लोग सच्चे अर्थों में धर्मपरायण हो जाएँ तो शीघ्र ही हम पृथ्वी पर शांति और लोगों के मध्य प्रभु साम्राज्य का अवलोकन कर सकेंगे। ईश्वर के नियमों की तुलना आत्मा तथा भौतिक प्रगति की तुलना शरीर से की जा सकती है। यदि शरीर में आत्मा द्वारा प्राणों का संचार न हो तो इसके अस्तित्व का अंत हो जाये। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि संसार में आध्यात्मिकता का सदा विकास हो और यह फले-फूले ताकि प्रथायें प्रबुद्ध हों और शांति तथा सहमति की स्थापना हो।

युद्ध और लूटपाट तथा उससे संबंधित क्रूरताएँ ईश्वर के

आध्यात्मिकता

सम्मुख घृणित कार्य हैं। वे अपने दण्ड का कारण स्वयं आप होते हैं क्योंकि प्रेम का ईश्वर न्याय का भी ईश्वर है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। हमें उस सर्वोच्च प्रभु की आज्ञाओं को समझने का यत्न करना चाहिए और अपने जीवन को उनके निर्देशन अनुसार, ढालना चाहिए। तब वास्तविक प्रसन्नता आध्यात्मिक भलाई तथा दिव्य कृपा की प्राप्ति हेतु हृदय के सदा तत्पर रहने पर निर्भर है।

यदि हृदय ईश्वर द्वारा प्राप्त वरदानों से विमुख हो जाए तो यह आनन्द की आशा कैसे कर सकता है? यदि वह ईश्वर की दया पर आशा और आस्था नहीं रखता तो उसे सुख चैन कहाँ मिल सकता है? ईश्वर में विश्वास कीजिए क्योंकि उसकी कृपा अनन्त है और उसके आशीर्वाद सर्वमहान हैं। सर्वशक्तिमान प्रभु में आस्था रखें क्योंकि वह किसी को निराश नहीं करता और उसकी उत्तमता सदा सर्वदा बनी रहती है। उसका सूर्य निरन्तर प्रकाश देता रहता है और उसकी दयालुता के मेघ करुणा जल से भरे रहते हैं जिससे वह उन सभी लोगों के हृदय को सींचता है जो उसमें विश्वास रखते हैं। हृदय को हर्षित करने वाली उसकी पवन लोगों की झुलसी आत्माओं का आरोग्य सदा अपने पंखों पर लेकर चलती है। क्या यह बुद्धिमत्ता है कि ऐसे वरदानों की वृष्टि करने वाले अपने प्रेममय पिता से विमुख हो हम भौतिकता के दास बनें।

अपनी असीम परोपकारिता के कारण ईश्वर ने हमें इतना अधिक सम्मान और आदर प्रदान किया है और हमें भौतिक जगत का स्वामी बनाया है। तो क्या फिर हम इसके दास

कष्ट और दुःख

(भौतिक जगत के) बन जायें? नहीं, बल्कि हमें अपने जन्म सिद्ध अधिकार का दावा करना चाहिए और ईश्वर के आध्यात्मिक पुत्रों जैसा जीवन यापन करने का प्रयास करना चाहिए। सत्यता का तेजमय सूर्य एक बार फिर पूर्व से उभर रहा है। ईरान के दूर स्थित क्षितिज से इसका तेज दूर और नजदीक फैलता जा रहा है। और अंधविश्वास के घने बादलों को छिन्न-भिन्न कर रहा है। मानव एकता के प्रकाश ने संसार को देदीप्यमान करना आरंभ कर दिया है और शीघ्र ही दिव्य एकरूपता और राष्ट्रों की एकता का पताका आकाश में ऊँचा फहराने लगेगा। जी हाँ, पवित्रात्मा का शीतल पवन सारे संसार को प्रेरणा प्रदान करेगा।

हे लोगों तथा राष्ट्रों! उठो, काम में जुट जाओ और आनंदमग्न हो। मानवमात्र की एकता के तम्बू तले सभी एकत्रित हो जाओ।

कष्ट और दुःख

नवम्बर 22:

इस संसार में हम दो प्रकार की भावनाओं से प्रभावित होते हैं—आनन्द और कष्ट।

आनन्द हमें पंख लगा देता है। आनन्द के समय हमारी शक्ति अधिक बलशाली, हमारी बुद्धि अधिक तीक्ष्ण और हमारी सूझ-बूझ कम धुंधली होती है। इस संसार का सामना करने और अपनी उपयोगिता का क्षेत्र ढूँढ़ने में अपने-आप को अधिक योग्य पाते हैं। परन्तु जब हम पर उदासी और खिन्नता छा जाती है तो हम दुर्बल हो जाते हैं, शक्ति हमारा साथ छोड़

कष्ट और दुःख

देती है, हमारी सूझ-बूझ घुंधली हो जाती है और हमारे विवेक पर पर्दा पड़ जाता है। जीवन की वास्तविकताएँ हमारी समझ से बाहर होती दिखाई पड़ती हैं, हमारी आत्माओं के चक्षु पवित्र रहस्यों का उद्घाटन करने में विफल हो जाते हैं और हम मृतप्रायः प्राणी मात्र बन जाते हैं।

ऐसा कोई मानव नहीं है जो इन दो प्रभावों से बच सका हो। परन्तु सारे दुःख और शोक भौतिक संसार से उत्पन्न होते हैं—आध्यात्मिक जगत केवल आनन्द ही प्रदान करता है।

यदि हम दुःखी होते हैं तो इसका कारण भौतिक वस्तुएँ हैं और सभी परीक्षण और कष्ट इस माया के संसार से उत्पन्न होते हैं।

उदाहरणस्वरूप, किसी व्यापारी को व्यापार में घाटा होता है तो उदासीनता उसका अनुसरण करती है। किसी कार्यकर्ता को काम से निकाल दिया जाए तो भुखमरी उसके सामने मुँह फाड़े खड़ी होती है। यदि किसी किसान की अच्छी फसल नहीं होती हो तो चिंता उसके दिमाग पर छा जाती है। कोई व्यक्ति मकान बनाता है जो जल कर राख हो जाता है तो वह तुरन्त बेघर और बर्बाद हो जाता है और निराशा से भर उठता है।

ये सभी उदाहरण आपको यह दर्शाते हैं कि पगपग पर हमारे सामने आने वाली मुसीबतें हमारे सभी दुःख, कष्ट, शर्मिंदगी और उदासी पार्थिव जगत की उपज होते हैं, जबकि आध्यात्मिक साम्राज्य कभी भी उदासीनता का कारण नहीं बनता। अपने विचारों के साथ इस साम्राज्य में रहने वाला व्यक्ति केवल निरंतर आनंद से ही परिचित होता है। हाइमांस के दोष उस पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाते—परन्तु वे केवल

कष्ट और दुःख

उसके जीवन की ऊपरी परत को ही छू पाते हैं, उसकी आंतरिक गहराई शांत और स्वच्छ रहती है।

आज मानवता परेशानी, दुःख और शोक के बोझ से दबी हुई है, कोई भी बच नहीं पाता। विश्व आँसुओं में डूबा हुआ है, परन्तु ईश्वर का शुक्र है कि इसका उपचार भी हमारे पास है। हम अपने हृदय पार्थिव जगत से हटा कर आध्यात्मिक जगत में वापस करें। केवल यही स्वंत्रता प्रदान कर सकता है। यदि हम कठिनाइयों से घिरे हों तो हमें केवल मात्र ईश्वर को याद करना है और उसकी महान दया के द्वारा हमें सहायता प्राप्त होगी।

यदि हम पर दुःख और दुर्भाग्य के बादल छा जायें तो हम प्रभु साम्राज्य की ओर उन्मुख हों। दिव्य सात्वता की वृष्टि होगी।

यदि हम रोग से पीड़ित और कष्ट में हों तो हम ईश्वर से आरोग्य की याचना करें वह हमारी याचना का उत्तर देगा।

जब हमारे विचार संसार की कटुता से भरे हों तो हम अपनी दृष्टि प्रभु की दया की मिठास पर केन्द्रित करें, वह हमें स्वर्गिक शांति प्रदान करेगा। यदि हम भौतिक संसार के बंदी हों, तो हमारी आत्मा स्वर्ग में उड़ान भर सकेगी और निश्चय ही हम स्तवत्र हो जायेंगे।

जब हमारा जीवन समाप्त होने के निकट हो तो हमें अनंत संसार के बारे में विचार करना चाहिये और हम आनंद विभोर हो उठेंगे।

आप अपने चहुँओर भौतिक वस्तुओं की अपर्याप्तता के प्रमाण देखते हैं—कि संसार की क्षणिक वस्तुओं में आनन्द, सुख, शांति और सात्वता नहीं पाये जाते। तो फिर इन खजानों

कष्ट और दुःख

के वहाँ ढूँढ़ने से इन्कार करना, जहाँ पर वे पाये जाते हैं, क्या बेबकफी नहीं? आध्यात्मिक साम्राज्य के द्वार सभी लोगों पर खुले हैं और उनसे बाहर अन्धकार ही अन्धकार है।

ईश्वर का शुक्र है कि इस सभा में उपस्थित आप इस बात को भली भाँति जानते हैं क्योंकि जीवन के सभी दुखों में आप महानतम सांत्वना प्राप्त कर सकते हैं। यदि पृथ्वी पर आपके जीवन के थोड़े ही दिन शेष रह गये हों, आप जानते हैं कि अनन्त जीवन आपकी प्रतीक्षा में हैं। यदि भौतिक चिन्ता के घने बादल आपको घेर लेते हैं, तो आध्यात्मिक दीप्ति आपके मार्ग को प्रकाशमान करती है। निःसन्देह जिन लोगों के चित्त सर्वोच्च आत्मा के प्रकाश से देदीप्यमान हैं, उन्हें सब से बड़ी सांत्वना प्राप्त है।

मैं स्वयं चालीस वर्ष तक कारागार में था—केवल एक ही वर्ष झेलना असंभव होता—कोई भी उस कारावास में एक वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहा।

परन्तु ईश्वर का शुक्र है कि उन सभी चालीस वर्षों में मैं अत्यंत आनंदमग्न रहा। प्रतिदिन निद्रा से जागना शुभ समाचार सुनने के समान था और हर रात मुझे अनन्त आनन्द प्राप्त होता था। आध्यात्मिकता मेरा सुख थी और प्रभु की ओर उन्मुख होना मेरा सब से बड़ा आनंद। यदि ऐसा न होता तो क्या आप समझते हैं कि चालीस वर्ष का कारावास भोगना मेरे लिये संभव होता?

अतः आध्यात्मिकता ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है और "अनन्त जीवन" का अर्थ है "ईश्वर की ओर उन्मुख होना"। दिनोंदिन आप सब की आध्यात्मिकता में वृद्धि हो, सभी अच्छाइयों में आपको बल मिले, दिव्य सांत्वना द्वारा आपको

मानवीय भावनाएँ

अधिक से अधिक सहायता प्राप्त हो, परमात्मा की पावन आत्मा द्वारा आपको मुक्ति प्राप्त हो और स्वर्गिक साम्राज्य की शक्ति आपके मध्य वास और काम करे।

यह मेरी हार्दिक इच्छा है और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको यह अनुग्रह प्रदान करे।

सम्पूर्ण मानवीय भावनाएँ और सद्गुण

नवम्बर 23:

अब्दुल-बहा ने कहा:

उस महान विशेषाधिकार के लिये, जो आपको प्राप्त है, आपको अत्यंत प्रसन्न और ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए।

यह एक विशुद्ध आध्यात्मिक सभा है। ईश्वर की स्तुति हो और आपके हृदय उसकी ओर उन्मुख हैं, आपकी आत्माएँ प्रभु साम्राज्य की ओर आकर्षित हैं, आपकी आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाएँ हैं और आपके विचार माटी के इस संसार से बहुत ऊँची उड़ान भरते हैं।

आप विशुद्धता के संसार से संबंध रखते हैं और खाने, पीने और सोने में अपना समय गंवा कर पशु की भाँति जीवन व्यतीत करने से संतुष्ट नहीं। निःसन्देह आप मनुष्य हैं। आपके विचार और आकांक्षाएँ मानव संपूर्णता की प्राप्ति में लगी हुई हैं। आप भलाई करने और दूसरों के लिये प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु जीवित हैं। आपकी सबसे बड़ी अभिलाषा दुःखियों को दिलासा देना, निर्बलों को बल देना और हताश

मानवीय भावनाएँ

आत्माओं को आशा बंधाना है। रात और दिन आपके विचार प्रभु साम्राज्य में लीन और आपके हृदय ईश्वर प्रेम से परिपूर्ण हैं।

इस प्रकार न तो आपको विरोध और अरुचि का भास है और न ही घृणा का, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी आपको प्रिय है और आप सब का भला चाहते हैं।

ये संपूर्ण मानवीय भावनायें और सद्गुण हैं। यदि किसी मानव को इनमें से कोई भी प्राप्त नहीं, तो उसके लिए मर जाना ही बेहतर है। यदि कोई दीपक प्रकाश देना बन्द कर दे तो उसे नष्ट कर देना ही बेहतर है। यदि कोई वृक्ष फल न दे तो उसे काट डालना ही बेहतर है क्योंकि वह पृथ्वी पर बोझ मात्र ही होता है।

निःसंदेह, मनुष्य के लिए बिना सद्गुणों के जीवित रहने से मर जाना हजार गुणा उत्तम है।

हमारे पास देखने के लिए नेत्र हैं, परन्तु हम उनका उपयोग नहीं करते तो हमें उनसे क्या लाभ? सुनने के लिए हमारे पास कान हैं परन्तु यदि हम बहरे हों तो वे हमारे किस काम के?

प्रभु स्तुति और सुसमाचारों की घोषणा के लिये हमारे पास जिह्वा है, परन्तु यदि हम गूंगे हों तो यह कितना बेकार है?

सर्व प्रेमी प्रभु ने मानव को दिव्य प्रकाश के प्रसार तथा अपने शब्दों, कर्मों और जीवन द्वारा संसार को प्रकाश युक्त बनाने के लिए उत्पन्न किया। यदि वह सद्गुण से रहित है तो वह पशु मात्र से ज्यादा बेहतर नहीं। और विवेकरहित पशु एक तुच्छ वस्तु है।

स्वर्गिक पिता ने मनुष्य को विवेक का अमूल्य उपहार दिया

अन्य जातियों के कष्ट

है ताकि वह एक आध्यात्मिक प्रकाश बन जाए जो भौतिकता के अंधकार को भेद दे और संसार में सच्चाई और भलाई लाए। यदि आप बहाउल्लाह की शिक्षाओं का पूरे मन से अनुसरण करें तो निःसंदेह आप संसार का प्रकाश, विश्व रूपी शरीर की आत्मा और मानवता के लिए आराम व सहायता और समूचे ब्रह्मांड की मुक्ति का साधन बन जायेंगे। अतः आप पूरे तन और मन से पावन संपूर्णता (बहाउल्लाह) की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करें और विश्वास रखें कि यदि आप उनकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन यापन में सफल हुए तो स्वर्गिक साम्राज्य में आपको अनन्त जीवन और सदानन्द प्राप्त होगा, आपके जीवनकाल में आपको बल देने के लिए दिव्य पृष्टि प्रदान की जायेगी।

मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप में से प्रत्येक इस सम्पूर्ण आनंद को प्राप्त हो।

अन्य जातियों के कष्टों के प्रति लोगों की क्रूरतापूर्ण उदासीनता

नवम्बर 24:

अब्दुल-बहा ने कहा:

मुझे अभी अभी बताया गया है कि इस देश में एक भीषण दुर्घटना हुई है। एक रेलगाड़ी नदी में गिर गई है और कम से कम बीस व्यक्ति हताहत हुए हैं। फ्रांसीसी संसद में यह आज चर्चा का विषय होगा तथा सरकारी रेलों के निदेशक को

अन्य जातियों के कष्ट

बयान देने के लिए कहा जायेगा। रेलवे लाइन की स्थिति पर उनसे प्रश्न किये जाएँगे ताकि दुर्घटना के कारण का पता लगाया जा सके और गरमागरम बहस होगी। यह देख मुझे आश्चर्य और हैरानी होती है कि बीस व्यक्तियों की मृत्यु के कारण सारे देश में कितनी दिलचस्पी और उत्तेजना उत्पन्न हो गई है जबकि इस तथ्य के प्रति वे उदासीन और ठंडे हैं कि त्रिपोली में हजारों इटलीवासियों, तुर्कों तथा अरबों का हनन हो रहा है। इस अंधाधुंध नरवध की भयंकरता ने सरकार को विल्कुल विचलित नहीं किया। फिर भी ये अभागे लोग मानव संतान हैं।

इन बीस व्यक्तियों के प्रति अधिक दिलचस्पी और इतनी गहरी संवेदना क्यों दिखाई जा रही है जबकि पाँच हजार लोगों के लिए कुछ भी नहीं? वे सभी मनुष्य हैं, वे सभी मानव जाति के परिवार से संबंध रखते हैं, परन्तु वे अन्य जातियों तथा देशों के हैं। यदि इन लोगों के टुकड़े-टुकड़े भी कर दिये जायें तो इन तटस्थ देशों के लिए चिन्ता का कोई कारण नहीं, इस अंधाधुंध हत्याकांड का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह कितनी निर्दयतापूर्ण और अन्यायपूर्ण बात है, अच्छी और सच्ची भावनाओं से पूर्णतया विहीन। इन अन्य देशों के लोगों के भी बच्चे और पत्नियाँ हैं, माताएँ और पुत्रियाँ हैं और छोटे-छोटे पुत्र हैं। इन देशों में आज शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें विलाप और क्रन्दन का स्वर न गूँज रहा हो, शायद ही कोई ऐसा घर मिले जिस पर युद्ध के निर्दयी हाथ की छाप न पड़ी हो।

अफसोस! हर ओर हम देखते हैं कि मनुष्य कितना निर्मम, पक्षपातपूर्ण और अन्यायी है तथा ईश्वर में विश्वास करने

अन्य जातियों के कष्ट

और उसकी आज्ञाओं को पालन करने में वह कितना सुस्त है।

तोप और तलवार से एक दूसरे को नष्ट करने के इच्छुक होकर यदि ये लोग एक दूसरे से प्रेम करें और सहायता करें तो यह कितनी महान बात होगी। कितना सुन्दर हो कि वे भेड़ियों कि भाँति एक दूसरे के टुकड़े करने की बजाय बुलबुलों के समूह की भाँति प्रेम और मैत्री भाव से रहें।

मनुष्य इतना पाषाण हृदय क्यों है? इसका कारण यह है कि वह अभी ईश्वर को नहीं पहचानता। यदि उसे ईश्वर का ज्ञान होता तो वह उसके नियमों के बिल्कुल प्रतिकूल कोई काम न करता, यदि उसका मन आध्यात्मिक होता तो ऐसा आचार व्यवहार उसके लिये असंभव होता। केवल यदि ईश्वर अवतारों के नियमों और आज्ञाओं में विश्वास किया जाता, उनको समझा जाता और उनका अनुसरण किया जाता, तो युद्ध पृथ्वी के मुख को काला नहीं करते।

यदि मानव को न्याय के बारे में प्रारंभिक ज्ञान भी प्राप्त होता तो ऐसी परिस्थिति का होना संभव नहीं होता।

अतः मैं कहता हूँ कि प्रार्थना कीजिए—प्रार्थना कीजिए और ईश्वर की ओर उन्मुख हो जाइए कि वे अपनी असीम कृपा और दया से इन पथ भ्रष्ट लोगों की सहायता और मदद करें। प्रार्थना कीजिए कि वह उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करें तथा सहनशीलता और दया की शिक्षा दे, कि उनके मन के नेत्र खुलें और वे आत्मा के उपहार से संपन्न हों। केवल तभी पृथ्वी पर शांति और प्रेम का संचार होगा और इन गरीब तथा अप्रसन्न लोगों को सुख चैन नसीब होगा।

परिस्थितियों को सुधारने और बेहतर बनाने के लिए हम सब को रात दिन की कोशिश करनी चाहिए। इन भयानक

बातों से मेरा हृदय टूट गया है और जोर-जोर से क्रंदन करता है—काश यह पुकार अन्य हृदयों तक पहुंच जाये।

तब नेत्रहीन देखने लगेंगे, मृत जीवित हो उठेंगे। न्याय का संचार होगा और यह पृथ्वी पर राज्य करेगा।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप सच्चे हृदय व मन से प्रार्थना करें कि इसकी प्राप्ति हो।

अपनी अल्प संख्या के कारण हम हतोत्साहित न हों

नवम्बर 25.

जब ईसा प्रगट हुए तो उन्होंने योरूशलम में अपने आप को प्रत्यक्ष किया। उन्होंने लोगों का प्रभु साम्राज्य की ओर आह्वान किया, उन्होंने लोगों को अनन्त जीवन का निमन्त्रण दिया और उन्हें मानव सम्पूर्णताएँ प्राप्त करने के लिए कहा। उस देदीप्यमान सितारे द्वारा मार्गदर्शन का प्रकाश फैलाया गया और अन्ततः उन्होंने मानवता के लिये अपने जीवन की बली दे दी।

अपने समूचे पावन जीवन भर उन्होंने अत्याचारों और कठिनाइयों का सामना किया और इस सब के बावजूद मानवता उनकी दुश्मन थी।

उन्होंने उनका खण्डन किया, उनका तिरस्कार किया, उनसे दुर्व्यवहार किया और उन्हें बुरा भला कहा। उनसे मनुष्य समान व्यवहार नहीं किया गया और फिर भी इन सब के बावजूद वे दया, सर्वोत्तम भलाई और प्रेम की मूर्ति थे।

वे सारी मानवता से प्रेम करते थे परन्तु लोग उनसे शत्रु का सा व्यवहार करते थे और उनके गुणों का मूल्यांकन करने के

अयोग्य थे। वे उनके शब्दों का कोई मूल्य नहीं समझते थे और उनके प्रेम की ज्वाला से प्रकाशित नहीं थे।

बाद में लोगों ने अनुभव किया कि वे कौन थे, कि वे पावन और दिव्य प्रकाश थे और उनके शब्दों में अनन्त जीवन निहित था।

उनका हृदय सारे संसार के लिये प्रेम से भरपूर था, उनकी परोपकारिता हर एक को प्राप्त होनी थी और जैसे जैसे लोगों ने इन बातों को अनुभव करना आरंभ किया, उन्हें पश्चात्ताप होने लगा-परन्तु उनको तो सूली पर लटकाया जा चुका था।

उनके देहावसान के कई वर्ष बाद तक लोग नहीं जान पाये थे कि वे कौन थे। उनके देहांत के समय उनके शिष्यों की संख्या बहुत कम थी। तुलनात्मक रूप में बहुत कम लोग उनकी आज्ञाओं में विश्वास करते थे और उनके नियमों का पालन करते थे। नादान लोग कहते थे, "वह व्यक्ति कौन है, उसके तो थोड़े से ही शिष्य हैं।" लेकिन जानने वाले कहते थे, "वह सूर्य है जो पूर्व और पश्चिम दिशाओं में चमकेगा; वह अवतार है जो विश्व को जीवन प्रदान करेगा।"

जो प्रथम अनुयायियों ने देखा, संसार ने उसका बाद में अनुभव किया।

अतः आप लोग जो यूरोप वासी हैं, इस बात से हतोत्साहित न हों कि आप की संख्या कम है या इसलिए कि लोग समझते हैं कि आपके प्रयोजन (धर्म) का कोई महत्व नहीं। यदि आपकी सभाओं में लोग कम संख्या में आते हैं तो आप हताश न हों और यदि आप का उपहास और खण्डन किया जाता है तो आप दुखी न हो, क्योंकि ईसा के पट्टशिष्यों को भी यही सब कुछ सहन करना पड़ा था। उनकी निन्दा की गई, उन पर

अत्याचार किया गया, उनको बुरा भला कहा गया, उनसे दुर्व्यवहार किया गया परन्तु अन्त में वे विजयी हुए और उनके शत्रु गलत सिद्ध हुए।

यदि इतिहास अपने आप को दोहराये और यह सब कुछ आप पर भी बीतें, तो आप दुखी न हों बल्कि प्रसन्न हों और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें कि आपका भी वैसे ही संकटों का सामना करने के लिए आह्वान किया गया है जैसे कि अतीत में पवित्र आत्माओं ने किया था। यदि वे आपका विरोध करें तो आप उनसे नम्रता के साथ पेश आयें, यदि वे खण्डन करें तो आप अपने विश्वास में दृढ़ बने रहें, यदि वे आपका साथ छोड़ दें और आपसे दूर भागें तो आप उनके नजदीक जायें और उनसे दयापूर्ण व्यवहार करें। किसी को क्षति न पहुँचायें, सब के लिये प्रार्थना करें, अपने प्रकाश से संसार को आलोकित करने का यत्न करें, और अपने ध्वज को नभ में उँचा फहरायें। आपके उत्तम जीवन की मोहक सुगन्धि हर ओर फैल जायेगी। आपके हृदयों में प्रज्वलित सत्य का प्रकाश सुदूर क्षितिज तक चमकने लगेगा।

संसार की उदासीनता और घृणा का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा जबकि आपके जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण होंगे।

वे सब जो स्वर्गिक साम्राज्य में सत्यता की प्राप्ति में प्रयत्नशील हैं, सितारों की भाँति चमकते हैं। वे मीठे फलों से लदे फलदार वृक्षों की भाँति हैं, अमूल्य रत्नों से भरे सागर की भाँति हैं।

केवल मात्र प्रभु की दया में विश्वास रखें और दिव्य सत्यता का प्रसार करें।

पास्टर वैगनर का गिरजाघर

पैरिस में पास्टर वैगनर के गिरजाघर में अब्दुल-बहा का वक्तव्य

नवम्बर 26:

मैं उन सहानुभूतिपूर्ण शब्दों से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ जो मुझे को संबोधित किये गये हैं और मैं आशा करता हूँ कि दिन प्रति दिन हम लोगों के बीच सच्चा प्रेम और स्नेह बढ़ता जाये। प्रभु की इच्छा है कि प्रेम संसार में एक महत्वपूर्ण शक्ति हो और आप सब जानते हैं कि प्रेम के विषय पर बोल कर मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता है।

सभी युगों में ईश्वरावतारों को सत्यता के प्रयोजन की सेवा हेतु संसार में भेजा गया है—मूसा सत्यता का नियम लाये और उनके पश्चात् इसराइल के सभी अवतारों ने इसके प्रसार की चेष्टा की।

जब ईसा आये तो उन्होंने सच्चाई की धधकती हुई मशाल को प्रचण्ड किया और इसे ऊँचा उठाया ताकि सारा विश्व उससे प्रकाशमान हो उनके पश्चात् उनके चुने हुए पट्टशिष्य आये और अपने स्वामी की शिक्षा के प्रकाश को उठाये वे अन्धकारपूर्ण संसार में दूर दूर तक फैल गये। और अपनी पारी पर उसे दूसरों को थमा दिया।

तब हज़रत मुहम्मद आये जिन्होंने अपने समय में और अपने ढंग से सच्चाई के ज्ञान को असभ्य लोगों में फैलाया, क्योंकि सदा सर्वदा से यह ईश्वर के चुने हुए लोगों का कार्य विशेष रहा है।

अतः, अन्ततः जब ईरान में बहाउल्लाह प्रकट हुए तो उनकी

पास्टर वैगनर का गिरजाघर

तीव्र इच्छा थी कि सच्चाई के मद्धम होते हुए प्रकाश को सभी देशों में वे पुनः उजागर करें। संसार के सभी देशों में प्रेम और एकता का प्रकाश फैलाने हेतु ईश्वर के सभी पावन लोगों ने तन और मन से प्रयास किया है ताकि भौतिकता का अन्धकार दूर हो और मानव संतान में आध्यात्मिकता का प्रकाश फैल जाये। केवल तब ही घृणा, निन्दा और हत्या समाप्त हो सकेगी और उनके स्थान पर प्रेम, एकता तथा शांति का राज्य होगा।

ईश्वर के सभी अवतार एक ही उद्देश्य से प्रकट हुए और उन सब ने लोगों को सदाचार के पथ पर चलाने का प्रयास किया। फिर भी हम, उनके सेवक, अभी भी आपस में झगड़ते हैं। ऐसा क्यों? हम एक दूसरे से प्रेम क्यों नहीं करते और एकतापूर्वक क्यों नहीं रहते?

इसका कारण यह है कि हमने सभी धर्मों के मौलिक नियम के प्रति अपने नेत्र बन्द कर रखे हैं कि ईश्वर एक है, कि वह हम सब का परम पिता है, कि हम सब उस की दया के सागर में डूबे हुए हैं और उसकी प्रेमपूर्ण देखरेख की छाया में सुरक्षित हैं।

सत्यता का तेजपूर्ण सूर्य सब पर एक समान चमकता है, दिव्य दया का जल प्रत्येक को अपने अन्दर समा लेता है और उसकी दिव्य कृपा उसके सभी बच्चों को प्रदान की जाती है।

यह प्रेममय ईश्वर अपने सभी प्राणियों के लिये शांति चाहता है—तो फिर वे अपना समय युद्ध में क्यों बरबाद करते हैं?

वह अपने सभी बच्चों से प्रेम करता है और उनकी रक्षा करता है—तो वे उसे (प्रभु को) भूल क्यों जाते हैं?

वह पिता समान हम सब की देखभाल करता है—तो हम

पास्टर वैगनर का गिरजाघर

अपने भाइयों से लापरवाह क्यों हैं?

निश्चय ही जब हम यह अनुभव करते हैं कि किस प्रकार ईश्वर हम से प्यार करता है और हमारा ध्यान रखता है तो हमें अपने जीवन इस प्रकार ढाल लेने चाहियें कि हम उसकी प्रतिमूर्ति बन जायें।

ईश्वर ने ही हम सब को उत्पन्न किया है—जब हम सब उसके बालक हैं और उसी एक परम पिता से प्रेम करते हैं, तो हम उस प्रभु की इच्छाओं के विरुद्ध काम क्यों करते हैं? सभी दिशाओं में दिखाई दे रहे विभाजनों, इन सभी झगड़ों और विरोधों का कारण यही है कि लोग ऊपरी दिखावे और रीतिरिवाज से चिपके हुए हैं और सीधे सीधे भौतिक सत्य को भूल जाते हैं। धर्म की ये ऊपरी प्रतिक्रियायें अति विभिन्न हैं और यही हैं वे जो झगड़ों तथा शत्रुता का कारण बनती हैं—जबकि यथार्थ सदा सर्वदा एक ही होता है। वास्तविकता सच्चाई होती है और सच्चाई का विभाजन नहीं होता। सच्चाई ईश्वर का मार्गदर्शन है, यह संसार का प्रकाश है, यह प्रेम है, यह दया है। सत्य की ये विशेषताएँ मानवता के गुण भी हैं जो परम आत्मा द्वारा उत्प्रेरित होते हैं।

अतः हम सबको दृढ़तापूर्वक सत्य पर स्थिर रहना चाहिए और निस्सन्देह हम स्वतंत्र हो जायेंगे।

वह समय आने वाला है जब संसार के सभी धर्म मिलकर एक हो जायेंगे, क्योंकि सिद्धान्त रूप से वे पहले ही एक हैं। विभाजन की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि केवल ऊपरी रूप ही उन्हें अलग करते हैं। मानव पुत्रों के बीच कुछ आत्माएँ अज्ञानता के कारण दुःख उठा रही हैं, हमें उनके प्रशिक्षण में शीघ्रता करनी चाहिए। वे अबोध बच्चों की भाँति हैं जिन्हें

बड़ा होने तक देखभाल की आवश्यकता है। और कुछ एक रोगी हैं, हमें अवश्य ही दिव्य उपचार उन तक पहुँचाना चाहिए।

चाहे वे अज्ञानी हों, बच्चे हों या रोग पीड़ित, उनसे प्रेम और उनकी सहायता करना नितांत आवश्यक है। उनकी अपूर्णता के कारण उनसे घृणा नहीं की जानी चाहिए।

लोगों में आध्यात्मिक आरोग्य लाने तथा राष्ट्रों में एकता की स्थापना हेतु धर्म के चिकित्सकों (ईश्वरावतारों) की नियुक्ति की गई। यदि वे विभाजन का कारण बनें तो उनके अस्तित्व का न होना ही अच्छा है। किसी रोग के निवारण के लिए उपचार किया जाता है, परन्तु यदि वह केवल मात्र रोग को अधिक बढ़ाये तो इससे परे रहना ही बेहतर है। यदि धर्म केवल मात्र अनबन और फूट का कारण हो तो इसके अस्तित्व का न होना ही उत्तम है।

ईश्वर द्वारा संसार में भेजे गये सभी दिव्य अवतारों ने लोगों के बीच सत्यता, एकता और सहमति के प्रसार की एकमात्र आशा के कारण ही इतनी घोर कठिनाइयों तथा यातनाओं को सहन किया। संसार के सम्मुख प्रेम का एक सम्पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए ईसा ने वेदना, पीड़ा और दुःख से भरा जीवन व्यतीत किया—और इसके बावजूद हम एक दूसरे के प्रति इसके प्रतिकूल व्यवहार करते हैं।

प्रेम मानव के लिए ईश्वर के प्रयोजन का मौलिक सिद्धान्त है और उसने हमें एक दूसरे से प्यार करने की आज्ञा दी है जैसे कि वह हम से प्रेम करता है। ये सभी झगड़े और अनबन जो हमें अपने चारों ओर सुनाई देते हैं, मात्र भौतिकता को बढ़ावा देते हैं।

पास्टर वैगनर का गिरजाघर

संसार अधिकतर भौतिकवाद में डूबा हुआ है और पावन आत्मा के आशीर्वादों को नजरअन्दाज कर दिया जाता है। वास्तविक आध्यात्मिक भावना की मात्रा बहुत कम है और विश्व की उन्नति अधिकतर केवल भौतिक है। मानव नश्वर जन्तुओं की भाँति बनते जा रहे हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि उनमें कोई आध्यात्मिक भावना नहीं होती—वे प्रभु की ओर उन्मुख नहीं होते, उनका कोई धर्म नहीं होता। ये बातें केवल मनुष्य से ही संबंध रखती हैं और यदि वह उन से वंचित हो तो वह प्रकृति का बन्दी होता है और पशु से लेशमात्र भी बेहतर नहीं होता।

मनुष्य केवल पशु के समान जीवन व्यतीत कर कैसे सन्तोष प्राप्त कर सकता है जबकि ईश्वर ने उसको इतना उत्कृष्ट प्राणी बनाया है? सारी सृष्टि प्रकृति के नियमों के अधीन रची गई है परन्तु मानव इन नियमों पर विजय पाने में सफल हुआ है। अपनी शक्ति तथा प्रताप के बावजूद सूर्य प्रकृति के नियमों से बँधा हुआ है और अपने मार्ग से बाल बराबर भी नहीं हट सकता। महान और शक्तिशाली सागर अपनी लहरों के प्रवाह और ज्वारभाटा को बदल सकने में असमर्थ है—प्रकृति के नियमों का मुकाबला कोई भी नहीं कर सकता, सिवाय मनुष्य के।

मनुष्य को ईश्वर ने ऐसी अद्भुत शक्ति प्रदान की है कि वह प्रकृति का मार्गदर्शन कर सकता है, उस पर नियंत्रण कर सकता है और उस पर विजय पा सकता है।

मनुष्य के लिये प्राकृतिक नियम पृथ्वी पर चलना है परन्तु वह हवाई जहाजों का निर्माण करता है और वायु में उड़ता है! उसे सूखी जमीन पर रहने के लिए उत्पन्न किया गया है

परन्तु वह सागर पर सवारी करता है और यहां तक कि इसके नीचे भी यात्रा करता है।

उसने विद्युत शक्ति पर नियंत्रण करना सीख लिया है और वह इसे लेकर अपनी इच्छानुसार दीपक में बन्द कर देता है। मानव स्वर थोड़ी दूरी तक सुनाई देने के लिए बनाया गया है परन्तु मनुष्य की शक्ति ऐसी है कि उसने यंत्रों का आविष्कार कर लिया है और पूर्व से पश्चिम तक बातचीत कर सकता है। ये सभी उदाहरण आपको दर्शाते हैं कि किस प्रकार मनुष्य प्रकृति पर शासन कर सकता है, और किस प्रकार वह प्रकृति के हाथ से शक्ति छीन कर स्वयं उसी के विरुद्ध उसका प्रयोग करता है। यह जानते हुए कि मनुष्य को प्रकृति के स्वामी के रूप में उत्पन्न किया गया है, उसके लिये यह कितनी मूर्खता की बात है कि वह प्रकृति का दास बन कर रहे। प्रकृति की आराधना और स्तुति करना कितनी मूर्खता और अज्ञानता की बात है जबकि ईश्वर ने अपनी महान कृपा से हमें उसका स्वामी बनाया है। ईश्वर की शक्ति सबको दिखाई देती है परन्तु फिर भी लोगों ने अपनी आँखें मूंद ली हैं और इसे नहीं देखते। सत्यता का सूर्य अपने पूर्ण गौरव के साथ चमक रहा है, परन्तु मनुष्य अपनी जानबूझकर मूँदी हुई आँखों के कारण उसके तेज को देख नहीं पाता। प्रभु से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि उसकी दया और प्रेमपूर्ण कृपा से आप एक हो जायें और अनन्त आनन्द से विभोर हो उठें।

मैं आप सबसे अनुरोध करता हूँ कि आप मेरे साथ प्रार्थना में शामिल हों कि युद्ध और रक्तपात समाप्त हों और प्रेम, मैत्री, शांति तथा एकता का संसार में राज्य हो।

हम देखते हैं कि किस प्रकार सभी युगों में लहू ने पृथ्वीतल

पास्टर वैगनर का गिरजाघर

पर धब्बे लगायें हैं, परन्तु अब महान प्रकाश की एक किरण प्रकट हुई है, मनुष्य का ज्ञान बढ़ा है, आध्यात्मिकता का विकास होने लगा है और निश्चय ही एक ऐसा समय आ रहा है जब विश्व के सभी धर्म शांतिपूर्ण होंगे। आइये, ऊपरी आकारों को और अपने कलहपूर्ण विवादों को हम त्याग दें और आपस में मिलकर एकता के दिव्य प्रयोजन की ओर अग्रसर हों, यहाँ तक कि सारी मानवता प्रेमपाश में बँधी अपने आप को एक परिवार के भाँति मानने लगे।

भाग 2

पैरिस में अब्दुल-बहा द्वारा वर्णित बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से ग्यारह सिद्धांत

- 1—सत्य की खोज।
- 2—मानवमात्र की एकता।
- 3—धर्म प्रेम और स्नेह का कारण हो।
- 4—धर्म और विज्ञान की एकता।
- 5—पक्षपातों का उन्मूलन।
- 6—अस्तित्व के साधनों का समकरण।
- 7—कानून के सम्मुख लोगों की समानता।
- 8—विश्व शांति।
- 9—धर्म का अहस्तक्षेप और राजनीति।
- 10—स्त्री-पुरुष की समानता—स्त्रियों की शिक्षा।
- 11—पावन आत्मा की शक्ति।

थियोसोफिकल सोसायटी, पैरिस

जब से मैं पैरिस आया हूँ मझे थियोसोफिकल सोसायटी के बारे में बताया गया है और मैं जानता हूँ कि यह सम्मानित तथा आदरणीय व्यक्तियों द्वारा गठित है। आप सब ज्ञानी, विचारशील तथा आध्यात्मिक आदर्शों के लोग हैं और मेरे लिये यह बड़े हर्ष की बात है कि मैं आप लोगों के बीच उपस्थित हूँ।

ईश्वर का शुक्र है जिसने आज शाम हमें आपस में

मिलाया। मुझे इस से बड़ा आनन्द हो रहा है क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि आप लोग सत्यशोधक हैं। आप पक्षपात के बन्धनों से मुक्त हैं और आपकी उत्कट इच्छा सच्चाई को जानने की है। सच्चाई को सूर्य के समान माना जा सकता है। सूर्य एक देदीप्यमान अस्तित्व है जो सभी परछाइयों को नष्ट कर देता है। ठीक उसी प्रकार सच्चाई हमारी मिथ्या कल्पनाओं का नाश कर देती है। जिस प्रकार सूर्य मानवता के शरीर को जीवन प्रदान करता है, उसी प्रकार सच्चाई उनकी आत्माओं को जीवन प्रदान करती है। सच्चाई एक ऐसा सूर्य है जो क्षितिज के विभिन्न बिन्दुओं से उदय होता है।

कभी कभी सूर्य क्षितिज के मध्य से उदय होता है, ग्रीष्म ऋतु में सुदूर उत्तर से और शरद् ऋतु में सुदूर दक्षिण से—परन्तु यह वही एक ही सूर्य होता है चाहे इसके उदयस्थल कितने ही भिन्न हों।

इसी प्रकार सच्चाई एक ही है यद्यपि इसका प्राकट्य बिल्कुल भिन्न हो। कुछ लोगों की आँखें होती हैं और वे देख सकते हैं। ये लोग सूर्य की पूजा करते हैं चाहे वह क्षितिज के किसी भी बिन्दु से उदित हो। और जब ग्रीष्म ऋतु में उगने के लिए सूर्य शरद् ऋतु का बिन्दु छोड़ता है तो वे लोग जानते हैं कि उसे कहाँ ढूँढा जाये। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो केवल उस बिन्दु की पूजा करते हैं जहाँ से सूर्य उदय हुआ था और जब यह अपने पूरे तेज के साथ किसी अन्य स्थान से उदय होता है तो वे लोग उसी पूर्व उदय स्थल पर अपना पूर्ण ध्यान जमाये रखते हैं। अफसोस, ऐसे लोग सूर्य के वरदानों से वंचित रह जाते हैं। जो लोग वास्तव में स्वयं सूर्य की पूजा करते हैं केवल वे ही उसे पहचान पायेंगे, चाहे यह किसी भी

उदयस्थल से प्रत्यक्ष हो, और तुरन्त अपने मुख उसके प्रकाश की ओर फेर लेंगे।

हमें स्वयं सूर्य की आराधना करनी चाहिए न कि केवल इसके उदयस्थल मात्र की। इसी प्रकार ज्ञानयुक्त लोग सच्चाई की पूजा करते हैं चाहे वे किसी भी क्षितिज पर प्रकट हो। वे व्यक्तित्व के बन्धनों में बँधे नहीं होते परन्तु सच्चाई का अनुसरण करते हैं और उसे पहचानने में समर्थ होते हैं चाहे वह कहीं से भी प्रकट हो। यह वही सच्चाई है जो मानवता को उन्नति करने में सहायता देती है, जो सभी उत्पन्न वस्तुओं को जीवन प्रदान करती है क्योंकि यह जीवन तरु है। अपनी शिक्षा में बहाउल्लाह ने हमें सच्चाई की व्याख्या दी है और थोड़े शब्दों में मैं इसके बारे में आप से कहना चाहता हूँ क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि आप इसे समझ सकने के योग्य हैं।

1—बहाउल्लाह का पहला सिद्धांत है:

सच्चाई की खोज

मानव अवश्य ही अपने आप को सभी प्रकार के पक्षपातों तथा स्वयं अपनी कल्पना के परिणामों से मुक्त कर ले ताकि बिना रुकावट वह सत्य का शोध कर सके। सभी धर्मों का सत्य केवल एक ही है और इसके साधन से विश्व एकता प्राप्त की जा सकती है।

सभी लोगों का एक सर्वसामान्य भौतिक विश्वास होता है।

थियोसोफिकल सोसयटी

एक होने के कारण सत्य का विभाजन नहीं हो सकता और राष्ट्रों में जो मतभेद दिखाई पड़ते हैं उनका कारण मात्र पक्षपात के प्रति लगाव है। यदि लोग केवल मात्र सत्य की खोज करें तो वे अपने आपको संगठित पायेंगे।

2—बहाउल्लाह का दूसरा सिद्धांत है:

मानवमात्र की एकता

वही एक सर्वप्रेमी परमात्मा सारी मानवता को अपनी दिव्य कृपा और दया प्रदान करता है; सभी उस सर्वोच्च के सेवक हैं और उसके उपकार, दया और प्रेममयी कृपा की वृष्टि उसके सभी प्राणियों पर होती है। मानवता का प्रताप प्रत्येक की पैतृक सम्पत्ति है।

सभी लोग एक ही पेड़ के फल और पत्तियाँ हैं, वे सभी आदि मानव के वृक्ष की शाखाएँ हैं, उन सब का मूल एक ही है। एक ही प्रकार की वर्षा की वृष्टि उन सब पर हुई है, एक ही उष्ण सूर्य उनका विकास करता है और एक ही प्रकार की समीर से वे आनन्दित होते हैं। उन में जो अन्तर पाये जाते हैं और जो उन्हें अलग रखते हैं, वे ये हैं: कुछ बच्चों को मार्गदर्शन की, अज्ञानियों को उपदेश की, तथा रोगियों को परिचर्या और आरोग्य की आवश्यकता है। अतः मेरा कहना है कि सारी मानवता ईश्वर की कृपा और दया से घिरी हुई है। जैसे कि पावन ग्रंथ हमें बताते हैं: सभी लोग ईश्वर के सम्मुख एक समान हैं। वह (परमात्मा) किसी व्यक्ति विशेष का लिहाज नहीं करता।

3—बहाउल्लाह का तीसरा सिद्धांत है:

धर्म प्रेम और स्नेह का कारण हो

धर्म सभी हृदयों को आपस में जोड़े, युद्धों और कलह को धरती की सतह से मिटाये, आध्यात्मिकता को जन्म दे और प्रत्येक हृदय में जीवन और प्रकाश का संचार करे। यदि धर्म नापसंदगी नफरत और विभाजन का कारण हो, तो इसका न होना ही अच्छा है ऐसे धर्म से नाता तोड़ लेना ही सच्चा धार्मिक कदम होगा। क्योंकि यह प्रत्यक्ष है कि उपचार का अभिप्राय रोग निवारण है परन्तु यदि उपचार से रोग बढ़े तो इसका न करना ही अच्छा है। कोई भी धर्म जो प्रेम और एकता का कारण नहीं होता, वह धर्म ही नहीं होता। सभी पावन अवतार आत्मा के चिकित्सक तुल्य थे, उन्होंने मानवमात्र के रोग निवारण हेतु विधियाँ बताईं। अतः यदि किसी उपचार से रोग उत्पन्न होता है तो यह महान तथा सर्वोच्च चिकित्सक की ओर से नहीं हो सकता।

4—बहाउल्लाह का चौथा सिद्धांत है:

धर्म तथा विज्ञान की एकता

हम विज्ञान को किसी पक्षी का एक डैना तथा धर्म को दूसरा डैना मान सकते हैं। उड़ान भरने के लिए पक्षी को दोनों डैनों की आवश्यकता होती है, केवल एक ही डैना बेकार

होगा। कोई भी धर्म जो विज्ञान का खण्डन करता है या इसका विरोध करता है, केवल मात्र अज्ञानता है—क्योंकि अज्ञानता ज्ञान की प्रतिपक्षी है।

पक्षपातपूर्ण औपचारिकता तथा विधियों वाला धर्म सच्चाई नहीं होता। हमें शुद्ध हृदय से धर्म तथा विज्ञान को एकरूप करने का साधन बनने का प्रयत्न करना चाहिये।

हज़रत मुहम्मद के दामाद अली ने कहा: "वह जो विज्ञान के अनुरूप है, वह धर्म के भी अनुरूप है।" मनुष्य का विवेक जो समझ नहीं सकता, धर्म को उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। धर्म और विज्ञान सहगामी हैं और विज्ञान के विपरीत कोई भी धर्म सच्चाई नहीं।

5—बहाउल्लाह का पाँचवां सिद्धांत है:

पक्षपात का त्याग

संसार के सभी विभाजन धार्मिक, जातीय या उपजातीय पक्षपात मानवता की नींव का नाश करते हैं। नफरत, युद्ध तथा रक्तपात इन्हीं में से एक या अन्य पक्षपात के कारण होते हैं।

सारे संसार को अवश्य ही केवल एक ही देश की भाँति देखा जाये, सभी राष्ट्रों को एक राष्ट्र और सभी लोगों को एक ही जाति के लोग माना जाये। धर्म, जातियाँ और राष्ट्र के समस्त विभाजन मनुष्य के बनाए हुए हैं और केवल उसके विचार अनुसार ही आवश्यक हैं। प्रभु के सम्मुख न कोई ईरानी है, न अरबी, न फ्रांसीसी, न अंग्रेज। परमात्मा सभी का परमात्मा है और उसके लिये सारी सृष्टि एक ही है। हम

अवश्य ही ईश्वर के आज्ञाकारी हों और अपने सभी पक्षपात त्याग कर तथा पृथ्वी पर शांति की स्थापना कर उस परमात्मा के अनुसरण का प्रयास करें।

6—बहाउल्लाह का छठा सिद्धांत है:

अस्तित्व के साधनों के समान अवसर

प्रत्येक मानव को जीने का अधिकार प्राप्त है, आराम करने का और कुछ हद तक समृद्धि प्राप्त करने का उन्हें अधिकार है। जैसे कोई समृद्धिवान व्यक्ति सुख चैनपूर्ण वातावरण में तथा विलासिता से घिरा अपने महल में वास करता है, उसी प्रकार कोई निर्धन व्यक्ति भी जीवन की आवश्यकताओं को प्राप्त कर सके। कोई भी भूख से न मरे, प्रत्येक को पर्याप्त मात्रा में वस्त्र उपलब्ध हों। किसी व्यक्ति को अत्यधिक प्राप्त न हो जबकि दूसरे के लिये अस्तित्व हेतु न्यूनतम आवश्यकता की प्राप्ति भी संभव न हो।

आइये हम अपनी पूरी शक्ति के साथ सुखद स्थिति लाने का यत्न करें ताकि एक भी मनुष्य निस्सहाय न रहे।

7—बहाउल्लाह का सातवां सिद्धांत है:

लोगों की समानता—कानून के सम्मुख समता

निश्चय ही कानून का शासन हो, व्यक्तिगत नहीं। इस प्रकार संसार एक सौन्दर्य स्थल बन जायेगा और सच्चा भ्रातृभाव उत्पन्न होगा। एकात्मकता प्राप्त कर लोग सत्य

को पा लेंगे।

8—बहाउल्लाह का आठवां सिद्धांत है:

विश्व शांति

प्रत्येक राष्ट्र की सरकार तथा लोगों के द्वारा एक सर्वोच्च न्यायालय का निर्वाचन होगा जहाँ पर प्रत्येक देश और सरकार के सदस्यगण एकरूप होकर इकट्ठे होंगे। सभी झगड़े और विवाद इस न्यायालय के सामने लाये जायेंगे और इसका कार्य विशेष युद्ध की रोकथाम करना होगा।

9—बहाउल्लाह का नवां सिद्धांत है:

धर्म राजनैतिक समस्याओं से संबंध न रखे

धर्म का संबंध आत्मा संबन्धी बातों से है और राजनीति का संसार की वस्तुओं से। धर्म को विचार के संसार में काम करना होता है जबकि राजनीति का संबंध बाह्य स्थितियों के संसार से होता है।

यह धर्म पुरोहितों का काम है कि वे लोगों को शिक्षित करें, उनको निर्देश दें, उनको अच्छा परामर्श और शिक्षा दें ताकि वे आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर सकें। राजनैतिक प्रश्नों के साथ उनका कोई संबंध नहीं।

10—बहाउल्लाह का दसवां सिद्धांत है:

स्त्रियों के लिए शिक्षा तथा निर्देशन

पृथ्वी पर स्त्रियों को पुरुषों के साथ समान अधिकार प्राप्त हैं। धर्म तथा समाज में वे एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग हैं। जब तक स्त्रियों को उनकी उच्चतम सम्भावनाएँ प्राप्त करने से रोका जाता है तब तक पुरुष उस महानता को प्राप्त नहीं कर सकते जिसके वे योग्य हैं।

11—बहाउल्लाह का ग्याहवां सिद्धांत है:

पावन आत्मा की शक्ति, केवल मात्र जिसके साधन से आध्यात्मिक विकास प्राप्त होता है

केवल पावन आत्मा के श्वास द्वारा ही आध्यात्मिक विकास सम्भव हो सकता है। भौतिक संसार चाहे कितनी ही उन्नति कर ले, चाहे यह अपने आप को कितने ही भव्य रूप से सुसज्जित कर ले, यह एक प्राण रहित शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता जब तक कि इसके अन्दर आत्मा न हो, क्योंकि यह आत्मा ही है जो शरीर में प्राण फँकती है। केवल मात्र शरीर की कोई वास्तविक विशेषता नहीं होती। पावन आत्मा के वरदानों से वंचित भौतिक शरीर निष्क्रिय होगा।

बहाउल्लाह के कुछ नियमों की संक्षिप्त व्याख्या यह है:

संक्षेप में, हम सब के लिये सत्य का प्रेमी होना ही उचित है। हमें हर अवसर और हर स्थान पर सत्य की खोज करना

थियोसोफिकल सोसयटी

चाहिये, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि व्यक्तित्वों के प्रति हम में लगाव उत्पन्न न हो। हमें प्रकाश को निहारना चाहिए चाहे वह कहीं से चमके, और हमें सत्य के प्रकाश को पहचान सकने के योग्य होना चाहिये चाहे यह कहीं से भी प्रकट हो। हमें कांटों से घिरे गुलाब की सुगन्ध का आनन्द उठाना चाहिए। प्रत्येक स्वच्छ झरने के बहते हुए जल से हमें अपनी प्यास को शांत करना चाहिए।

जब से मैं पैरिस आया हूँ, मुझे आप जैसे पैरिस वासियों से मिल कर बड़ी खुशी हुई है क्योंकि, ईश्वर की स्तुति हो, आप विवेकशील हैं, पक्षपातरहित हैं और सत्य को जानने के इच्छुक हैं। आपके हृदय मानव प्रेम से परिपूर्ण हैं और यथासम्भव आप परोपकारी कार्यों तथा एकता की स्थापना में प्रयत्नशील हैं। इसी बात की बहाउल्लाह ने इच्छा प्रकट की है।

यही कारण है कि मैं आप लोगों के बीच इतना प्रसन्न हूँ और मैं आप के लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप ईश्वर के अनुग्रहों के पात्र बनें और इस समुचे देश में आध्यात्मिकता को फैलाने के साधन बनें।

आप के पास एक अद्भुत भौतिक सभ्यता है और इसी प्रकार आध्यात्मिक सभ्यता भी आप को प्राप्त होगी।

श्री ब्लैक ने अब्दुल-बहा को धन्यवाद दिया जिसके उत्तर में उन्होंने कहा:

"मैं आपकी उन कृपापूर्ण भावनाओं के लिए अत्यन्त आभारी हूँ जिन्हें आपने अभी अभी व्यक्त किया है। मुझे आशा है कि ये दोनों आन्दोलन शीघ्र ही सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगे। तब मानवमात्र की एकता संसार के बीच अपना

शिविर बना लेगी।”

पहला सिद्धांत—सत्य की खोज

4 एवेन्यु डि केमोइन्स, पैरिस
नवम्बर 10

बहाउल्लाह की शिक्षा का पहला सिद्धांत है: सत्य की खोज

यदि कोई व्यक्ति सत्य की खोज में सफल हो जाता है तो सब से पहले वह सभी परम्परागत अन्धविश्वासों की ओर से अपनी आँखें मूंद ले।

यहूदियों के पारम्परिक अन्धविश्वास हैं, बौद्ध तथा जौरास्ट्रीयन भी उन से मुक्त नहीं और न ही ईसाई। सभी धर्म धीरे धीरे परम्परा तथा हठधर्मी के बन्धनों में जकड़ गये हैं।

सभी अपने आप को सच्चाई का एकमात्र संरक्षक समझते हैं और प्रत्येक अन्य धर्म को गलतियों का पुलिन्दा बताते हैं। केवल वे ही सही हैं और अन्य सब गलत। यहूदियों की मान्यता है कि केवल वे ही सत्य के स्वामी हैं और वे अन्य सभी धर्मों की निन्दा करते हैं। ईसाईयों की मान्यता है कि केवल उनका धर्म ही सच्चा है, अन्य सभी झूठे हैं। यही हाल बौद्धों, मुसलमानों का है। सभी अपने आपको संकुचित बनाए हैं। यदि सभी एक दूसरे की निन्दा करेंगे तो हम सत्य की खोज कहाँ करेंगे? एक दूसरे का खण्डन करने वाले कभी सच्चे नहीं हो सकते। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि केवल उसका

सत्य की खोज

धर्म-विशेष ही सच्चा है तो वह अन्य धर्मों की सच्चाई से आँखें मूंद लेता है। उदाहरणस्वरूप यदि कोई यहूदी इसराइल के धर्म के ऊपरी व्यवहार के बन्धन में बन्धा हुआ है, वह अपने आप को यह समझने देना नहीं चाहता कि किसी अन्य धर्म में भी सच्चाई हो सकती है। वह समझता है कि केवल उसी के धर्म में सच्चाई है।

अतः हमें अपने आप को धर्म के ऊपरी आकारों तथा व्यवहारों से अलग कर लेना चाहिए। हमें निश्चय ही यह जान लेना चाहिए कि यह आकार तथा व्यवहार, चाहे कितने ही सुन्दर हों, केवल मात्र ऐसे आवरण हैं जिन्होंने दिव्य सत्य के जीवित अंगों तथा स्नेहमय हृदय को ढांक रखा है यदि हम सभी धर्मों में निहित सत्य को पाने में सफल होना चाहते हैं तो निश्चय ही हमें पारम्परिक पक्षपातों का त्याग करना होगा। यदि कोई जौरास्ट्रीयन यह मानता है कि सूर्य ही ईश्वर है तो वह अन्य धर्मों के साथ कैसे एकरूप हो सकता है? जब मूर्ति पूजक अपनी भिन्न मूर्तियों में विश्वास करते हैं, तो फिर वे किस प्रकार ईश्वर की एकता को समझ सकते हैं?

अतः यह प्रत्यक्ष है कि सत्य की खोज में प्रगति करने के लिए हमें निश्चय ही अन्धविश्वासों का त्याग करना होगा। यदि सभी साधक इस नियम का अनुसरण करें तो उन्हें सत्य का स्पष्ट स्वरूप दिखाई देगा।

सत्य की खोज हेतु यदि पाँच व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो वे अपनी खोज का आरंभ व अपने आप को स्वयं अपनी सभी विशेष परिस्थितियों तथा पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर करें। सत्य की प्राप्ति के लिए निश्चय ही हमें अपने पक्षपातों तथा छोटे और तुच्छ विचारों का त्याग करना होगा। इसके लिए एक

उदार और ग्रहणशील मन का होना आवश्यक है। यदि हमारा मन केवल अहममात्र से भरा हुआ है, तो इसमें जीवन जल की कोई गुंजायश नहीं। यह तथ्य कि हम अपने आपको सही और शेष सब को गलत समझते हैं, एकता की राह में सब से बड़ी रुकावट है और सत्य पर पहुँचने के लिये एकता अत्यंत आवश्यक है क्योंकि सत्य केवल एक ही होता है।

इसलिए यह अनिवार्य है कि यदि हम सच्चे हृदय से सच्चाई की खोज करना चाहते हैं तो हम स्वयं अपने विशेष पक्षपातों तथा अन्धविश्वासों का त्याग कर दें। हम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक अपने मन में एक ओर कट्टरता, अंधविश्वास तथा पक्षपात तथा दूसरी ओर सत्य में अन्तर को नहीं जान लेते। जब हम शुद्ध हृदय के साथ किसी वस्तु की तलाश में होते हैं तो हम हर स्थान पर उसकी खोज करते हैं। सत्य की अपनी खोज में भी हमें इसी नियम का अनुसरण करना चाहिये।

विज्ञान को अवश्य ही स्वीकार किया जाना चाहिए। कोई एक सत्य किसी अन्य सत्य का खण्डन नहीं कर सकता। प्रकाश सदा सर्वदा अच्छा होता है चाहे वह किसी भी दीप से प्रकट हो रहा हो। गुलाब का फूल सुन्दर होता है चाहे वह किसी भी बगिया में खिले। एक तारे में वही ज्योति होती है चाहे वह पूर्व में चमके या पश्चिम में। पक्षपात से मुक्त हो जाइये, फिर आप सत्यता के सूर्य से प्रेम करने लगेंगे चाहे वह क्षितिज के किसी भी बिन्दु से उदित हो! आप अनुभव करेंगे कि यदि ईसा मसीह में सच्चाई का दिव्य प्रकाश दीप्तिमान था, तो वह मूसा और महात्मा बुद्ध में भी चमका था। सच्चे हृदय से खोजने वाला इसी सच्चाई पर पहुँचेगा। यही अर्थ है

मानवमात्र की एकता

"सत्य की खोज" का।

इसका यह भी अर्थ है कि पहले जो कुछ भी हमने सीखा और सत्य के मार्ग में जो भी हमारे लिये रुकावट बने, निश्चय ही वह सब कुछ भूल जाने को हम तैयार हों। यदि आवश्यक हो तो हम अपनी शिक्षा को पुनः आरम्भ करने से भी न हिचकिचायें। किसी धर्म विशेष या व्यक्ति विशेष के प्रति अपने स्नेह को हम अपनी आँखों पर पर्दा न डालने दें कि हम अन्धविश्वासों के बन्धनों में बँध कर रह जायें! जब हम इन सभी बन्धनों से मुक्त हो स्वतंत्र मन से तलाश करेंगे, तब हम अपने लक्ष्य पर पहुँचने के योग्य बन सकेंगे।

"सच्चाई की खोज करो, सच्चाई तुम्हें मुक्त करायेगी।" इस प्रकार हम सभी धर्मों में सत्य का अवलोकन करेंगे, क्योंकि सभी में सत्य है और सत्य एक है!

दूसरा सिद्धांत—मानवमात्र की एकता

नवम्बर 11

कल मैंने बहाउल्लाह की शिक्षा के पहले सिद्धांत "सत्य की खोज" के बारे में बताया था, कि किस प्रकार मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह हर प्रकार के अन्धविश्वास और हर उस परम्परा को छोड़ दे जो सभी धर्मों में निहित सत्य को उसकी दृष्टि से ओझल कर देते हैं। धर्म के किसी भी रूप से प्रेम करते हुए तथा उसमें निष्ठा रखते हुए निश्चय ही वह अन्य धर्मों से घृणा न करे। यह जरूरी है कि वह सभी धर्मों में सत्य का शोध करें और यदि उसकी खोज सच्चे मन से होगी

मानवमात्र की एकता

तो निश्चय ही वह सफल होगा।

अब, "सत्य के शोध" में हमारी पहली खोज दूसरे सिद्धांत की ओर हमारा मार्गदर्शन करेगी जो कि "मानवमात्र की एकता" है। सभी लोग केवल एक ही प्रभु के सेवक हैं। एक ही परमात्मा संसार के सभी राष्ट्रों पर शासन करता है और अपने सभी बालकों में उसकी एक समान रुचि है। सभी लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं। मानवता का मुकुट प्रत्येक मानव के मस्तक पर रखा हुआ है।

सृष्टि की दृष्टि में उसके सभी बालक एक समान हैं, उसके वरदान सब को प्राप्त होते हैं। वह किसी एक या दूसरे राष्ट्र विशेष का पक्ष नहीं लेता, सभी एक समान उसकी सृष्टि हैं। ऐसा होने पर हम विभाजन क्यों करें और एक जाति को दूसरी जाति से जुदा क्यों करें? अंधविश्वास और परम्परा की रुकावट खड़ी कर हम लोगों में घृणा और विवाद क्यों उत्पन्न करें?

मानव परिवार में अन्तर केवलमात्र अंश का है। कुछ बच्चों के समान अबोध हैं जिन्हें तब तक शिक्षा दी जानी चाहिये जब तक कि वे प्रौढ़ता न प्राप्त कर लें। कुछ रोगी के समान हैं जिनका उपचार सावधानी और प्रेमपूर्वक करना आवश्यक है। कोई भी बुरा या दुष्ट नहीं। निश्चय ही हम इन बेचारे बच्चों से दूर न भागें। हम अवश्य ही उनके साथ बड़ी दया का व्यवहार करें, अज्ञानियों को शिक्षा दें और रोगियों की प्रेम के साथ परिचर्या करें।

विचार कीजिये: अस्तित्व के लिये एकता आवश्यक है। प्रेम जीवन का मूल कारण है। दूसरी ओर, जुदाई मृत्यु का कारण होती है। उदाहरणस्वरूप, भौतिक सृष्टि के संसार में

मानवमात्र की एकता

सभी वस्तुएँ अपने वास्तविक जीवन के लिए एकता की मोहताज हैं। लकड़ी, खनिज या पत्थर को बनाने वाले तत्व वास्तव में आकर्षण के विधान द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं। यदि इस विधान का तांता एक क्षण के लिए भी टूट जाए तो यह तत्व इकट्ठे नहीं रह पाएँगे और बिखर जायेंगे और उस विशेष आकार में उस वस्तु का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। आकर्षण का विधान ही कुछ विशेष तत्वों को इस सुन्दर फूल के रूप में लाया है परन्तु जब वह आकर्षण इस केन्द्र से हटा लिया जाएगा तो फूल कुम्हला जायेगा और पुष्प के रूप में उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

यही घटना मानवता के महान शरीर के साथ घटती है। आकर्षण, अनुरूपता और एकता का अद्भुत विधान ही इस आश्चर्यजनक सृष्टि को थामें रखता है।

जैसा सम्पूर्ण के साथ होता है वैसा ही टुकड़ों के साथ भी होता है। चाहे फूल हो या मानव शरीर, जब आकर्षण का नियम इससे खींच लिया जाता है तो फूल मुरझा जाता है और मनुष्य मर जाता है। अतः यह प्रत्यक्ष है कि आकर्षण, एकरूपता, एकता और प्रेम ही जीवन के कारण है जबकि घृणा, विवाद, नफरत, और जुदाई मृत्यु लाते हैं।

हमने देखा है कि अस्तित्व के संसार में जो कुछ भी विभाजन लाता है वह विनाश का कारण होता है। इसी प्रकार आत्मा के संसार में भी इसी नियम का परिचलन है।

अतः उस एकमेव ईश्वर के प्रत्येक सेवक के लिए आवश्यक है कि वह सभी घृणाओं, विवादों और झगड़ों से बचते हुए प्रेम विधि का आज्ञाकारी बना रहे। जब हम प्रकृति को निहारते हैं तो हम देखते हैं कि सौम्य जानवर (भद्र

तीसरा सिद्धान्त

पशु)रेवड़ों या झुण्डों में जमा होते हैं जबकि हिंसक और जंगली प्राणी जैसे कि शेर, बाघ, भेड़िये आदि सभ्यता से दूर जंगलों में रहते हैं। दो भेड़िये या दो शेर मैत्रीपूर्वक एक साथ नहीं रह सकते हैं, परन्तु हजार मेमने एक ही बाड़े में रह लेंगे और मृगों की बहुत बड़ी संख्या एक ही झुण्ड बना लेगी। दो बाज एक ही स्थान पर रह लेंगे परन्तु हजारों फाख्ताएँ एक ही स्थान पर इकट्ठी होकर नहीं रह सकती हैं।

मानव की गणना कम से कम सौम्य (भद्र) जन्तुओं में होनी चाहिये, परन्तु जब वह हिंसक बन जाता है तो वह जन्तु सृष्टि के क्रूरतम जानवर से भी अधिक क्रूर और द्वेषपूर्ण हो जाता है।

बहाउल्लाह ने "मानव जाति के संसार की एकता" की घोषणा की है। सभी लोग और राष्ट्र एक ही परिवार के सदस्य हैं, एक ही पिता के बालक हैं और एक दूसरे के लिए भाई बहन सदृश्य बनें। मुझे आशा है कि आप अपने जीवन में इस शिक्षा को प्रतिबिम्बित करने तथा फैलाने का प्रयास करेंगे।

बहाउल्लाह ने कहा कि हमें अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना चाहिए और उनका मित्र बनना चाहिये। सभी लोग यदि इस नियम का पालन करें तो मानव जाति के हृदय में सर्वमहान एकता तथा सहमति की स्थापना होगी।

तीसरा सिद्धान्त

("धर्म को प्रेम और स्नेह का कारण होना चाहिए", इस बात पर इस पुस्तक में दिये गये व्याख्यानों के नोट्स तथा अन्य कई नियमों की व्याख्याओं में अत्यधिक बल दिया जा चुका है।)

चौथा सिद्धांत —

धर्म तथा विज्ञान के बीच सम्बन्ध की स्वीकृति

4 ऐवन्यू डी केमोइन्स, पैरिस

12 नवम्बर

अब्दुल-बहा ने कहा:

मैंने आपको बहाउल्लाह के कुछ सिद्धांतों के विषय में बतलाया है, जैसे कि "सत्य की खोज", और "मानवजाति की एकता" अब मैं चौथे सिद्धांत की व्याख्या करूँगा जो "धर्म तथा विज्ञान के बीच की स्वीकृति" है।

सच्चे धर्म और विज्ञान के बीच कोई प्रतिवाद नहीं। जब कोई धर्म विज्ञान का प्रतिवाद करता है तो वह मात्र अन्धविश्वास बन जाता है। जो कुछ भी ज्ञान के प्रतिकूल है, वह अज्ञानता है।

कोई मनुष्य उस बात को तथ्य कैसे मान सकता है जिसे विज्ञान ने असम्भव सिद्ध कर दिया हो? अपने विवेक के बावजूद यदि वह उसे स्वीकार करता है तो यह विश्वासन होकर केवल अज्ञानतापूर्ण अन्धविश्वास है। सभी धर्मों के वास्तविक नियम विज्ञान की शिक्षाओं के अनुकूल होते हैं।

ईश्वर की एकता तर्कसंगत है और यह विचार वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा प्राप्त किए परिणामों के प्रतिकूल नहीं।

सभी धर्म शिक्षा देते हैं कि हम अवश्य ही सद्कार्य करें,

उदार, शुद्धहृदयी, सत्यप्रिय विधिपालक तथा निष्ठावान बनें। यह सब यथोचित है और एकमात्र युक्तिसंगत साधन है जिसके द्वारा मानवता उन्नति कर सकती है।

सभी धार्मिक विधान युक्ति के अनुकूल होते हैं और उन लोगों के लिए उपयुक्त होते हैं जिनके लिए उनकी रचना की जाती है तथा उस युग के लिए भी उपयुक्त होते हैं जिनके लिए उन्हें बनाया गया और उस युग के लिए जिस युग में उनका पालन किया जाना होता है।

धर्म के दो मुख्य भाग होते हैं:

1—आध्यात्मिक

2—व्यावहारिक

आध्यात्मिक भाग कदापि परिवर्तित नहीं होता। ईश्वर के सभी अवतारों और पैगम्बरों ने एक ही सच्चाई की शिक्षा दी है और एक ही प्रकार का आध्यात्मिक विधान दिया है। उन सबने केवल एक ही नैतिक संहिता की शिक्षा दी है। सत्य का कोई विभाजन नहीं। मानव विवेक को उजागर करने के लिए (सत्यता के) सूर्य ने बहुत सी रश्मियाँ भेजी हैं, परन्तु प्रकाश सदा एक ही प्रकार का होता है।

धर्म का व्यावहारिक भाग ऊपरी आकारों तथा रीतियों से और कुछ अपराधों की दण्ड विधि से सम्बन्ध रखता है। कानून का यह भौतिक पहलू है तथा लोगों के रीति रिवाजों और आचरण का पथ प्रदर्शन करता है।

मूसा के समय में दस अपराध ऐसे थे जिनका दण्ड मृत्यु था। जब ईसा आये तो इसमें परिवर्तन कर दिया गया। "आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत" की पुरानी सूक्ति को "—अपने शत्रुओं से प्रेम करो, तुम से घृणा करने वालों के प्रति

धर्म तथा विज्ञान

सद्व्यवहार करो” में बदल दिया गया और इस प्रकार पुराने कठोर विधान को प्रेम, दया तथा सहिष्णुता के विधान में तबदील कर दिया गया।

पुराने जमाने में चोरी करने के अपराध के दण्डस्वरूप दायां हाथ काट दिया जाता था। हमारे आज के युग में इस कानून को इस प्रकार लागू नहीं किया जा सकता। आज के युग में अपने बाप को बुरा भला कहने वाले व्यक्ति को भी जिन्दा रहने दिया जाता है, जबकि पुराने युग में उसका वध कर दिया जाता था। अतः यह प्रत्यक्ष है कि जबकि आध्यात्मिक विधि में कभी परिवर्तन नहीं होता, व्यावहारिक नियमों में समय की आवश्यकता अनुसार अवश्य ही परिवर्तन हो। धर्म के दोनों पहलुओं में आध्यात्मिक पहलू महान और अधिक महत्वपूर्ण है और यह सदा सर्वदा ऐसा ही होता है, यह कभी परिवर्तित नहीं होता। कल भी यह ऐसा ही था, आज भी ऐसा है और सदा सर्वदा ऐसा ही रहेगा। “जैसा यह आरंभ में था, वैसा ही आज भी है और ऐसा ही हमेशा होगा।”

प्रत्येक धर्म के आध्यात्मिक अपरिवर्तनीय विधान में दिए गये नैतिक प्रश्न तर्क की दृष्टि से सही हैं। यदि धर्म तर्कसंगत औचित्यों के प्रतिकूल हो तो वह धर्म न होकर मात्र परम्परा होगी। धर्म तथा विज्ञान दो पंख हैं जिनके द्वारा मनुष्य का विवेक ऊँचाइयों में उड़ान भर सकता है, जिनके द्वारा मानव की आत्मा प्रगति कर सकती है। केवलमात्र एक ही पंख के साथ उड़ान कर सकना संभव नहीं। यदि मनुष्य केवल मात्र एक ही पंख के साथ उड़ान भरने की कोशिश करेगा तो शीघ्र ही वह अन्धविश्वास की दलदल में गिर जायेगा; जबकि दूसरी ओर मात्र विज्ञान के पंख के साथ वह कुछ भी उन्नति

धर्म तथा विज्ञान

नहीं कर सकेगा परन्तु भौतिकता की निराशापूर्ण कीचड़ में धंस जायेगा। वर्तमान युग के सभी धर्म अन्धविश्वासी व्यवहारों में फंस कर रह गये हैं तथा शिक्षा के उन वास्तविक नियमों जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, और समय की वैज्ञानिक खोजों, दोनों से ही अलग हो गये हैं। बहुत से धार्मिक नेता यह सोचने लगे हैं कि धर्म का महत्त्व मुख्यतः कुछ रुढ़िवादी सिद्धान्तों के संकलन का अनुसरण करने और कुछ रीति रिवाजों को व्यवहार में लाने में है। उन लोगों को भी ऐसा ही विश्वास दिलाया जाता है जिनकी आत्माओं के उपचार करने का वे दावा करते हैं और वे लोग भी ऊपरी आकारों को वास्तविक सच्चाई समझ कर बड़ी दृढ़ता के साथ उनका अनुसरण करते हैं।

भिन्न धर्मों तथा भिन्न धर्म-गुटों के इन उपचारों तथा विधियों में अन्तर होता है, यहाँ तक कि वे एक दूसरे का खण्डन करते हैं, जिससे असहमति, घृणा तथा आपसी फूट अंकुरित होते हैं। इन सभी मतभेदों का परिणाम यह होता है कि बहुत से सभ्य लोग यह विश्वास करने लगते हैं कि धर्म तथा विज्ञान एक दूसरे के प्रतिकूल विषय हैं, कि धर्म को किसी प्रकार की चिंतन शक्ति की आवश्यकता नहीं तथा विज्ञान का इस पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होना चाहिए, अपितु अवश्य ही वे एक दूसरे के प्रतिकूल हों। इसका दुर्भाग्यपूर्ण प्रभाव यह हुआ कि विज्ञान धर्म से दूर होता चला गया है और धर्म केवल मात्र उन धर्म गुरुओं का, जो विज्ञान के विपरीत होते हुए भी अपनी पसन्द के सिद्धान्तों की स्वीकृति पर बल देते हैं, अन्धा तथा उदासीन अनुसरण मात्र बन कर रह गया है। यह मूर्खता है क्योंकि यह पूर्ण प्रत्यक्ष है कि विज्ञान प्रकाश

है और ऐसा होने के कारण वास्तव में धर्म ज्ञान का विरोध नहीं करता।

"प्रकाश तथा अन्धकार", "धर्म तथा विज्ञान" जैसी सूक्तियों (मुहावरों) से हम परिचित हैं। परन्तु धर्म जो विज्ञान के साथ हाथ से हाथ मिला कर नहीं चलता स्वयं अन्धविश्वास तथा अज्ञानता के अन्धकार में डूबा हुआ है।

विश्व में फूट तथा मतभेद का बड़ा भाग इन मानव रचित प्रतिरोधों तथा खण्डनों के कारण उत्पन्न होता है। यदि धर्म विज्ञान के साथ सहमत हो और वे हाथ से हाथ मिला कर चलें तो बहुत सी घृणा और कटुता, जो इस समय मानव जाति की दुर्दशा का कारण बनी हुई हैं, का अन्त हो जाये।

विचार कीजिये कि वह क्या वस्तु है जो मानव को सृष्टि के अन्य प्राणियों से विलक्षण बनाती है और उनको एक विशेष प्राणी बनाती है। क्या यह उसकी तर्कशक्ति, उसका विवेक नहीं? धर्म के अध्ययन में क्या उसे इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए? मैं आप से कहता हूँ: तर्क तथा विज्ञान के तराजू में प्रत्येक उस वस्तु को तोलिये जो आपके सामने धर्म के रूप में प्रस्तुत की जाती है। यदि वह इस परीक्षा में पूरी उतरे तो उसे स्वीकार कर लीजिये क्योंकि वह सच्चाई है! परन्तु यदि वह इसके अनुकूल न हो तो उसे अस्वीकार कर दें क्योंकि वह अज्ञानता मात्र है ! अपने आस पास निहारिये और अवलोकन कीजिये कि आज का संसार किस प्रकार अन्धविश्वासों तथा बाह्य आकारों (आडम्बरों) में डूबा हुआ है।

कुछ लोग स्वयं अपनी कल्पना की उपज की उपासना करते हैं। वे अपने लिये एक काल्पनिक भगवान की रचना

करते हैं और उसकी पूजा करते हैं। जबकि उनके सीमित दिमाग की रचना सभी गोचर तथा अगोचर वस्तुओं का असीम तथा सर्वशक्तिमान सृष्टा नहीं हो सकती। अन्य लोग सूर्य, वृक्षों अथवा पत्थरों की पूजा करते हैं। अतीत में ऐसे भी लोग थे जो समुद्र, मेघ और यहाँ तक कि मिट्टी की भी पूजा करते थे!

आजकल लोगों में ऊपरी बनावटों (आडम्बरों) तथा रीति-रिवाजों के प्रति इतना श्रद्धापूर्ण लगाव उत्पन्न हो गया है कि वे विधि के किसी विषय या किसी विशेष प्रथा पर झगड़ा कर बैठते हैं यहाँ तक कि हर ओर से उकता देने वाले तर्क तथा बेचैनी की बातें सुनाई देने लगती हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनकी बुद्धि क्षीण है और उनकी तर्कशक्तियों का विकास नहीं हुआ परन्तु ऐसे लोगों में समझने बूझने की क्षमता न होने के कारण धर्म की शक्ति तथा ताकत पर कभी भी सन्देह नहीं करना चाहिए।

एक छोटा बच्चा प्रकृति पर शासन करने वाले नियमों को नहीं समझ सकता परन्तु इसका कारण उस बच्चे का अपरिपक्व विवेक है। जब वह बड़ा हो जायेगा और शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर लेगा तो वह भी अनन्त यथार्थों को समझने लगेगा। बच्चा इस यथार्थ को नहीं समझता कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है परन्तु जब उसकी बुद्धि प्रखर हो जाती है तो यह सत्य उस पर प्रत्यक्ष और साफ हो जाता है।

चाहे कुछ व्यक्तियों का विवेक यथार्थता के समझने में अत्यंत निर्बल या बिल्कुल ही कच्चा क्यों न हो फिर भी धर्म के लिए विज्ञान के प्रतिकूल होना असम्भव है।

ईश्वर ने धर्म तथा विज्ञान को हमारी सूझबूझ के लिए एक

पक्षपातों का उन्मूलन

मापदंड के तुल्य बनाया है। सावधान, ऐसा न हो कि आप ऐसी अद्भुत शक्ति के प्रति असावधानी बर्ते। सभी वस्तुओं को इस तराजू में तौलें।

जिस किसी को भी बोधशक्ति प्राप्त है उसके लिए धर्म एक खुली पुस्तक की भाँति है परन्तु तर्कशक्ति तथा विवेक से वंचित किसी व्यक्ति के लिए ईश्वर के दैवी यथार्थ को समझ सकना कैसे सम्भव हो सकता है।

अपने सभी विश्वासों का विज्ञान के साथ समन्वय करें। इसका कोई विरोध नहीं हो सकता क्योंकि सच्चाई केवल एक ही है। अन्धविश्वासों, रूढ़िवादों तथा अविवेकपूर्ण हठधर्मी से मुक्त धर्म जब विज्ञान के साथ एकरूपता दिखायेगा तो अपने बहाव के वेग में सभी प्रकार के युद्धों, असहमतियों, मतभेदों और संघर्षों को बहा ले जायेगा और तब सारी मानवजाति प्रभु प्रेम की शक्ति में संगठित हो जायेगी।

पाँचवां सिद्धांत—पक्षपातों का उन्मूलन

4, ऐवेन्यू डि केमोइन्स,

पैरिस

13 नवम्बर

हर प्रकार के पक्षपात, चाहे वे धार्मिक हों, जातीय हों, राजनैतिक हों या राष्ट्रीय, अवश्य ही त्याग दिए जाने चाहिए क्योंकि इन पक्षपातों ने विश्व को रोगग्रस्त कर दिया है। यह एक भयंकर बीमारी है जिसका यदि उपचार न किया जाये तो वह सारी मानव जाति को तहस-नहस कर देने की क्षमता

पक्षपातों का उन्मूलन

रखती है। प्रत्येक विध्वंसक युद्ध तथा उसके परिणामस्वरूप रक्तपात और दुर्दशा का कारण कोई न कोई पक्षपात ही रहा है।

आज के युग में चल रहे दुःखद युद्धों का कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति कट्टर धार्मिक घृणा अथवा जाति या वर्ण के पक्षपात हैं।

पक्षपात द्वारा खड़ी की गई ये रुकावटें जब तक दूर नहीं हो जातीं, तब तक मानवता के लिये सुख शांति की प्राप्ति संभव नहीं। इसी कारण बहाउल्लाह ने कहा है कि "ये पक्षपात मानवता के लिये विनाशकारी हैं।"

सबसे पहले धार्मिक पक्षपात के बारे में विचार कीजिये; तथाकथित धार्मिक लोगों के राष्ट्रों का ध्यान कीजिये। यदि वे ईश्वर के सच्चे पूजारी होते तो वे उसके उस कानून का पालन करते जो उन्हें एक-दूसरे की हत्या करने से रोकता है।

यदि धर्म पुरोहित वास्तव में प्रेम के ईश्वर की आराधना करते और दैवी प्रकाश की सेवा करते तो वे लोगों को सर्वोच्च आज्ञा की शिक्षा देते कि "सभी लोगों के साथ प्रेम और सद्भावना का व्यवहार करो"। परन्तु हम देखते हैं कि इसके प्रतिकूल हो रहा है क्योंकि प्रायः यह धर्म पुरोहित ही होते हैं जो राष्ट्रों को युद्ध के लिए उकसाते हैं। धार्मिक घृणा सदा अत्यंत क्रूर होती है।

सभी धर्म शिक्षा देते हैं कि हम एक दूसरे से प्रेम करें, दूसरों के दोष उछालने से पहले स्वयं अपने दोषों और त्रुटियों का अवलोकन करें और निश्चय ही अपने पड़ोसियों को तुलना में हम अपने आप को श्रेष्ठ न समझें। हम अवश्य

पक्षपातों का उन्मूलन

ही इस बात का ध्यान रखें कि हम अपने आप को श्रेष्ठ न समझें ताकि ऐसा न हो कि हमें नीचा देखना पड़े।

हम कौन हैं जो हम परखें? हम कैसे जान पायेंगे कि ईश्वर की दृष्टि में सबसे खरा और ईमानदार व्यक्ति कौन है? प्रभु के विचार हमारे विचारों के समान नहीं होते। ऐसे कितने ही व्यक्ति हुए हैं जो अपने मित्रों की दृष्टि में साधु समान थे परन्तु घोर अपमान के गड्ढे में जा गिरे। जुडास इसकैरियट का विचार कीजिए, उसका आरंभ अच्छा हुआ परन्तु उसके अंत को याद कीजिये। दूसरी ओर, ईसा मसीह के पट्टशिष्य पाल अपनी आरंभिक अवस्था में ईसा के शत्रु थे जबकि बाद में वे उनके सर्वविश्वसनीय सेवक बन गये। हम किस प्रकार स्वयं अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निन्दा कर सकते हैं?

अतः हमें विनम्र तथा पक्षपात रहित बनना चाहिए और दूसरों की भलाई को अपनी भलाई पर श्रेष्ठता देनी चाहिए। हमें यह कभी न कहना चाहिए कि "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, परन्तु वह नास्तिक हैं। मैं ईश्वर के निकट हूँ जबकि वह बहिष्कृत हैं।" हम यह कभी नहीं जान सकते कि अंतिम निर्णय क्या होगा। अतः हमें उन सब लोगों की सहायता करनी चाहिए जिन्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता है।

हमें अज्ञानियों को ज्ञान देना चाहिए और प्रौढ़ अवस्था की प्राप्ति तक छोटे बच्चों की देख-रेख करनी चाहिए। यदि हम किसी व्यक्ति को दयनीय हालत अथवा पाप की गहराईयों में गिरे हुए देखें तो हम अवश्य ही उसके प्रति कृपा दर्शाएँ, उसका हाथ थामें और पुनः अपने पाँव पर खड़ा होने तथा

पक्षपातों का उन्मूलन

शक्ति प्राप्त करने में उसकी सहायता करें। प्रेम और कोमलता के साथ उसका मार्गदर्शन करें और उसके साथ मित्र का सा व्यवहार करें, शत्रु जैसा नहीं।

किसी भी सह-मानव को बुरा समझने का हमें कोई अधिकार नहीं। जहाँ तक जातीय पक्षपात का संबंध है, यह एक भ्रम है, सीधा-सादा एक अन्धविश्वास है, क्योंकि ईश्वर ने हमें एक ही जाति से उत्पन्न किया है। आरम्भ में किसी प्रकार के मतभेद नहीं थे क्योंकि हम सब आदि पुरुष की संतान हैं। आरम्भ में भिन्न देशों के बीच कोई सीमा या सरहद भी नहीं थी। भूमि का कोई भाग किसी एक जाति विशेष की संपत्ति नहीं था। ईश्वर की दृष्टि में भिन्न जातियों के बीच कोई अन्तर नहीं। तो फिर मानव ऐसे पक्षपात की रचना क्यों करें? किसी भ्रम के कारण हुए युद्ध को हम सही कैसे मान सकते हैं?

ईश्वर ने लोगों की सृष्टि इसलिए नहीं की कि वे एक दूसरे का नाश करें। सभी जातियाँ, जन जातियाँ, धर्म गुट तथा वर्ग अपने परमपिता परमात्मा की कृपाओं के एक जैसे भागीदार हैं।

केवल मात्र अन्तर जो है वह शुद्ध हृदयता तथा ईश्वरीय विधान की आज्ञाकारिता के अंशों में है। कुछ ऐसे लोग हैं जो ज्योतिर्मय मशाल की भाँति हैं, अन्य ऐसे हैं जो मानवता के नभ में चमकते सितारों की भाँति हैं। मानवता के प्रेमी ये सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति होते हैं चाहे वे किसी भी राष्ट्र, धर्म या वर्ग के हों। क्योंकि ऐसे ही लोगों से ईश्वर ये पावन शब्द संबोधित करेगा: "अति उत्तम, हे मेरे प्रिय तथा विश्वस्त सेवकों।" उस समय वह यह नहीं पूछेगा "क्या तुम अंग्रेज

पक्षपातों का उन्मूलन

हो, फ्रांसीसी हो या शायद ईरानी हो? तुम पूर्व के हो या पश्चिम के?"

एकमात्र सच्चा विभाजन जो है वह यह है कि कुछ दिव्य पुरुष होते हैं और कुछ सांसारिक—उस सर्वोच्च परमात्मा से प्रेम करने वाले मानवता के आत्म उत्सर्गी सेवक जो मैत्रीभाव तथा एकता का कारण बनते हैं तथा शांति और सदभावना की शिक्षा देते हैं। दूसरी ओर ऐसे स्वार्थी लोग होते हैं जो अपनी ही बहनों और भाइयों से घृणा करते हैं और जिनके हृदयों में प्रेममयी कृपा के स्थान पर पक्षपात भरा रहता है और जिन का प्रभाव असहमति तथा कलह को जन्म देता है।

किस जाति या किस वर्ण से लोगों के ये दो गिरोह सम्बन्ध रखते हैं—श्वेत वर्ण से, पीत वर्ण से या श्याम वर्ण से? किस दिशा से उनका सम्बन्ध होता है—पूर्व से या पश्चिम से, उत्तर से या दक्षिण से? यदि ये विभाजन ईश्वर ने किये हैं तो हम और अधिक विभाजन क्यों करें? राजनैतिक पक्षपात भी उतना ही हानिकारक होता है, मानव संतान में अत्यधिक कलह का यह एक बहुत बड़ा कारण है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें असहमति और कलह उत्पन्न करने में बहुत आनन्द मिलता है और जो अपने देश को किसी अन्य देश पर हमला करने के लिए उकसाने का लगातार प्रयत्न करते रहते हैं—ऐसा क्यों? वे सोचते हैं कि अन्य सभी देशों की हानि होने पर स्वयं उनके अपने देश को लाभ पहुँचेगा। विश्व में प्रसिद्धि पाने और जीत का आनन्द उठाने के लिए वे दूसरे देश पर सेनाओं के साथ चढ़ाई करते हैं, लोगों को परेशान करते हैं और धरती को उजाड़ते हैं। केवल मात्र इसलिए कि

पक्षपातों का उन्मूलन

यह कहा जा सके कि "फलां देश ने फलां देश को परास्त कर दिया है और अपने अधिक शक्तिशाली तथा उत्तम शासन का जुआ उसके कन्धों में डाल दिया है।" अत्यधिक रक्तपात के दामों पर खरीदी गई ऐसी विजय अधिक टिकाऊ नहीं होती। विजेता एक दिन परास्त होगा, और परास्त विजयी। पुराने इतिहास का स्मरण कीजिए—क्या फ्रांस ने जर्मनी पर एक से अधिक बार विजय नहीं पाई, तत्पश्चात् क्या जर्मनी ने फ्रांस पर विजय प्राप्त नहीं की?

हम यह भी जानते हैं कि फ्रांस ने इंग्लैंड पर विजय पाई और फिर अंग्रेजी राष्ट्र फ्रांस पर विजयी हुआ।

ये गौरवपूर्ण विजय कितनी क्षणभंगुर होती हैं। तो फिर उन्हें तथा उनकी प्रसिद्धि को इतना महत्व क्यों दिया जाए कि उनकी प्राप्ति के लिए लोगों का रक्त बहाने को भी तैयार हों? क्या कोई विजय इस योग्य होती है जिसे मानव हत्या, दुःख, संताप और विनाश जैसी बुराइयों की श्रृंखला के फल स्वरूप प्राप्त करे और जिन से निश्चय ही दोनों राष्ट्रों के असंख्य परिवार प्रभावित होते हैं क्योंकि यह संभव नहीं कि केवल एक ही देश की हानि हो।

आह! ईश्वर का अवज्ञाकारी बालक मनुष्य जो आध्यात्मिक विधान की शक्ति का प्रतीक होना चाहिए, दिव्य शिक्षाओं से विमुख क्यों होता है और अपने सारे प्रयास युद्ध और विध्वंस में क्यों लगाता है?

मुझे आशा है कि इस ज्ञानयुक्त शताब्दी में प्रेम का दिव्य प्रकाश अपने तेज से सारे संसार को आच्छादित कर देगा और प्रत्येक मानव के सहानुभूतियुक्त हृदय के विवेक को जागृत करेगा ताकि सत्यता के सूर्य का प्रकाश सभी प्रकार

अस्तित्व के साधन

के पक्षपातों तथा अन्धविश्वासों के दावों को झुठलाने में राजनीतिज्ञों का मार्गदर्शन कर सके और स्वतंत्र मन के साथ वे ईश्वर की नीति का अनुसरण कर सकें क्योंकि ईश्वर की राजनीति बड़ी शक्तिशाली होती है जबकि मनुष्य की अत्यंत क्षीण! ईश्वर ने सारे संसार की सृष्टि की है और प्रत्येक जीव को अपनी दिव्य कृपा प्रदान करता है।

क्या हम ईश्वर के सेवक नहीं? क्या हम अपने स्वामी के उदाहरण का अनुसरण करने में लापरवाही बरतें और उसकी आज्ञाओं को नजर अन्दाज कर दें?

मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु का साम्राज्य धरती पर स्थापित हो तथा स्वर्गिक सूर्य के तेज द्वारा सारा अन्धकार मिट जाये।

छठा सिद्धांत—अस्तित्व के साधन

4, ऐवेन्यू डि के मोइन्स,
पैरिस

बहाउल्लाह की शिक्षा के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नियमों में से एक यह है:

दैनिक जीविका के लिए प्रत्येक मानव का अधिकार जिस से उनका अस्तित्व बना रहता है अथवा जीविका के साधनों का समकरण।

लोगों की परिस्थितियों की व्यवस्था निश्चय ही ऐसी हो कि दरिद्रता समाप्त हो जाए और यथासंभव प्रत्येक व्यक्ति को उसकी श्रेणी तथा स्तर के अनुसार सुख चैन और कल्याण का अंश भाग मिल सके।

अपने बीच एक ओर हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो अत्यंत समृद्धिमान हैं और दूसरी ओर ऐसे अभागे हैं जिनके पास कुछ नहीं जो भूखों मर रहे हैं। ऐसे लोग भी हैं जिनके पास कई भव्य भवन हैं और ऐसे भी हैं जिनके पास सिर छुपाने मात्र को स्थान नहीं। कुछ ऐसे हैं जो स्वादिष्ट और कीमती भोजन करते हैं और दूसरी ओर बहुत से ऐसे हैं जिनको जीवित रहने के लिए सूखे टुकड़े भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते। कुछ लोग रेशमी तथा उत्तम वस्त्र और समूर (फर) धारण करते हैं जबकि दूसरों के पास सर्दी से बचने के लिए केवल अपर्याप्त, घटिया तथा फटे-पुराने वस्त्र ही होते हैं।

यह कार्य व्यवस्था गलत है और निश्चय ही इसमें सुधार होना चाहिए। इसका उपचार बड़े ध्यान से किया जाना चाहिए। लोगों के बीच पूर्ण समानता लाकर इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।

एकसमानता असंगत है। यह पूर्णतया दुःसाध्य है। यदि एकसमानता को प्राप्त भी कर लिया जाये तो इसे बनाये नहीं रखा जा सकता और यदि इसकी प्राप्ति संभव भी हो तो विश्व की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। मानव संसार में व्यवस्था का नियम निश्चय ही सदा लागू हो। मानव की सृष्टि में प्रकृति ने ऐसा ही नियम बनाया है।

कुछ लोग विवेकशील होते हैं, कुछ साधारण रूप से बुद्धिमान होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो विवेक से बिलकुल ही कोरे होते हैं। लोगों की इन तीन श्रेणियों में एक व्यवस्था है, परन्तु समानता नहीं। यह कैसे संभव हो सकता है बुद्धिमत्ता और मूर्खता एक समान हों? एक महान सेना की

भाँति मानवता को सेनापति, बड़े अफसरों, छोटे अफसरों तथा सिपाहियों की आवश्यकता होती है जिनके अपने अपने कर्त्तव्य होते हैं। सुव्यवस्थित संगठन को सुनिश्चित करने के लिए अंशों का होना अनिवार्य है। किसी सेना में न तो सारे के सारे सेनापति हो सकते हैं, न अफसर ही अफसर और न ही किसी एक अधिकारी के बिना सारे के सारे सिपाही। ऐसी योजना का निश्चित परिणाम यह होगा कि सारी सेना में अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता फैल जायेगी।

दार्शनिक नरेश लाईकुगुर्स ने स्पार्टा की प्रजा को एक समान बनाने की एक महान योजना बनाई। बड़े आत्मोत्सर्ग और बुद्धिमानी के साथ प्रयोग आरंभ किया गया। तब नरेश ने अपनी प्रजा को बुलवाया और उन्हें बहुत बड़ी शपथ दिलाई कि उसके देश से बाहर जाने की सूरत में वे शासन की उस व्यवस्था को बनाये रखेंगे तथा उसके वापस लौटने तक उसमें कोई फेरबदल नहीं करेंगे। यह शपथ दिलवाने के बाद राजा ने स्पार्टा राज्य छोड़ दिया और कभी लौट कर वापस न आया। यह सोच कर कि उसके राज्य में जीवन की परिस्थितियों तथा धन दौलत और जायदाद की समानता होने के कारण देश का स्थायी रूप से कल्याण होगा। लाईकुगुर्स ने अपने ऊँचे पद को छोड़ दिया और परिस्थिति का त्याग कर दिया। परन्तु राजा का सारा आत्मोत्सर्ग बेकार गया। उसका महान प्रयोग असफल रहा। कुछ समय पश्चात सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो गया। अत्यंत सावधानी से बनाई गई उसकी योजना विफल हुई।

ऐसी योजना के लिए प्रयास करने की व्यर्थता तथा अस्तित्व के लिए समान परिस्थितियों की प्राप्ति की संभवता

अस्तित्व के साधन

को स्पाटा के प्राचीन राज्य में दर्शाया और घोषित किया गया। आज के हमारे युग में भी ऐसा कोई प्रयास विफल ही होगा।

कुछ लोगों के अत्यंत समृद्ध और कुछ लोगों के अत्यंत दरिद्र होने के कारण निश्चय रूप से एक ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जो ऐसी अवस्था पर नियंत्रण कर सके और इसे सुधार सके। समृद्धि को सीमित करना उतना ही आवश्यक है जितना कि गरीबी को। किसी एक की भी अत्यधिकता अच्छी नहीं। मध्यम मार्ग ही सर्वोत्तम है। यदि किसी पूँजीपति के लिए अत्यधिक सम्पत्ति रखना उचित है, तो उसी प्रकार उसके श्रमिकों के लिए भी यह न्यायसंगत है कि उन्हें अस्तित्व के साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों।

अपार सम्पत्ति रखने वाला ऐसा कोई पूँजीपति नहीं होना चाहिए, जिसके निकट भीषण आवश्यकताग्रस्त कोई गरीब आदमी रहता हो। जब हम दरिद्रता को भुखमरी की अवस्था तक पहुँचा देखते हैं तो निश्चय ही यह इस बात का प्रतीक है कि कहीं न कहीं हम अत्याचार होता पायेंगे। इस मामले में लोग अवश्य ही अपने आप को हरकत दें और उन अवस्थाओं को सुधारने में देर न करें जो लोगों की बहुत बड़ी संख्या पर घोर दरिद्रता की दुर्गीति लाने का कारण बनती हैं। उन लोगों का विचार करें, जो जीवन की मौलिक आवश्यकताओं के पूरा न होने के कारण बदहाल हैं, समृद्धिवाण व्यक्ति अवश्य ही अपने हृदयों को कोमल बना कृपापूर्ण विवेक अपनायें और अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग प्रदान करें।

समृद्धि तथा आवश्यकता की इन अत्यधिकताओं से निपटने के लिए अवश्य ही विशेष नियम बनाये जायें। लोगों पर शासन करने के लिए योजनाएँ बनाते समय राज्य सरकार के

लोगों की समानता

सदस्य ईश्वरीय विधान को विचाराधीन रखें। मानवमात्र के सामान्य अधिकारों की अवश्य ही रक्षा की जाए और उन्हें सुरक्षित रखा जाये।

देशों की सरकार दिव्य विधान के अनुरूप हो जो सब को एक समान न्याय देता है। केवल मात्र यही एक रास्ता है जिससे खेदजनक आवश्यकता से अधिक पूँजी तथा विशाल अपमानजनक, भ्रष्टकारी और दुखद दरिद्रता का उन्मूलन किया जा सकता है। जब तक ऐसा नहीं होता ईश्वरीय विधान का पालन नहीं हो सकेगा।

सातवां सिद्धांत—लोगों की समानता

"ईश्वर के नियम इच्छा, शक्ति या आनन्द का थोपना नहीं, वस्तुतः सच्चाई, तर्क तथा न्याय के संकल्प हैं।"

सभी लोग कानून के सम्मुख एक बराबर हैं जो निश्चय ही सब से ऊपर हो।

दण्ड का ध्येय बदला लेना नहीं बल्कि अपराध की रोकथाम करना है।

राजा महाराजा अवश्य ही विवेक और न्याय के साथ शासन करें, राजकुमार, समृद्ध व्यक्ति तथा किसान सभी को न्यायपूर्ण व्यवहार का एक समान अधिकार प्राप्त है। किसी व्यक्ति विशेष को विशेष कृपा का पात्र न बनाया जाए। कोई न्यायकर्ता "व्यक्तियों के प्रति श्रद्धा रखने वाला" न हो, बल्कि वह अपने सामने आने वाले प्रत्येक मामले में दृढ़ निष्पक्षता के साथ कानून का पालन करें। यदि कोई व्यक्ति

विश्व शांति

आपके विरुद्ध अपराध करता है, तो आप को उसे क्षमा कर देने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं, अपितु कानून उसे अवश्य ही दण्ड दे ताकि अन्य व्यक्तियों द्वारा उस अपराध को दोहराये जाने से रोका जा सके क्योंकि लोगों के सार्वजनिक कल्याण की तुलना में किसी एक व्यक्ति की पीड़ा का कोई महत्व नहीं होता।

जब पूर्वी तथा पश्चिमी संसार के सभी देशों में सम्पूर्ण न्याय का साम्राज्य होगा यह पृथ्वी सोन्दर्य स्थल बन जायेगी। ईश्वर के प्रत्येक सेवक के आत्मसम्मान तथा समानता को स्वीकृति प्राप्त होगी, मानव जाति की एकता के आदर्श, मानव के सच्चे भाईचारे की उपलब्धि होगी और सत्यता के सूर्य का तेजयुक्त प्रकाश सभी लोगों की आत्माओं को आलोकित कर देगा।

आठवां सिद्धांत—विश्व शांति

4 ऐवेन्यू डि केमोइन्स,
पैरिस

प्रत्येक राष्ट्र की सरकार तथा लोगों द्वारा एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना होगी जिसके सदस्य प्रत्येक देश तथा सरकार से चुने जायेंगे। इस महान परिषद् के सदस्य एकता के भाव में एकत्रित होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र के सभी झगड़े इस न्यायालय के सामने पेश किये जायेंगे क्योंकि इसका काम होगा प्रत्येक उस मामले को मध्यस्थता द्वारा सुलझाना जो अन्यथा युद्ध का कारण बन सकता है। इस न्यायालय का विशेष कार्य युद्ध की रोक थाम होगा।

विश्व शांति

विश्व शांति की ओर एक बड़ा कदम एक विश्व भाषा की स्थापना होगा। बहाउल्लाह ने आज्ञा दी है कि मानवता के सेवक आपस में मिल बैठें और या तो वर्तमान भाषाओं में से किसी एक को चुन लें या एक नई भाषा का आविष्कार करें। इस बात को 40 वर्ष पूर्व किताब-ए-अकदस में प्रकट किया गया था। उस में यह बताया गया है कि भाषाओं की भिन्नता का प्रश्न बड़ा ही जटिल है। संसार में आठ सौ से भी अधिक भाषाएँ हैं और कोई भी एक व्यक्ति उन सबको सीख नहीं सकता।

मानवता की जातियाँ अब उस प्रकार अलग अलग नहीं जैसे कि वे पूर्व काल में थीं। अब सभी देशों के साथ निकट संबंध बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि वे एक दूसरे की भाषा को समझ बोल सकें।

एक विश्व भाषा द्वारा प्रत्येक राष्ट्र के साथ बातचीत करना संभव हो सकेगा। इस प्रकार केवल दो भाषाओं का जानना ही काफी होगा, मातृ भाषा तथा विश्व भाषा। विश्व भाषा के माध्यम से कोई व्यक्ति संसार के किसी भी और प्रत्येक व्यक्ति के साथ बातचीत करने के योग्य बन जायेगा।

किसी तीसरी भाषा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। दो भाषाओं की सहायता के बिना किसी भी जाति और देश के व्यक्ति के साथ बातचीत कर सकना सभी के लिए कितना उपयोगी और सुखकर सिद्ध होगा! इस बात को ध्यान में रखते हुए एस्पेरान्तो भाषा का आविष्कार किया गया है। यह एक उत्तम आविष्कार है और काम का एक बढ़िया नमूना। परन्तु इसे अभी परिशुद्धि की आवश्यकता है। अपने वर्तमान रूप में एस्पेरान्तो कुछ लोगों के लिए बड़ी कठिन भाषा है।

धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप

एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाये जिसमें विश्व के प्रत्येक राष्ट्र, चाहे वह पूर्व में हो या पश्चिम में, के सदस्य भाग लें। यह सम्मेलन एक भाषा तैयार करे जो प्रत्येक व्यक्ति द्वारा सीखी जा सके। इससे प्रत्येक देश का बहुत बड़ा लाभ होगा।

जब तक ऐसी भाषा प्रयोग में नहीं आती, संसार बातचीत के इस माध्यम की महान आवश्यकता को अनुभव करता रहेगा। भाषाओं की भिन्नता राष्ट्रों के बीच विद्यमान अविश्वास और घृणा का एक शक्तिशाली कारण है जिस वजह से किसी और कारण के न होते हुए भी केवल एक दूसरे की भाषा को न समझ पाने पर वे एक दूसरे से अलग थलग रहते हैं।

यदि हरेक व्यक्ति एक ही भाषा बोल सके तो मानवता की सेवा करना कितना सुगम हो जायेगा! अतः एस्पेरान्तो के महत्व को समझिये क्योंकि यह बहाउल्लाह के एक अत्यंत महत्वपूर्ण नियम के पालन का प्रारम्भ है और निश्चय ही इसकी परिशुद्धि तथा सुधार जारी रहना चाहिये।

नवां सिद्धांत—धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप

4 एवेन्यू डि केमोइन्स, पैरिस
नवम्बर 17

जीवन व्यतीत करने में मनुष्य को दो मुख्य बातों से प्रेरणा मिलती है, "पुरस्कार की आशा" तथा "दण्ड का भय"।

अतः वे लोग जो शासन में उच्च अधिकार युक्त पदों पर आसीन हैं अवश्य ही इस आशा तथा इस भय को पूरा पूरा

धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप

महत्व दें। जीवन में उनका कार्य कानून बनाने के लिए आपस में विचार विमर्श करना है और उन्हें न्यायपूर्वक लागू करने के लिए व्यवस्था करना है।

विश्व व्यवस्था का तम्बू तान दिया गया है और यह "पुरस्कार तथा दण्ड" के स्तम्भों पर आश्रित है।

निरंकुश राज्यों में जिनका संचालन उन लोगों द्वारा किया जाता है जिन्हें ईश्वर में विश्वास नहीं होता और न ही आध्यात्मिक प्रतिफल का भय होता है, कानून का पालन अन्यायपूर्ण तथा अत्याचारपूर्ण ढंग से होता है।

अत्याचार की रोकथाम के लिये आशा और भय की भावनाओं से बढ़कर बड़ा साधन और कोई नहीं। इन के राजनैतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार के परिणाम होते हैं।

यदि कानून के प्रबन्धक अपने निर्णयों के आध्यात्मिक परिणामों को ध्यान में रखें और धर्म द्वारा दर्शाये गये मार्ग का अनुसरण करें, तो "कर्म के संसार में वे दिव्य प्रतिनिधि बन जायेंगे, पृथ्वी पर बसने वालों के लिए वे ईश्वर के प्रतिनिधि होंगे और प्रभु के प्रति प्रेम के कारण वे प्रभु के सेवकों के हितों की वैसे ही रक्षा करेंगे जैसे कि स्वयं अपने हितों की।" यदि कोई शासक अपने उत्तरदायित्व को समझता है और दिव्य कानून के उल्लंघन से डरता है तो उसके निर्णय न्यायोचित होंगे। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यदि उसका विश्वास है कि उसके कर्मों के परिणाम पृथ्वी पर इस जीवन के पश्चात् भी उसका अनुसरण करेंगे और "जैसा वह बोयेगा, वैसा ही काटेगा", तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति अन्याय तथा अत्याचार से दूर रहेगा।

इसके विपरीत यदि कोई अधिकारी यह समझे कि उसके

धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप

सांसारिक जीवन के साथ ही उसके कर्मों का उत्तरदायित्व समाप्त हो जायेगा, क्योंकि उसे दिव्य कृपाओं तथा आध्यात्मिक साम्राज्य के आनन्द का कुछ ज्ञान नहीं होता और न ही उसका उनमें विश्वास होता है, तो उसे न्यायपूर्ण व्यवहार करने एवं अत्याचार तथा बुराई को कुचलने की प्रेरणा हासिल नहीं होगी।

जब एक शासक को ज्ञात होता है कि उसके निर्णयों को दिव्य न्यायकर्ता (ईश्वर) द्वारा तराजू के पलड़े में तौला जायेगा और यदि उसमें कमी नहीं पाई गई तो उसे दिव्य राज्य प्राप्त होगा और दैवी कृपा का प्रकाश उसे आलोकित करेगा, तो निश्चय ही वह न्यायपूर्ण तथा निष्पक्षतापूर्ण व्यवहार करेगा। अवलोकन कीजिये कि राज्य के मंत्रियों को धर्म ज्ञान युक्त होना कितना महत्वपूर्ण है।

किन्तु धर्मपुरोहितों का राजनैतिक प्रश्नों के साथ कोई संबंध नहीं! विश्व की वर्तमान स्थिति में धार्मिक मामलों को राजनीति के साथ न उलझाया जाये (क्योंकि उनके हित एक समान नहीं)।

धर्म का संबंध हृदय, आत्मा तथा नैतिकता के विषयों से है।

राजनीति जीवन की भौतिक वस्तुओं (पहलू) से संबंध रखती है। धर्म शिक्षकों को राजनीति के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करना चाहिए, उन्हें केवल लोगों की आध्यात्मिक शिक्षा में सम्बन्ध रखना चाहिए। ईश्वर तथा मानव मात्र की सेवा का प्रयास करते हुए उन्हें लोगों को सदैव अच्छे परामर्श देने चाहिए। वे आध्यात्मिक प्रेरणाओं को जगाने का प्रयत्न करें और लोगों के ज्ञान तथा सूझबूझ को बढ़ाने की कोशिश करें,

धर्म का राजनीति में अहस्तक्षेप

उनके नैतिक आचरण को सुधारें और न्याय के प्रति प्रेम को बढ़ावा दें।

यह बहाउल्लाह की शिक्षा के अनुरूप है। ईसाई धर्म ग्रंथ "गासपल" में लिखा है, "सीज़र के प्रति वह काम करो जो सीज़र के योग्य है और ईश्वर के प्रति वह करो जो ईश्वर के योग्य है।"

ईरान में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण राज्यमंत्री हैं जो धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, जो अनुकरणीय हैं, जो प्रभु की आराधना करते हैं और जो प्रभु के नियमों का उल्लंघन करने से डरते हैं, जो न्यायपूर्ण फैसले करते हैं और निष्पक्षता के साथ अपनी प्रजा पर शासन करते हैं। इस देश में अन्य ऐसे शासक भी हैं जिनके मन में ईश्वर का कोई भय नहीं, जो अपने कार्यों के प्रतिफल के बारे में कुछ न सोचते हुए अपनी इच्छाओं की पूर्ति में मग्न रहते हैं। ऐसे लोगों ने ईरान को बड़ी कठिनाई और कष्ट में डाल दिया है।

हे प्रभु मित्रों, न्याय के जीते जागते उदाहरण बनो! ताकि ईशकृपा से संसार आपके कार्यों से निहार सके कि आप न्याय तथा कृपा के गुणों को प्रत्यक्ष करते हैं।

न्याय सीमित नहीं होता, अपितु यह एक सार्वलौकिक गुण है। सर्वोच्च से लेकर निम्नतम तक सभी वर्गों में इसका प्रचलन हो। न्याय अवश्य ही पावन हो और सभी लोगों के अधिकारों को विचाराधीन रखा जाये। दूसरों के लिए केवल मात्र उसकी ही इच्छा करो जिसकी इच्छा आप स्वयं अपने लिये करते हैं। तब हम न्याय के सूर्य की धूप का आनन्द उठा सकेंगे जो ईश्वर के क्षितिज से दीप्तिमान है।

स्त्री पुरुष की समानता

प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के पद पर बिठाया गया है जिससे वह निश्चय ही पलायन न करे। अन्याय करने वाला एक साधारण व्यक्ति भी उतना ही दोषी है जितना कि एक कुख्यात अत्याचारी। इस प्रकार हम सब को न्याय तथा अन्याय के बीच चुनाव की स्वतंत्रता है।

मुझे आशा है कि आप में से हरेक न्यायी बनेगा और अपने विचार मानवमात्र की एकता की ओर लगाएगा, कि आप अपने पड़ौसी को कभी हानि नहीं पहुँचायेंगे और न ही किसी के बारे में बुरा भला कहेंगे; कि आप सभी लोगों के अधिकारों का सम्मान करेंगे और स्वयं अपनी तुलना में दूसरों के हितों की अधिक चिन्ता करेंगे। इस प्रकार आप दिव्य न्याय की ज्योति बन जायेंगे और बहाउल्लाह की शिक्षा के अनुसार कार्यरत होंगे, जिन्होंने अपने जीवन काल में असंख्य अत्याचार और संकट सहन किये ताकि मानव संसार को दिव्य जगत के सद्गुणों के दर्शन हो सकें, जिससे आप आत्मा की सर्वोच्चता को अनुभव कर सकें और ईश्वरीय न्याय का आनन्द उठा सकें।

ईश्वर की दया से दिव्य कृपा की वृष्टि आप पर हो, यही मेरी प्रार्थना है !

दसवा सिद्धांत—स्त्री पुरुष की समानता

4 एवेन्यू डि केमोइन्स, पैरिस
नवम्बर 14

बहाउल्लाह की शिक्षा का दसवां नियम है स्त्री और पुरुष की समानता।

स्त्री पुरुष की समानता

प्रभु ने सभी प्राणियों की सृष्टि जोड़ों में की है। मानव, पशु या वनस्पति, इन तीनों जगत्‌ों की सभी वस्तुएँ दो लिंगों की हैं और उनके बीच पूर्ण समानता है।

वनस्पति जगत में नर पौधे होते हैं और मादा पौधे होते हैं। इनके अधिकार एक समान होते हैं और अपनी जाति के सौन्दर्य का समान भाग इन्हें प्राप्त होता है, यद्यपि निस्सन्देह यह कहा जा सकता है कि फल देने वाला वृक्ष फलरहित वृक्ष से उत्तम होता है।

पशु जगत में हम देखते हैं कि नर और मादा को समान अधिकार प्राप्त होते हैं और वे अपनी जाति के लाभ में बराबर के भागीदार होते हैं।

अब, हम ने देखा है कि प्रकृति के दो निम्न जगत्‌ों में एक लिंग की दूसरे लिंग पर श्रेष्ठता का प्रश्न ही नहीं उठता। मानव जगत में हम एक बहुत बड़ा अंतर पाते हैं। स्त्रियों से ऐसे व्यवहार किया जाता है जैसे कि वह निम्न स्तर की हों और उन्हें समान अधिकार और विशेषाधिकार नहीं दिये जाते। वह अवस्था प्रकृति के कारण नहीं अपितु शिक्षा की कमी के कारण है। दैवी सृष्टि में ऐसा कोई भेदभाव नहीं। ईश्वर की दृष्टि में कोई भी लिंग दूसरे लिंग से श्रेष्ठ नहीं। तो फिर एक लिंग दूसरे लिंग के घटिया होने का दावा क्यों करे और उसे उसके अधिकारों तथा विशेषाधिकारों से इस प्रकार वंचित क्यों करे जैसे कि ईश्वर ने उसे ऐसा करने का अधिकार दिया हो? यदि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा के लाभ प्राप्त होते तो उस से दोनों की विद्वता की क्षमता की समानता का प्रदर्शन हो जाता।

कुछ पहलुओं से स्त्री पुरुष से श्रेष्ठ होती है। वह अधिक

स्त्री पुरुष की समानता

कोमल हृदयी, अधिक ग्रहणशील होती है और उसकी अन्तर-दृष्टि अधिक तीव्र होती है।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान समय में भिन्न दिशाओं में स्त्री पुरुष से अधिक पिछड़ी हुई है और साथ ही साथ यह भी कि यह अस्थायी निम्नता शिक्षा के अवसरों की कमी के कारण है। जीवन की आवश्यकता में पुरुष की तुलना में स्त्री को शक्ति की अधिक प्रतिभा प्राप्त है क्योंकि अपने अस्तित्व के लिये पुरुष स्त्री का आभारी है।

यदि माता पढ़ी लिखी है तो उसके बच्चों को भी अच्छी शिक्षा मिलेगी। जब माता बुद्धिमान होगी तो बच्चों को भी अकलमंदी के मार्ग पर ले जायेगी। यदि माता धर्म में निष्ठा रखती होगी तो वह बच्चों को भी बतायेगी कि वे किस प्रकार प्रभु से प्रेम करें। यदि माता चरित्रवती होगी तो वह अपने नन्हे मुन्नों का भी सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलने में मार्गदर्शन करेगी।

अतः यह बिलकुल प्रत्यक्ष है कि आगामी पीढ़ी आज की माताओं पर निर्भर करती है। क्या यह स्त्रियों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी नहीं? ऐसे कार्य के लिए अपने आपको तैयार करने के लिए क्या उसे प्रत्येक सम्भव सुविधा की आवश्यकता नहीं?

अतः निश्चय ही ईश्वर इस बात से प्रसन्न नहीं कि स्त्री जैसा महत्वपूर्ण साधन अपने जीवन के महान कार्य की सम्पूर्णता की प्राप्ति के लिए आवश्यक तथा वांछित शिक्षण के अभाव से पीड़ित हो। दैवी न्याय की माँग है कि दोनों लिंगों के अधिकारों का समान आदर हो क्योंकि प्रभु की दृष्टि में कोई भी एक दूसरे से श्रेष्ठ नहीं। प्रभु के सम्मुख प्रतिष्ठा लिंग पर

स्त्री पुरुष की समानता

निर्भर नहीं बल्कि हृदय की पवित्रता तथा दीप्ति पर निर्भर है। मानवीय सद्गुण सब की एक समान सम्पदा हैं।

अतः स्त्रियों को ज्यादा से ज्यादा सम्पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, हर प्रकार से पुरुष के बराबर बनना चाहिए, जिन क्षेत्रों में वे पिछड़ी हुई हैं उनमें उन्नति करनी चाहिये, ताकि पुरुष उनकी उपलब्धि तथा क्षमता की बराबरी को स्वीकार करने पर मजबूर हो जाये।

पूर्व की तुलना में यूरोप में स्त्रियों ने अधिक उन्नति की है परन्तु अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। जब विद्यार्थी अपनी पाठशाला के सत्र के अन्तिम चरण पर पहुँच जाते हैं तो उनकी परीक्षाएँ होती हैं जिनके फलस्वरूप प्रत्येक विद्यार्थी के ज्ञान तथा क्षमता का निर्धारण होता है। स्त्री के साथ भी ऐसा ही होगा, उसके कार्यों से उसकी शक्ति का पता चलेगा, शब्दों में उसकी घोषणा करने की कोई आवश्यकता शेष नहीं रहेगी।

यह मेरी आशा है कि जब तक मानवता सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं होती तब तक पूर्व की स्त्रियाँ तथा उनकी पश्चिमी बहने तीव्र गति से उन्नति करती रहेंगी।

ईश्वर की कृपा सब के लिए है और पूर्ण उन्नति के लिए शक्ति प्रदान करती है। जब पुरुष स्त्रियों की समानता को स्वीकार कर लेंगे तो स्त्रियों के लिए अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता शेष नहीं रहेगी। इस प्रकार बहाउल्लाह का एक नियम है स्त्री पुरुष की समानता।

स्त्रियाँ अवश्य ही आध्यात्मिक शक्ति तथा पवित्रता और विवेक के सद्गुणों को बढ़ाने के लिए अनथक प्रयास करें, यहाँ तक कि उनका प्रबोध और प्रयत्न मानवमात्र की एकता को

फलीभूत करने में सफल हो जाएँ। बहाउल्लाह की शिक्षा को लोगों में फैलाने के लिए वे अदम्य उत्साह के साथ कार्यरत हों ताकि दिव्य कृपा का दीप्तिमान प्रकाश विश्व के सभी राष्ट्रों की आत्माओं को अपने आलिंगन में ले ले!

ग्यारहवां सिद्धांत—पवित्र आत्मा की शक्ति

4 एवेन्यू डि केमोइन्स, पैरिस
नवम्बर 18

बहाउल्लाह की शिक्षा में यह लिखा है, "केवल पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा ही मनुष्य उन्नति कर सकता है, क्योंकि मानव की शक्ति सीमित है और दिव्य शक्ति असीम।" इतिहास के अध्ययन से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि सभी वास्तविक महान व्यक्ति, मानव जाति के उपकारक, जिन्होंने लोगों को भलाई से प्रेम और बुराई से घृणा करना सिखया और जो सच्ची प्रगति के कारण थे, उन सब ने पवित्र आत्मा की शक्ति से प्रेरणा प्राप्त की।

ईश्वर के सभी अवतार विद्वत्तापूर्ण दर्शनशास्त्र की पाठशालाओं में शिक्षा पाकर उत्तीर्ण नहीं हुए। निस्संदेह, प्रायः वे साधारण वर्ग से संबंध रखने वाले व्यक्ति थे और प्रकट रूप से संसार की दृष्टि में अशिक्षित तथा अनजाने, महत्वहीन व्यक्ति थे, यहाँ तक कि कभी-कभी पढ़ना लिखना भी नहीं जानते थे।

जिस वस्तु ने इन महान व्यक्तियों को अन्य लोगों से ऊँचा

पवित्र आत्मा की शक्ति

उठाया और जिसके द्वारा वे सच्चाई के शिक्षक बन सके, वही थी पवित्र आत्मा की शक्ति। इस शक्तिशाली प्रेरणा के कारण मानवता पर उनका बहुत अधिक और गहरा प्रभाव पड़ा।

इस दिव्य प्रेरणा के अभाव में विद्वानतम दर्शन शास्त्रियों का प्रभाव भी तुलनात्मक रूप में महत्वहीन होता है चाहे उनका ज्ञान कितना ही वृहद और विद्वता कितनी ही गहरी क्यों न हो।

उदाहरणस्वरूप, प्लैटो, अरस्तु, पिलनी तथा सुकरात की असाधारण बुद्धि ने लोगों को इतना अधिक प्रभावित नहीं किया है कि वे उनकी शिक्षाओं के लिए अपना जीवन तक बलिदान कर दें, जबकि दूसरी ओर उन साधारण लोगों ने मानवता को ऐसी प्रेरणा दी कि उनके मुख से निकले शब्दों के अनुमोदन हेतु हज़ारों लोग हँसते हँसते शहीद हो गये, क्योंकि इन शब्दों को ईश्वर की दिव्य आत्मा की प्रेरणा प्राप्त थी। जुदाह तथा इसराईल के अवतार, एलीजाह, जेरिमियाह, ईसायाह और एजकील सभी वैसे ही साधारण व्यक्ति थे, जैसे कि ईसा मसीह के पट्टशिष्य।

ईसा का मुख्य पट्ट शिष्य पीटर अपनी पकड़ी हुई मछलियों को सात भागों में बाँट देता था और प्रतिदिन एक भाग का उपभोग कर जब वह सातवें भाग पर पहुँचता था तो वह जान जाता था कि वह सैबथ दिवस (विश्राम दिवस) है। इस पर विचार कीजिए और फिर उसके भविष्य की पद्वी का ध्यान कीजिये, कितना बड़ा गौरव उसे प्राप्त हुआ क्योंकि दिव्य आत्मा ने उसके द्वारा महान कार्य करवाये।

हम जानते हैं कि मनुष्य के जीवन में पवित्र आत्मा एक

पवित्र आत्मा की शक्ति

शक्तिदायक तत्व है। जो कोई भी यह शक्ति प्राप्त कर लेता है वह अपने सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों को प्रभावित करने के योग्य बन जाता है। इस पवित्र आत्मा के बिना महान दार्शनिकों के जीवन भी शक्तिविहीन हैं, उनकी आत्माएँ जीवनरहित हैं, उनके हृदय मृतप्रायः! जब तक उनकी आत्माओं में पवित्र आत्मा के श्वासों का संचार नहीं होता, वे कोई भला काम नहीं कर सकते। दर्शन शास्त्र की कोई भी प्रणाली लोगों की प्रथाओं तथा आचरण को कभी भी बेहतर नहीं बना सकी। दिव्य आत्मा के प्रकाश से रहित ज्ञानी दर्शनशास्त्री प्रायः निम्न कोटि के आचरण के लोग रहे हैं। अपने सुन्दर वाक्यों की वास्तविकता की घोषणा उन्होंने अपने कर्मों द्वारा नहीं की।

आध्यात्मिक दर्शनशास्त्रियों तथा अन्य लोगों के बीच अन्तर स्वयं उनके जीवनो द्वारा प्रदर्शित होता है। आध्यात्मिक शिक्षक अपना विश्वास स्वयं अपनी शिक्षा में दिखाता है, वह स्वयं वही होता है जिसकी सिफारिश वह अन्य लोगों से करता है।

पवित्र आत्मा से भरपूर एक साधारण सा अनपढ़ व्यक्ति इस प्रेरणा से वंचित किसी अत्यन्त कुलीन महापण्डित व ज्ञानी व्यक्ति से अधिक शक्तिशाली होता है। वह व्यक्ति जिसकी शिक्षा दीक्षा दिव्य आत्मा द्वारा होती है, उसी आत्मा को प्राप्त करने के लिए, समय आने पर दूसरों का मार्गदर्शन कर सकता है।

मैं आपके लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप दिव्य आत्मा के जीवन द्वारा जानकारी प्राप्त करें ताकि आप दूसरों की शिक्षा दीक्षा का साधन बन सकें। एक आध्यात्मिक व्यक्ति का

पवित्र आत्मा की शक्ति

जीवन तथा उसकी नैतिकता स्वयं ही उस के जानने वालों के लिए शिक्षा का कारण होते हैं।

स्वयं अपने सीमाबन्धनों का विचार मत कीजिये, केवल गौरव के राज्य (प्रभु-राज्य) के कल्याण को ध्यान में रखिये। अपने पट्टशिष्यों पर ईसा मसीह के प्रभाव का ध्यान कीजिये और फिर संसार पर उनके प्रभाव का विचार कीजिये। शुभ समाचारों के प्रसार में इन साधारण लोगों को पावन आत्मा की शक्ति प्राप्त थी।

आप सब भी दैवी सहायता प्राप्त कर सकते हैं। जब ईश्वर की दिव्य आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त हो तो कोई भी क्षमता सीमित नहीं रह जाती।

धरती को जीवन के स्वयं अपने में कोई गुण प्राप्त नहीं। जब तक वर्षा और धूप द्वारा वह उपजाऊ नहीं बन जाती तब तक वह सूखी और बंजर पड़ी रहती है। फिर भी धरती को अपनी अयोग्यता पर शोक करने की आवश्यकता नहीं।

ईश्वर आपको दीर्घायु करे। दिव्य कृपा की वृष्टि तथा सत्य के सूर्य की गरमी आपके जीवन की बगिया को फलफूल से भरपूर करे ताकि उत्कृष्ट सुगन्ध और प्रेम से भरपूर अनेक सुन्दर फूल प्रचुर मात्रा में खिल उठें। स्वयं अपने सीमित अहं (स्वार्थ) के बारे में विचारों को त्याग कर अपनी दृष्टि अनन्त ज्योति की ओर लगाइए, केवल तब ही आपकी आत्मा को सर्वमहान आत्मा की दिव्य शक्ति तथा अनन्त कृपा के आशीर्वाद का भरपूर भाग मिलेगा।

इस प्रकार यदि आप पूरी तरह तैयार रहेंगे तो आप मानव संसार के लिए एक ज्योतिर्मय ज्वाला के समान बन जायेंगे, मार्गदर्शक तारे बन जायेंगे, फलों से लदे पेड़ बन जायेंगे, जो

पावन आत्मा की शक्ति

कृपा के सूर्य की चमचमाती धूप और सुसमाचारों के असीम वरदानों द्वारा इसके अन्धकार और दुखों को प्रकाश और आनन्द में परिणित कर देंगे।

यह अर्थ है पावन आत्मा की शक्ति का और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप को इसकी प्रचुर मात्रा में प्राप्ति हो।

पावन आत्मा की शक्ति

4 एवेन्यू डि कैमोइन्स, पैरिस
नवम्बर 28

इन सभाओं में, जहाँ हम एकत्रित हुए और जहाँ हम ने आपस में बातचीत की आप इस विधान के नियमों तथा तथ्यों की यथार्थता से परिचित हो गये हैं। इन बातों का जानना आपके भाग्य में लिखा था परन्तु बहुत से ऐसे हैं जो अभी भी अन्धकार तथा अन्धविश्वास में डूबे हुए हैं। इस महान तथा गौरवपूर्ण प्रयोजन के बारे में अभी तक उन्हें कोई जानकारी नहीं और यदि उन्हें इसका कुछ ज्ञान भी है तो वह सुनी सुनाई बातों पर आधारित है। आह, वे बेचारे! उनका ज्ञान सच्चाई पर आधारित नहीं, उनके विश्वास की आधारशिला बहाउल्लाह की शिक्षा नहीं। जो कुछ उन्हें बताया गया है निश्चय ही उस में सच्चाई का कुछ अंश मौजूद है परन्तु अधिकतर उनकी सूचना गलत है।

प्रभु के पावन धर्म के वास्तविक नियम वे ग्यारह नियम हैं जो मैंने आपको बताये हैं और एक एक कर के जिनकी मैंने बड़े ध्यान से व्याख्या की है।

पावन आत्मा की शक्ति

बहाउल्लाह की शिक्षाओं और कानूनों का प्रत्यक्ष पालन करते हुए आपको अवश्य ही सदा जीवनयापन और काम करने का यत्न करना चाहिए ताकि हर व्यक्ति आपके जीवन के सभी कार्यों में यह देख सके कि वचन और कर्म दोनों में आप पावन सम्पूर्णता (बहाउल्लाह) के अनुयायी हैं।

भरपूर प्रयत्न कीजिए ताकि यह गौरवपूर्ण शिक्षा विश्व को अपने आर्लिगन में ले ले और लोगों के हृदय आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हो जायें।

पावन आत्मा का श्वास आपकी पुष्टि करेगा और यद्यपि बहुत से लोग आपके विरुद्ध उठ खड़े होंगे परन्तु वे कामयाब नहीं हो सकेंगे।

जब प्रभु ईसा मसीह को कांटों का मुकुट पहनाया गया तो वे जानते थे कि दुनिया भर के मुकुट उनके कदमों में हैं। सभी सांसारिक मुकुट चाहे वे कितने ही चमकदार, शक्तिशाली और देदीप्यमान थे, सम्मानपूर्वक कांटों के मुकुट के सामने झुक गये। इसी निश्चित और विश्वस्त ज्ञान के आधार पर ही उन्होंने कहा था: "स्वर्ग में और पृथ्वी पर, सारी शक्ति मुझे ही प्रदान की गई है।"

अब मैं आपसे कहता हूँ, आप इसे अपने हृदय और मन पर अंकित कर लें। निश्चय ही आपका प्रकाश सारे संसार को जगमगा देगा, आपकी आध्यात्मिकता वस्तुओं के हृदयों को प्रभावित कर देगी। वास्तव में आप विश्व भर की ज्योतिर्मय ज्वाला बन जायेंगे। न तो आप भयभीत हों और न ही व्याकुल, क्योंकि आपका प्रकाश गहरे से गहरे अन्धकार को भी छिन्न भिन्न करके रख देगा। यह ईश्वर का वचन है जो मैं आपको देता हूँ। उठिये, और ईश्वर की शक्ति की सेवा कीजिए।

अन्तिम सभा

15 रू ग्रियूज, पैरिस
दिसम्बर ।

कुछ समय पूर्व जब मैं पहली बार पैरिस पहुँचा तो मैंने बड़ी कौतुकता से अपने आसपास देखा और मन ही मन मैंने इस सुन्दर नगर की एक बड़े उद्यान से तुलना की।

बड़े स्नेहपूर्ण ध्यान और विचारपूर्ण ढंग से मैंने यहाँ की मिट्टी का निरीक्षण किया और दृढ़ आस्था तथा अडिग विश्वास की पूर्ण संभावनाएँ रखते हुए इसे अति उत्तम पाया क्योंकि यहाँ की धरती पर ईश्वर के प्रेम का बीज बोया गया है।

ईश्वरीय दया के मेघों ने इस पर अपनी वर्षा की और सत्यता के सूर्य की धूप इन तरुण बीजों पर पड़ी और आज आपके बीच विश्वास की उत्पत्ति होती दिखाई दे रही है। धरती में डाला गया बीज अब फूटना शुरू हो गया है और दिन प्रति दिन आप इसे फलता फूलता देखेंगे। बहाउल्लाह के राज्य की कृपायें निश्चय ही आश्चर्यजनक फसल लाएँगी।

देखिये! मैं आपके लिए शुभ और खुशी के समाचार लाया हूँ। पैरिस गुलाब वाटिका बन जायेगा। इस वाटिका में सभी प्रकार के सुन्दर पुष्प खिलेंगे और फल फूलेंगे और सभी देशों में उनके सौन्दर्य तथा सुगन्ध की धूम मच जायेगी। जब मैं भविष्य के पैरिस के बारे में सोचता हूँ तो मैं उसे पावन आत्मा के प्रकाश से आलोकित पाता हूँ। निस्सन्देह उस समय का

अन्तिम सभा

आगमन होने वाला है जब पैरिस को प्रकाशपूँज प्राप्त होगा और प्रत्येक प्राणी में ईश्वर के गुण व दया दृष्टिगोचर होगी।

अपने मन को वर्तमान पर ही केन्द्रित न होने दें बल्कि विश्वास की दृष्टि के साथ भविष्य की ओर भी झाँकें, क्योंकि वास्तव में आप लोगों के मध्य ईश्वर की महान आत्मा कार्यरत है।

कुछ सप्ताह पूर्व जब मैं यहाँ आया तब से मैं आध्यात्मिकता को पनपता देख रहा हूँ। आरम्भ में केवल कुछ ही लोग प्रकाश की खोज में मेरे पास आये परन्तु आपके बीच मेरे अल्प समय के आवास के दौरान उनकी संख्या बढ़कर दुगुनी हो गई है। यह भविष्य के लिये एक वचन है।

जब ईसा मसीह को सुली पर लटकाया गया और वे परलोक सिधारे, तो उनके केवल ग्यारह चेले और बहुत कम अनुयायी थे, परन्तु चूँकि उन्होंने सच्चाई के प्रयोजन की सेवा की थी, देखिये आज उनके जीवन भर के कार्य का परिणाम क्या है! उन्होंने विश्व को प्रकाशमान कर दिया है और मृत मानवता को जीवन प्रदान किया है। उनके स्वर्गारोहण के बाद उनका धर्म धीरे-धीरे बढ़ता और फैलता गया, उनके अनुयायियों की आत्माएँ अधिक ज्योतिर्मय होती गई और उनके संत तुल्य जीवनो की उत्कृष्ट महक सभी दिशाओं में फैल गई।

और आज, भगवान का शुक्र है कि वैसी ही परिस्थिति पैरिस में भी उत्पन्न हो गई है। ऐसे कई व्यक्ति हैं जो प्रभु राज्य की ओर उन्मुख हुए हैं और जो एकता, प्रेम तथा सत्यता की ओर आकर्षित हुए हैं।

ऐसे काम करने का यत्न कीजिए कि आभा की दया और

अन्तिम सभा

अच्छाई समूचे पैरिस पर छा जाये। पावन आत्मा का श्वास आपकी सहायता करेगा, प्रभु राज्य का दिव्य प्रकाश आपके हृदयों में फैल जायेगा और स्वर्ग से ईश्वर के दूत आपको शक्ति प्रदान करेंगे और आपकी सहायता करेंगे। फिर पूर्ण मन से प्रभु के प्रति आभार प्रकट करें कि आपको यह सर्वोच्च लाभ प्राप्त हुआ है। संसार वासियों का एक बड़ा भाग निद्रा मग्न है परन्तु आप को जगाया जा चुका है। बहुत से लोग नेत्रहीन हैं परन्तु आप देख सकते हैं।

प्रभु राज्य का आह्वान आप लोगों के मध्य सुनाई दे रहा है। ईश्वर की जय हो कि आपका पुर्नजन्म हुआ है, प्रभु प्रेम की अग्नि द्वारा आपको दीक्षा दी गई है, जीवन के समुद्र में डुबकी देकर प्रेम की आत्मा द्वारा आपको संजीवित किया गया है।

ऐसी कृपा के पात्र बन आपको ईश्वर के प्रति आभारी होना चाहिए और उसकी परोपकारिता तथा प्रेममयी कृपा पर कभी भी सन्देह न करना चाहिए बल्कि प्रभु की कृपा में अडिग विश्वास रखना चाहिए। आपस में प्रेमपूर्ण भाईचारे के साथ घुलमिल कर रहिये, एक दूसरे के लिए अपनी जान देने के लिए भी तैयार रहिये, न केवल उनके लिये जो आपको प्रिय हैं बल्कि सारी मानवता के लिए। सारी मानव जाति को एक ही परिवार के सदस्यों की दृष्टि से देखिये, सभी को एक प्रभु के बालक माने और ऐसा करने पर आप उनमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं पायेंगे।

मानवता को एक पेड़ के समान समझा जा सकता है। इस पेड़ पर शाखाएँ, पत्ते, कलियाँ और फल हैं। सभी लोगों को इस वृक्ष के फूल, पत्ते और कलियाँ समझिये और ईश्वर के

अन्तिम सभा

वरदानों का अनुभव करने तथा उनका आनन्द उठाने में प्रत्येक तथा सब की सहायता करने का प्रयास कीजिए। ईश्वर किसी की उपेक्षा नहीं करता, वह सब से प्रेम करता है।

वास्तविक अन्तर जो लोगों में है वह यह है कि वे विकास के भिन्न भिन्न चरणों में हैं। कुछ अभावपूर्ण हैं—उनकी कमियों को दूर कर उन्हें अवश्य ही पूर्ण रूप दिया जाये। कुछ निद्रामग्न हैं—उन्हें अवश्य ही जगाया जाये; कुछ लापरवाह हैं—उन्हें अवश्य ही चौकन्ना बनाया जाये; परन्तु उन में से प्रत्येक और सभी ईश्वर के बालक हैं। अपने सम्पूर्ण हृदय के साथ उनसे प्रेम कीजिए, कोई भी किसी से अपरिचित नहीं, सभी मित्र हैं। आज रात मैं आप से विदा लेने आया हूँ परन्तु एक बात याद रखियेगा कि यद्यपि हमारे शरीरों के बीच काफी दूरी होगी, फिर भी आत्मिक रूप से हम सदा एक साथ होंगे।

आज सभी मेरे हृदय में बसे हैं, मैं किसी को भी भुला न सकूँगा और मुझे आशा है कि आप भी मुझे नहीं भुलायेंगे।

पूर्व में मैं और पश्चिम में आप, आइये हम पूरे तन और मन से प्रयत्न करें कि विश्व में एकता का प्रसार हो, सब लोग एक कुटुम्ब के समान बन जायें और सारा धरातल एक देश के समान बन जाये क्योंकि सत्यता का सूर्य सब पर एक समान चमकता है।

इसी एक महान् ध्येय के प्रेम के कारण ईश्वर के सभी अवतारों का आगमन हुआ।

विचार कीजिए, लोगों के बीच प्रेम और विश्वास उत्पन्न करने के लिए अब्राहम ने कैसे प्रयत्न किये; ठोस नियमों द्वारा लोगों को एक लड़ी में पिरोने के लिए मूसा ने कैसे कैसे प्रयास

अन्तिम सभा

किए; किस प्रकार ईसा मसीह ने अन्धकारपूर्ण संसार में प्रेम तथा सच्चाई का उजाला लाने के लिए मौत तक को गले लगाया; किस प्रकार हज़रत मोहम्मद ने उन विभिन्न असभ्य कबीलों में शान्ति और एकता लाने की कोशिश की जिनके बीच वे रहते थे। और सब से अन्त में, उसी प्रयोजन के लिए बहाउल्लाह ने चालीस वर्ष तक कष्ट उठाये हैं। मानव संतान के बीच प्रेम प्रसार के एक मात्र महान उद्देश्य से और संसार की शान्ति तथा एकता हेतु बाब ने अपने जीवन की बलि दी।

इस प्रकार, इन दिव्य आत्माओं के उदाहरण के अनुसरण का प्रयास कीजिये, उनके स्रोत से पान कीजिये, उनके प्रकाश से दीप्ति प्राप्त कीजिये और विश्व के लिए ईश्वरीय दया और प्रेम के प्रतीक बनिये। संसार के लिये ऐसे बनिये जैसे दया के मेघ और वर्षा, जैसे सत्यता के सूर्य; दिव्य सेना तुल्य बनिये और निस्सन्देह आप हृदय रूपी नगरों पर विजय प्राप्त करते चले जायेंगे।

ईश्वर का आभार मानिये कि बहाउल्लाह ने हमें एक ठोस और मजबूत नींव दी है। उन्होंने हमारे हृदयों में खेद के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा और उनकी पावन लेखनी द्वारा रचित लेखों में सारे जगत के लिए सांत्वना है। उनके वाक् सच्चे थे और जो कुछ उनकी शिक्षा के प्रतिकूल है, वह असत्य है। उनके समूचे कार्य का मुख्य उद्देश्य विभाजन को हटाना था।

बहाउल्ला का विधान कल्याण की वृष्टि है, सत्यता का सूर्य है, जीवन जल (अमृत) है, पावन आत्मा है। अतः उनके सौन्दर्य की पूर्ण शक्ति प्राप्त करने के लिए अपने हृदय द्वार खोल दीजिए। मैं प्रार्थना करूंगा कि आप सब यह आनन्द उठा सकें।

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

अब मैं आपको "अल-विदा" कहता हूँ!

यह मैं केवल आपके ऊपरी रूप से कहता हूँ, आपकी आत्मा से नहीं, क्योंकि हमारी आत्माएँ तो सदा साथ साथ रहेंगी।

निश्चिन्त और आश्वस्त रहें कि रात दिन मैं प्रभु के दरबार में आपके लिये प्रार्थना करूँगा ताकि प्रतिदिन आप अधिक से अधिक विकास करें, पवित्र बनें, ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करें और प्रभु प्रेम की ज्योति द्वारा अधिक से अधिक देदीप्यमान बनें।

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

मित्र सभा भवन, सेन्ट मार्टिन्स लेन, लन्दन, डब्ल्यू सी में

रविवार

जनवरी 12, 1913

लगभग एक हजार वर्ष पूर्व "मित्र सभा" के नाम से ईरान में एक सभा का गठन किया गया जिसके सदस्य सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ मूक सम्पर्क के लिए आपस में एकत्रित होते थे।

दिव्य दर्शन (फिलासफी) को उन्होंने दो भागों में बाँटा: एक वह है जिसका ज्ञान पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों में व्याख्यानों तथा अध्ययन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। दर्शनशास्त्र की दूसरी किस्म प्रबुद्ध व्यक्तियों अथवा आंतरिक प्रकाश के अनुयायियों की थी। इस दर्शनशास्त्र की पाठशालाएँ खामोशी से लगती थी। मनन चिन्तन करते और

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

प्रकाश स्रोत की ओर उन्मुख हो, उस केन्द्रीय प्रकाश से प्रभु राज्य के रहस्य इन लोगों के हृदयों पर प्रतिबिम्बित होते थे। सभी दैवी समस्याएँ ज्योति की इस शक्ति द्वारा सुलझाई जाती थीं।

ईरान में "मित्र सभा" का बहुत अधिक फैलाव हुआ और वर्तमान समय में भी ऐसी सभाएँ मौजूद हैं। उनके नेताओं द्वारा अनन्य पुस्तकों तथा पत्रों का सृजन हुआ। जब वे अपने सभा भवन में एकत्रित होते हैं तो चुपचाप बैठकर मनन चिन्तन करते हैं, उनका नेता किसी विशेष प्रस्ताव से आरम्भ करता है और एकत्रित जनों से कहता है "आप इस समस्या पर चिन्तन करें।" तब अपने मन को अन्य सब बातों से मुक्त कर वे बैठकर विचार करते हैं और शीघ्र ही उसका उत्तर उन पर प्रकट हो जाता है। कई पेचीदा दैवी प्रश्न इस आंतरिक प्रकाश द्वारा सुलझाये जाते हैं।

मानव के मानसपट पर सत्यता के सूर्य की किरणों से प्रकट होने वाले कुछ जटिल प्रश्न इस प्रकार हैं: मानव आत्मा की वास्तविकता की समस्या, आत्मा का जन्म, इहलोक से इसका दिव्य लोक में जन्म, आत्मा का आंतरिक जीवन तथा शरीर छोड़ने के बाद इसकी परिस्थितियों का प्रश्न।

वे समय के वैज्ञानिक प्रश्नों पर भी चिन्तन करते हैं और उन्हें भी इसी प्रकार हल किया जाता है।

ये लोग, जो "आंतरिक प्रकाश के अनुयायी" कहलाते हैं, शक्ति के सर्वोच्च बिन्दु पर पहुँच जाते हैं तथा हठधर्मिता और अनुकरणों से पूर्णतयः मुक्त होते हैं। जनसाधारण ऐसे लोगों द्वारा कही बातों पर विश्वास करते हैं। वे स्वयं, अपने ही बीच, सभी रहस्यों को सुलझाते हैं।

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

आंतरिक प्रकाश की सहायता से यदि वे कोई हल ढूँढ निकालते हैं, तो वे उसे स्वीकार कर लेते हैं और बाद में उसकी घोषणा करते हैं, अथवा वे उसे अन्ध अनुकरण का मामला ही मानते हैं। वे ऐसी बातों तक का भी चिन्तन करते हैं जैसे कि दिव्यता की अनिवार्य प्रकृति, दैवी प्रकाशन, इस संसार में ईश्वर अवतार का प्राकट्य आदि। सभी दिव्य तथा वैज्ञानिक प्रश्नों को वे आत्मा की शक्ति द्वारा ही हल करते हैं।

बहाउल्लाह का कहना है कि प्रत्येक तथ्य में एक (ईश्वरीय) चिन्ह होता है—विवेक का प्रतीक चिन्तन है और चिन्तन का प्रतीक खामोशी है, क्योंकि किसी मनुष्य के लिये एक ही समय दो काम करना असंभव है—वह एक ही समय चिन्तन और बातचीत नहीं कर सकता।

यह एक स्वयंसिद्ध तथ्य है कि जब आप चिन्तन करते हैं तो आप अपनी आत्मा से संबोधित होते हैं। मन की उस परिस्थिति में आप अपनी आत्मा से कुछ प्रश्न पूछते हैं और आत्मा उनका उत्तर देती है: प्रकाश छा जाता है और सच्चाई प्रकट हो जाती है।

आप किसी प्राणी को "मानव" के नाम से नहीं पुकार सकते जो इस चिन्तन शक्ति से वंचित हो, इसके बिना वह केवल पशु होगा, जानवरों से भी निम्न।

चिन्तन शक्ति के द्वारा मनुष्य अनन्त जीवन को प्राप्त होता है, इसके द्वारा वह पवित्र आत्मा का श्वास प्राप्त करता है—दिव्य आत्मा की कृपा चिन्तन और मनन द्वारा प्रदान की जाती है।

चिन्तन के दौरान स्वयं मानव आत्मा को ज्ञान और शक्ति

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

उपलब्ध होते हैं, इसके द्वारा मनुष्य की दृष्टि के सामने वह बातें प्रकट होती हैं जिनके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था। इसके द्वारा उसे दिव्य प्रेरणा मिलती है, इसके द्वारा उसे दैवी आहार (प्रसाद) प्राप्त होता है।

रहस्यों के द्वार खोलने के लिए चिन्तन एक चाबी है। उस परिस्थिति में मानव अपने आप में निराकार बन जाता है, उस परिस्थिति में मानव अपने आप को सभी बाहरी वस्तुओं से परे हटा लेता है, उस आत्मनिष्ठ मनःस्थिति में वह आध्यात्मिक जीवन के सागर में डूबा होता है और रहस्यों का उद्घाटन कर सकता है। उदाहरण के लिये, मानव का विचार कीजिए जो दो प्रकार की दृष्टि से युक्त है, जब अन्तर्दृष्टि की शक्ति का प्रयोग किया जाता है तब बाह्य दृष्टि की शक्ति काम नहीं करती।

चिन्तन शक्ति मनुष्य को पशु प्रवृत्ति से मुक्त करती है, वस्तुओं की वास्तविकता से परिचित कराती है और मनुष्य को ईश्वर के सम्पर्क में लाती है।

यह शक्ति विज्ञान तथा कलाओं को अगोचर जगत से गोचर जगत में लाती है। चिन्तन शक्ति द्वारा आविष्कार संभव हो जाते हैं, बहुत बड़े बड़े कार्यों को सम्पन्न किया जाता है, इसके द्वारा राज्य प्रशासन निर्विघ्न रूप से चल सकते हैं। इस शक्ति द्वारा मानव स्वयं प्रभु राज्य में ही प्रवेश पा जाता है।

फिर भी कुछ विचार मनुष्य के लिए बेकार होते हैं। वे उन लहरों के समान होते हैं जो व्यर्थ ही सागर में उठती रहती हैं। परन्तु यदि चिन्तन शक्ति आंतरिक प्रकाश से आच्छादित हो और दैवी गुणों से चरित्रित हो, तो परिणामों की पुष्टि होगी।

अब्दुल-बहा का वक्तव्य

चिन्तन शक्ति दर्पण के समान होती है। यदि आप इसे सांसारिक वस्तुओं के सामने रखेंगे तो यह उन्हें प्रतिबिम्बित करेगा। अतः यदि मानव आत्मा सांसारिक विषयों पर चिन्तन कर रही हो तो उसे उनका ज्ञान प्राप्त होगा।

परन्तु यदि आप अपनी आत्माओं के दर्पण को स्वर्ग की ओर मोड़ते हैं तो दिव्य नक्षत्र मण्डल और सत्यता के सूर्य की किरणें आपके हृदयों पर प्रतिबिम्बित होंगी और प्रभु राज्य के सद्गुण आपको प्राप्त होंगे।

अतः हमें इस शक्ति को सही राह पर लगाये रखना चाहिए—इसे दिव्य सूर्य की ओर मोड़े रखना चाहिए, सांसारिक वस्तुओं की ओर नहीं—ताकि हम दिव्य राज्य के भेदों को पा सकें तथा बाइबल के दृष्टान्तों को समझ सकें और आत्मा के रहस्यों को जान सकें।

वास्तव में हम ऐसे दर्पण बनें जो स्वर्गिक वास्तविकताओं को प्रतिबिम्बित करते हैं और हम इतने विशुद्ध बन जायें कि स्वर्ग के तारों को प्रतिबिम्बित कर सकें।

प्रार्थना

प्रार्थना

97 कैडोगन गार्डनस, लंदन

दिसम्बर 26, 1912

"क्या प्रार्थना कर्म का रूप धारण कर ले?"

अब्दुल-बहा: "हाँ: बहाई धर्म में कलाओं, विज्ञानों तथा सभी दस्तकारियों को उपासना (के रूप में) माना जाता है। जो व्यक्ति अपने पूरे कौशल के साथ कागज का टुकड़ा बनाता है और इसे परिशुद्ध बनाने के लिए पूर्ण निष्ठा और शक्ति को प्रयोग में लाता है, वह ईश्वर की स्तुति करता है। संक्षेप में, मानवता की सेवा की इच्छा और सर्वोच्च अभिप्राय से प्रेरित मनुष्य द्वारा पूर्ण मन से किये गये सभी प्रयास ही आराधना-उपासना हैं। यही भक्ति है कि मानवता की सेवा की जाय और लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाये। सेवा प्रार्थना है। कोमलतापूर्वक पक्षपात से मुक्त और मानव जाति की एकता में विश्वास रखता हुआ रोगियों की परिचर्या करता हुआ चिकित्सक, ईश्वर की स्तुति करता है।"

"हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?"

अब्दुल-बहा: "सद्गुणों की प्राप्ति। हमारा आगमन पृथ्वी से होता है। खनिज जगत से वनस्पति जगत में और वनस्पति से पशु जगत में हमारा परिवर्तन क्यों किया गया? ताकि इनमें से प्रत्येक जगत में हम सम्पूर्णता प्राप्त कर सकें, ताकि हम खनिज के उत्तम गुणों को प्राप्त कर सकें, ताकि हम वनस्पति

बुराई

सदृश्य विकास करने की शक्ति प्राप्त कर सकें, ताकि हम पशु जैसी सहज बुद्धि से सुसज्जित हों तथा देखने, सुनने, सूँधने, स्पर्श करने और चखने की शक्तियाँ हमें उपलब्ध हों, यहाँ तक कि हम पशु जगत से मानव संसार में पदार्पण करें तथा तर्क, आविष्कार शक्ति तथा आत्मा की शक्तियों के उपहार हमें प्राप्त हों।”

बुराई

“बुराई क्या है?”

अब्दुल-बहा: “बुराई अपूर्णता है। पाप मनुष्य की वह स्थिति है जो निम्न प्रकृति के जगत में पाई जाती है, क्योंकि प्रकृति में कुछ दोष पाये जाते हैं जैसे कि अन्याय, अत्याचार, घृणा, शत्रुता, संघर्ष। ये प्रकृति के निम्न स्तर के लक्षण हैं। यह संसार की बुराइयाँ (पाप) हैं, उस पेड़ के फल हैं जिस से आदि पुरुष ने चखा था। शिक्षा द्वारा हम अवश्य ही अपने-आप को इन अपूर्णताओं से विशुद्ध करें। ईश्वर के अवतार भेजे गये हैं, और पवित्र ग्रंथों की रचना की गई है ताकि मानव मुक्त हो सके। जैसे कि वह अपनी सांसारिक माता के गर्भ से इस अपूर्णतापूर्ण संसार में उत्पन्न होता है, वैसे ही दिव्य शिक्षा के माध्यम से वह आत्मा के जगत में उत्पन्न होता है। जब मनुष्य दृश्य जगत में उत्पन्न होता है तो संसार की प्राप्ति होती है; जब वह यह संसार छोड़ कर आत्मा जगत में उत्पन्न होता है तो उसे दिव्य जगत की प्राप्ति होती है।”

आत्मा की प्रगति

"आत्मा इस संसार में दुःखों के कारण अधिक उन्नति करती है या आनन्द के कारण?"

अब्दुल-बहा: "जब दुखों और कष्टों के द्वारा मनुष्य का परीक्षण होता है तो उसके मन और आत्मा का विकास होता है। धरती पर जितना ज्यादा हल चलाया जाये, उतना ही अच्छा बीज फलता-फूलता है, उतनी ही उत्तम फसल होती है। जैसे हल धरती पर गहरे खांचे बनाकर इस पर उगे झाड़-झंकार साफ करता है, उसी प्रकार कष्ट और दुख मनुष्य को इस सांसारिक जीवन के छोटे-मोटे मामलों से मुक्त कर देते हैं, यहाँ तक कि वह पूर्ण अलगाव की अवस्था को प्राप्त हो जाता है। इस संसार में उसका व्यवहार दैवी आनन्द जैसा हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव अधकच्चा है। दुखों की अग्नि की गरमी उसे परिपक्व बना देगी। पिछले जमाने पर दृष्टि डालिए तो आपको पता चलेगा कि महान व्यक्तियों को ही सब से अधिक दुख उठाने पड़े हैं।"

वह जिसने दुखों के माध्यम से विकास कर लिया हो, क्या उसे आनन्द से भयभीत होना चाहिये?"

अब्दुल-बहा: "दुखों के माध्यम से उसे अनन्त आनन्द की प्राप्ति होगी जो उससे कोई नहीं छीन सकता। ईसा मसीह के पट्टशिष्यों ने कष्ट झेले और उन्हें अमर आनन्द की प्राप्ति हुई।"

"तो क्या कष्ट झेले बिना आनन्द की प्राप्ति असंभव है।"

चार प्रकार का प्रेम

अब्दुल-बहा: "अमर आनन्द की प्राप्ति हेतु निश्चय ही कष्ट उठाना पड़ता है। वह जो आत्मोत्सर्ग की अवस्था में पहुँच जाता है, उसे सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है। सांसारिक आनन्द लुप्त हो जाता है।"

"क्या कोई मृत आत्मा किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत कर सकती है जो अभी संसार में मौजूद हो?"

अब्दुल-बहा: "वार्तालाप हो सकता है, परन्तु हमारे जैसा वार्तालाप नहीं। निस्सन्देह उच्च लोकों की शक्तियाँ इस लोक की शक्तियों के साथ अन्योन्य क्रिया करती हैं। मानव हृदय प्रेरणा के लिये तैयार है, यह आध्यात्मिक सम्पर्क है। जैसे कि स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने मित्र से बातचीत करता है जबकि मुख खामोश होता है, वैसे ही आत्मा के साथ वार्तालाप में होता है। कोई मनुष्य स्वयं अपने अहम के साथ यह कहता हुआ बात चीत कर सकता है: "क्या मैं यह काम करूँ? क्या यह काम करना मेरे लिए उचित होगा?" इसी प्रकार का वार्तालाप हमारे उच्च अहम के साथ होता है।"

चार प्रकार का प्रेम

97, कैडोगन गार्डनस्, लन्दन,

शनिवार, 4 जनवरी 1913

प्रेम भी क्या शक्ति है! यह बड़ी अद्भूत तथा जीवित शक्तियों में सर्वमहान शक्ति है।

प्रेम निष्प्राणियों को जीवन प्रदान करता है। प्रेम उदासीन हृदय में प्रकाश की ज्योति प्रचण्ड करता है। प्रेम निराशों के

चार प्रकार का प्रेम

लिए आशा का सन्देश लाता है और संतप्त हृदयों को आनन्द विभोर करता है।

अस्तित्व के संसार में वस्तुतः प्रेम की शक्ति से बढ़ कर और कोई शक्ति नहीं। जब मनुष्य का हृदय प्रेम की ज्योति से जगमगा रहा होता है तो वह अपना सब कुछ, यहाँ तक कि अपना जीवन भी, न्योछावर करने देने के लिए तत्पर होता है। गॉस्पल में कहा गया है कि प्रेम ही ईश्वर है।

प्रेम चार प्रकार का होता है। पहला वह प्रेम जो ईश्वर की ओर से मानव के प्रति प्रवाहित होता है। यह अपार कृपा, दिव्य दीप्ति और स्वर्गिक प्रकाश का धारक होता है। इस प्रेम के द्वारा अस्तित्व का संसार जीवन पाता है। इसी प्रेम के द्वारा मनुष्य को उस समय तक शारीरिक अस्तित्व प्राप्त होता है जब तक कि वह पावन आत्मा के श्वास—इसी प्रेम द्वारा अनन्त जीवन को प्राप्त नहीं कर लेता और जीवित परमात्मा की भाँति मूर्तिमान हो जाता है। सृष्टि के संसार में यह प्रेम सारे प्रेम का स्रोत है।

दूसरी प्रकार का प्रेम वह है जो मानव की ओर से ईश्वर के प्रति प्रवाहित होता है। यह है विश्वास, दिव्यता के प्रति आकर्षण, उत्साह, उन्नति, प्रगति, प्रभु राज्य में प्रवेश ईश्वरीय कृपाओं की प्राप्ति, दिव्य राज्य की ज्योति से प्रकाशमान होना। यह प्रेम सारे परोपकार का स्रोत है। यह प्रेम लोगों के हृदयों से सत्यता के सूर्य की किरणों के प्रतिबिम्बित होने का कारण होता है।

तीसरा है स्वयं के प्रति ईश्वर का प्रेम अथवा ईश्वर की एकात्मकता। यह है उसके सौन्दर्य का रूपान्तरण, उसकी सृष्टि के दर्पण में स्वयं उसका प्रतिबिम्ब। यह प्रेम की

चार प्रकार का प्रेम

वास्तविकता है, सनातन प्रेम, अनन्त प्रेम। इस प्रेम की एक किरण के द्वारा शेष सारे प्रेम का अस्तित्व है।

चौथा है मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम। अनुयायियों के हृदयों में जो प्रेम है वह आत्माओं की एकता के आदर्श से उत्प्रेरित होता है। यह प्रेम ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है जिससे लोग दिव्य प्रेम हृदयों में प्रतिबिम्बित होता देख सकते हैं। प्रत्येक दूसरे की आत्मा में ईश्वर के सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित होते देखता है और समरूपता का यह बिन्दु पा वे प्रेम में एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। यह प्रेम सभी लोगों को एक सागर की लहरों के समान बना देगा, यह प्रेम सबको एक ही आकाश के तारे और एक ही वृक्ष के फल बना देगा। इस प्रेम द्वारा सच्ची सहमति की प्राप्ति होगी जो वास्तविक एकता की नींव है।

परन्तु प्रेम जो कभी-कभी मित्रों के बीच पाया जाता है वह (सच्चा) प्रेम नहीं होता क्योंकि उसका रूप बदल सकता है, यह केवल मोह या आकर्षण मात्र है। जैसे पवन बहती है तो पतले-पतले पेड़ पौधे झुक जाते हैं। यदि पवन पूर्व से बह रही हो तो पेड़ पश्चिम दिशा की ओर झुकेगा और यदि वायु पश्चिम की ओर से बहने लगे तो पेड़ पूर्व दिशा की ओर झुकता है। इस प्रकार का प्रेम जीवन की आकस्मिक परिस्थितियों से उत्पन्न होता है। यह प्रेम नहीं वरन् परिचय मात्र है। इसमें परिवर्तन आ सकता है।

आज आप दो व्यक्तियों को देखेंगे जो देखने में गहरे मित्र लगते हैं। कल यह सब कुछ बदल सकता है। बीते कल तक वे एक दूसरे के लिए जान देने को तैयार थे, आज वे एक दूसरे की संगत से भी बचते हैं। यह प्रेम नहीं, यह जीवन की

अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई पाटी

घटनाओं के प्रति हृदयों का झुकाव है। जब ऐसे "प्रेम" का कारण शेष नहीं रहता, तो प्रेम भी समाप्त हो जाता है। वास्तव में यह प्रेम नहीं होता।

प्रेम केवल चार प्रकार का होता है जिनकी मैंने व्याख्या की है। (क) ईश्वर की एकात्मता के प्रति ईश्वर का प्रेम। ईसा मसीह ने कहा है कि प्रेम ही ईश्वर है। (ख) अपने बच्चों—अपने सेवकों—के प्रति ईश्वर का प्रेम (ग) ईश्वर के प्रति मानव का प्रेम तथा (घ) मानव के प्रति मानव का प्रेम। ये चारों प्रकार के प्रेम ईश्वर से आरंभ होते हैं। ये सत्यता के सूर्य की किरणें हैं, ये पावन आत्मा के श्वास हैं, ये यथार्थता के प्रतीक हैं।

अब्दुलबहा द्वारा प्रकट की गई पाटी

28 अगस्त 1913

मेरी प्रिय पुत्री,

तुम्हारे भावपूर्ण और प्रभावपूर्ण पत्र को मैंने वाटिका में पेड़ की ठंडी छाँव में पढ़ा जबकि मन्द-मन्द पवन हिलोरे ले रही थी। शारीरिक आनन्द के साधन दृष्टि के सामने फैले हुए थे और तुम्हारा पत्र आत्मिक आनन्द का कारण बना। वस्तुतः मेरा कहना है कि यह पत्र नहीं बल्कि फूलों तथा रत्नों से सुशोभित एक गुलाब का गुलदस्ता था।

इसमें स्वर्ग की मधुर सुगन्ध थी और इसके उज्ज्वल शब्दों से दिव्य प्रेम की समीर बह रही थी।

चूँकि मेरे पास पर्याप्त समय नहीं, अतः मैं यहाँ पर संक्षिप्त

अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई पाटी

निर्णयात्मक और व्यापक उत्तर दूंगा जो निम्न प्रकार है:

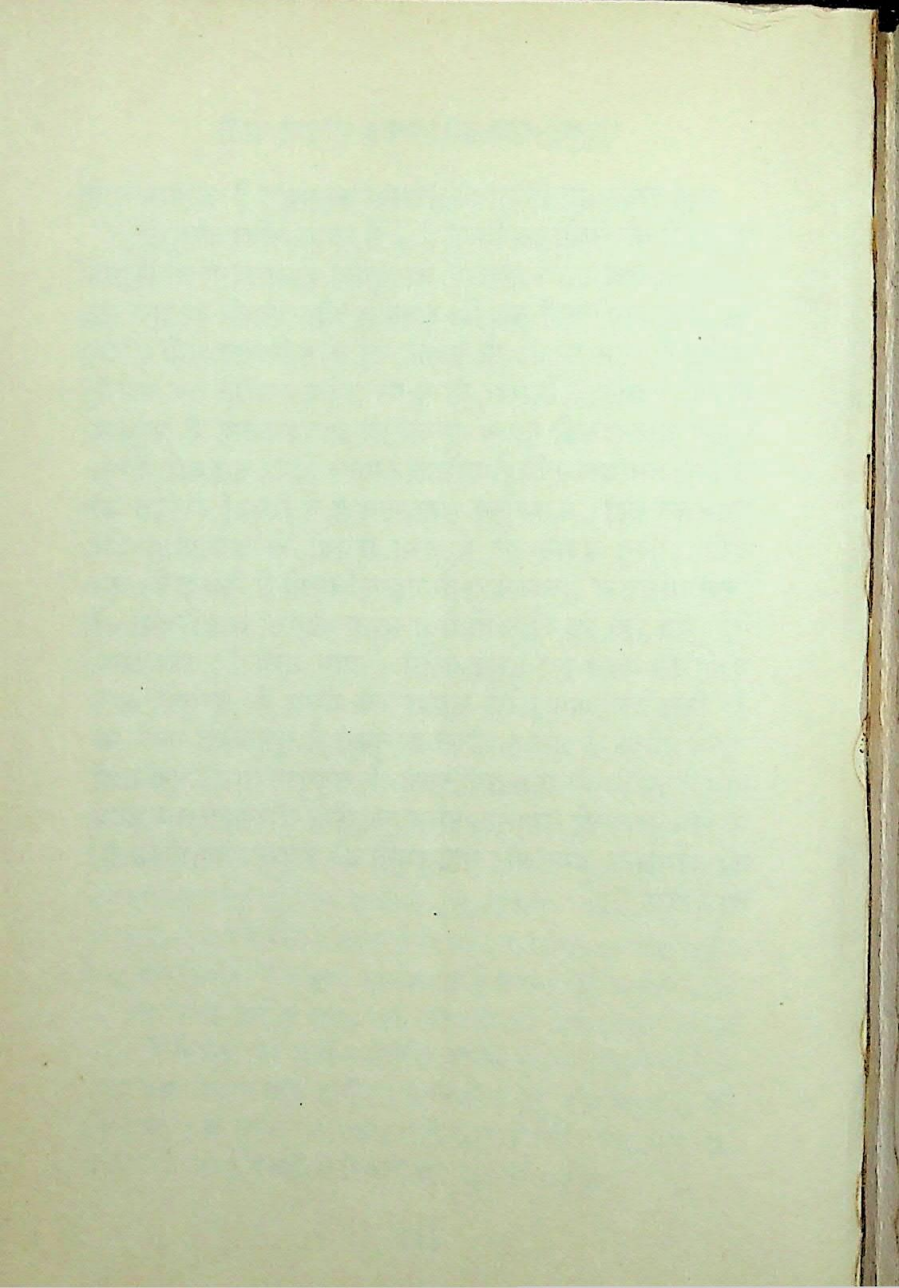
बहाउल्लाह के इस प्रकाशन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलती हैं। किसी भी क्षेत्र में वे पीछे नहीं रहेंगी। उनके तथा पुरुषों के अधिकार सर्वांग एक समान हैं। वे राजनीति की सभी प्रशासनिक शाखाओं में प्रवेश करेंगी। वे सभी बातों में ऐसी सफलता प्राप्त करेंगी जो मानवता के संसार में सर्वोच्च स्थान माना जाता है और सभी मामलों में भाग लेंगी। तुम आश्वस्त रहो। वर्तमान स्थिति से तुम घबरा मत जाना, निकट भविष्य में स्त्री जगत सर्वगौरवमय तथा सर्वदीप्तिमान बन जायेगा, क्योंकि परमपूज्य बहाउल्लाह की यही इच्छा है! चुनाव के समय मत देने का अधिकार स्त्रियों का अहरणीय अधिकार है और सभी मानव विभागों में स्त्रियों का प्रवेश एक काट्य और अखण्डनीय तथ्य है। कोई भी व्यक्ति इसमें बाधा या विघ्न उत्पन्न नहीं कर सकता।

परन्तु कुछ मामले ऐसे हैं जिनमें भाग लेना स्त्रियों के लिए उचित नहीं। उदाहरण स्वरूप, जब समाज शत्रु के आक्रमण के विरुद्ध बचाव के जोरदार उपाय कर रहा हो तो स्त्रियों को सैनिक सेवा से छूट प्राप्त है। यह संभव है कि किसी समय युद्धसंपंसद और खूंखार कबीले इस अभिप्राय से किसी नगर पर हमला कर दें कि वे अधिक से अधिक लोगों का वध करें। ऐसी परिस्थिति में बचाव आवश्यक है परन्तु ऐसे बचाव कार्य की व्यवस्था करना तथा उसे कार्यान्वित करना पुरुषों का काम है स्त्रियों का नहीं—क्योंकि उनके हृदय कोमल होते हैं और चाहे वह बचाव के लिए ही क्यों न हो, वे हत्याकांड की वीभत्सता के दृश्य को सहन नहीं कर सकतीं। ऐसे और इस प्रकार के अन्य कार्यों से स्त्रियों को छूट दी गई है।

अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई पाटी

जहाँ तक न्याय मंदिर की संरचना का संबंध है, बहाउल्लाह ने पुरुषों को संबोधित किया है: "हे न्याय मंदिर के पुरुषों!"

परन्तु जब इसके सदस्यों का चुनाव होना होगा तो स्त्रियों का अधिकार, जहाँ तक कि मतदान और उनकी आवाज का संबंध है, उस पर किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं। जब स्त्रियाँ उन्नति के शिखर बिन्दु पर पहुँच जायेंगी तब समय, स्थान और उनकी महान क्षमता की आवश्यकता के अनुसार उनको असाधारण विशेषाधिकार प्राप्त होंगे। इस बारे में तुम निश्चित रहो। परमपूज्य बहाउल्लाह ने स्त्रियों के हित को बड़ी शक्ति प्रदान की है तथा स्त्रियों के अधिकार और विशेषाधिकार अब्दुलबहा के महान नियमों में से एक हैं। तुम निश्चित रहो कि शीघ्र ही ऐसा समय आयेगा जब स्त्रियों को संबोधित करते हुए पुरुष कहेंगे: "आप धन्य हैं! आप धन्य हैं! निसन्देह आप हर एक उपहार के योग्य हैं! वस्तुतः आप अपने शीषों के अनन्त गौरव के मुकुट से सुसज्जित करने की पात्र हैं क्योंकि विज्ञानों तथा कलाओं, सद्गुणों तथा संपूर्णताओं में आप पुरुष की समानता प्राप्त कर लेंगी और जहाँ तक हृदय की कोमलता, दया और सहानुभूति की प्रचुरता का संबंध है, आप श्रेष्ठ हैं।"



ISBN 81-85091-42-0



बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट

बहाई हाउस

६ कैनिंग रोड

नई दिल्ली-११०००९